आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2014 ★ आषाढ़, 2071

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

कोबा (गांधीनगर) पि. ३८२ ००९

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराय नमः ।।

जय गुरु हीरा | जय गुरु हस्ती | जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera | Jai Guru Hasti | Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
Website: www.jinvani.net

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

बालस्स पस्स बालत्तं,
अहम्मं पडिवज्जिया।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे,
नरए उववज्जई।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 7.28

बालत्व देख अज्ञानी का,
जो पापकर्म स्वीकार करे।
तज धर्म अधर्मी रुचि वाला,
नरकों में जा दुःख सहन करे।।

जुलाई, 2014
वीर निर्वाण संवत्, 2540
आषाढ़, 2071

वर्ष 72 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	संवेग और निर्वेद भाव	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(27)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी	14
विचार-वारिधि-	ब्रह्मचर्य (3)	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी	13
प्रवचन-	भक्ष्याभक्ष्य विवेक एवं रात्रि-भोजन-त्याग	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी	15
जीवन-व्यवहार-	बोलें प्रिय-हित-मित वचन	-मुनि श्री मनीष सागरजी	23
अध्यात्म-व्यवहार-	जैन आचार से स्वस्थ जीवन की प्राप्ति	-श्री रणजीत सिंह कूमट	32
	सापेक्ष सुख एवं वास्तविक सुख	-साध्वी युगल नीधि-कृपा	43
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Advocacy of Intercultural Faith in Jain's Prism(2)**	*-Dr Samani Shashi Prajñā*	37
धारावाहिक-	लग्न की वेला (5)	-आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'	51
युवा-स्तम्भ -	व्यवसाय और शाकाहार	-डॉ. दिलीप धींग	58
नारी-स्तम्भ -	सशक्त नारी	-श्रीमती कमला सुराणा	61
स्वास्थ्य-विज्ञान -	बीमारी को अब विदा कर दीजिए	-श्री नेमीचन्द जैन	64
बाल-स्तम्भ -	फास्ट फूड से होते हैं बीमार	-श्री सुभाषचन्द्र लखेडा	69
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी	31
	ओ! हीरा गुरु! शत-शत प्रणाम	-श्रीमती तृप्ति गुन्देचा	49
	जैनागम-अष्टक	-श्री मनोजकुमार जैन 'निर्लिप्त'	50
	आत्मा है ये हमारा	-श्री दिलरूपचन्द भण्डारी	63
विचार-	**Nice Lines**	*-Mrs. Meenu Dinesh Jain*	61
चिन्तन-	हम बर्बादी की डगर पर तो नहीं	-सुश्री विधि कोठारी	73
प्रेरक-प्रसंग-	जिन्दगी को शिकायत की किताब मत बनाओ	-श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया	74
पाठक प्रतिक्रिया-	बेटी को दें संस्कार	-श्रीमती लीला सुरेश पीपाड़ा	62
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	75
शिविर रिपोर्ट-	ग्रीष्मकालीन शिविर बने नवपीढ़ी के लिए वरदान	-श्री जितेन्द्र कुमार डागा	77
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	92
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

सम्पादकीय

संवेग और निर्वेद भाव

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

किसी भी कार्य को ठीक ढंग से सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए उत्साह का होना आवश्यक है। व्यापार का क्षेत्र हो या विद्या का, आविष्कार का क्षेत्र हो या निर्माण का, सर्वत्र उत्साह कार्यकारी होता है। जिस प्रकार जिज्ञासा के होने पर ज्ञान की प्राप्ति संभव है, उसी प्रकार मुमुक्षा के होने पर बन्धनों से मुक्ति संभव है। मुमुक्षा का अर्थ है मोक्ष की इच्छा, बंधनों से छुटकारे की अभिलाषा। मुमुक्षा के दो अंग हैं- संवेग और निर्वेद। शाश्वत एवं अव्याबाध सुख प्राप्ति की उत्कट लालसा संवेग है तो संसार के वैषयिक सुखों से विरक्त होना निर्वेद है। संवेग एवं निर्वेद ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संवेग विधि रूप है तो निर्वेद निषेधरूप- **संवेगो विधिरूपः स्यान्निर्वेदश्च निषेधनात्।** बंधनों से अथवा पराधीनता से छुटकारा पाने की तीव्र अभिलाषा रूप संवेग होने पर सांसारिक विषयों से विरक्ति रूप निर्वेद स्वतः घटित होता है। इसी प्रकार सांसारिक विषयों में दोष देखकर उनसे विरक्त होने पर शाश्वत सुख की अभिलाषा रूप संवेग स्वतः जाग्रत होता है।

उत्तराध्ययन सूत्र में संवेग एवं निर्वेद की चर्चा आती है। वहाँ प्रश्न किया गया कि संवेग से जीव को क्या फल प्राप्त होता है। उत्तर में प्रभु महावीर के द्वारा कहा गया-**संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ। अणंताणुबंधी-कोह-माण-माया-लोभे खवेइ। णवं च कम्मं ण बंधइ। तप्पच्चइयं च मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ। दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए जीवे तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ, विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं णाइक्कमइ।** अर्थात् संवेग से उत्कृष्ट धर्म श्रद्धा उत्पन्न होती है। उत्कृष्ट धर्म श्रद्धा से पुनः संवेग की अभिवृद्धि होती है। इस प्रकार संवेग धर्म श्रद्धा को अभिवर्धित करता है तथा धर्म श्रद्धा संवेग को अभिवर्धित करती है। संवेग एक प्रकार से साधना का प्रारम्भिक बिन्दु है। जीवन में सबसे उत्तम वस्तु की प्राप्ति, जिसका ध्येय बन जाता है वह उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। जो संसार की पराधीनता से छुटकारा पाना चाहता है तथा परम तत्व को जानने, परम सुख को प्राप्त करने की अभिलाषा से सम्पृक्त होता है वह उसके उपाय रूप सच्चे धर्म पर श्रद्धा करता है। वह धर्म के सही स्वरूप को समझ कर उस पर श्रद्धा करता है। यह धर्मश्रद्धा उसे सांसारिक सुखों से विरक्त बनाती है (**धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ।**) तथा संवेग को तीव्र करती है (**अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ।**) यह संवेग न केवल

अनुत्तर धर्म श्रद्धा को उत्पन्न करता है, अपितु यह अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया एवं लोभ का क्षय करता है, जिससे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव होती है। इस प्रकार यह संवेग सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में भी हेतु बनता है तथा सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाने पर उसके व्यवहार-लक्षण के रूप में भी विद्यमान रहता है। एक सम्यग्दर्शनी व्यक्ति संवेग के भावों से सम्पन्न होता है। उसे सांसारिक विषयों की नहीं, शाश्वत सुखों की अभिलाषा होती है। संवेग एक प्रकार का सम्यक् वेग है। यह उद्वेग का विरोधी है। उद्वेग में जहाँ खिन्नता, निराशा एवं दुःख का अनुभव होता है वहाँ संवेग में उत्साह, उमंग एवं प्रसन्नता का भाव रहता है। संवेगी के समक्ष अपना लक्ष्य स्पष्ट होता है। संवेग भाव में जीने वाला व्यक्ति संवर की साधना करता है, इसलिए उसके नए कर्मों का बन्धन नहीं होता (**णवं च कम्मं ण बंधइ**।) वह अपनी मिथ्याधारणाओं को तोड़ता है तथा उनमें संशोधन कर सम्यक् धारणाओं को अपनाता है। उसे इतना निर्मल सम्यग्दर्शन हो सकता है कि वह उसी भव में अपने लक्ष्य को साध सकता है। कदाचित् उस भव में सिद्धि न मिले तो तीन भवों का अतिक्रमण नहीं करता। अर्थात् तीसरे भव में तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो ही जाती है।

अन्तगडदसासूत्र में अतिमुक्तकुमार को संवेग होता है और वह गौतम गणधर के साथ प्रभु महावीर के सान्निध्य में पहुँचकर दीक्षा का मन बना लेता है। कई मुमुक्षु आत्माओं ने एक प्रवचन सुनकर अथवा कोई एक घटना देखकर संसार से विरक्ति प्राप्त की तथा संवेग-पूर्वक श्रमण धर्म को अंगीकार किया है। संवेग जगाने के लिए आचार्य हस्ती कहते हैं-

समझो चेतन जी अपना रूप यो अवसर मत हारो।
ज्ञानदरस मय रूप तिहारो, अस्थि मांसमय देह न थारो।
दूर करो अज्ञान होवे घट उजियारो।।

कवि भूधरदासजी संवेग के अनुभव में कहते हैं-

अब हम अमर भये न मरेंगे।
तन कारन मिथ्यात दियो तज क्यों करि देह धरैंगे,
उपजै मरे कालतैं प्रानी, तातै काल हरैंगे।

मीरा के पद हों या सूरदास के, रायचन्द भाई के पद हों या दौलतराम के, कवि भूधरदास के पद हों या कवि द्यानतराय के, आचार्य हस्ती के पद हों या कवि विनयचन्द जी के, इनमें संवेग और निर्वेद के भाव भरे पड़े हैं।

उत्तराध्ययनसूत्र में निर्वेद के सम्बन्ध में कहा गया है- **णिव्वेएणं दिव्वमाणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु णिव्वेयं हव्वमागच्छइ। सव्वविसएसु विरज्जइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिग्गहपरिच्चायं करेइ। आरम्भपरिग्गह-**

परिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ सिद्धिमग्गं पडिवण्णे य हवइ। अर्थात् निर्वेद से देव, मनुष्य और तिर्यंच से सम्बन्धित कामभोगों से विरक्ति होती है। तात्पर्य यह है कि मनुष्यभव में विरक्त होकर कोई व्यक्ति स्वर्ग के सुखों की वांछा करे तो यह उचित नहीं है। निर्वेद भाव को प्राप्त व्यक्ति निर्वाण को लक्ष्य बनाता है, स्वर्गादि सुखों को नहीं। उसकी धीरे-धीरे विरक्ति बढ़ती रहती है तथा फिर सभी विषयों से विरक्ति हो जाती है। सब विषयों से विरक्त होता हुआ साधक आरम्भ का त्याग करता है। आरम्भ का त्याग करता हुआ साधक संसार के मार्ग से हटकर सिद्धि के मार्ग को प्राप्त कर लेता है। यहाँ ज्ञातव्य है कि निर्वेद का भाव भी धर्म श्रद्धा को दृढ़ करता है तथा धर्म श्रद्धा से निर्वेद अभिवर्धित होता रहता है।

आगमों में भूरिशः निर्वेद के प्रेरक वचन मिलते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के मृगापुत्रीय अध्ययन में कहा गया है-

जहा किंपाग फलाणं, परिणामो ण सुंदरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो ण सुंदरो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 19.18

जिस प्रकार सही नहीं पके हुए अथवा सड़े हुए फलों का परिणाम सुंदर नहीं होता है, उसी प्रकार भोगे गये भोगों का परिणाम अच्छा नहीं होता है।

आगम का यह वचन मनुष्य को भोगों से विरक्त होने की प्रेरणा करता है। इसी अध्ययन में अन्यत्र कहा गया है-

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 19.16

यह संसार दुःखमय है। यहाँ जन्म, जरा, रोग, मृत्यु आदि सभी दुःखकारी है, किन्तु प्राणी फिर भी अज्ञान के कारण इसमें संसरण करते रहते हैं।

उत्तराध्ययनसूत्र के 32 वें अध्ययन में कहा गया है-

तणहाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा ण विमुच्चइ से।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 32.56

तृष्णा से अभिभूत व्यक्ति चोरी करके भी धन जुटाता है। विषयों का सेवन करके भी तृप्त नहीं होता है, उनका परिग्रह करके भी संतुष्ट नहीं होता है। वह माया-मृषावाद करता है तथापि लोभ के दोष के कारण दुःखों से मुक्त नहीं हो पाता है।

वस्तुतः संसार में ऐसा कुछ है नहीं जिसके लिए व्याकुल हुआ जाए। यहाँ सब कुछ अनित्य एवं अशाश्वत है। मनुष्य को उससे स्थायी शांति एवं आनन्द का अनुभव नहीं होता। जब तक विषयों की लालसा बनी रहती है तब तक पराधीनता एवं दुःख बने रहते हैं। विषयों में जब तक आसक्ति बनी रहती है तब तक संतुष्टि प्राप्त नहीं होती। (**सत्तोवसत्तो ण उवेइ तुट्ठिं** -उत्तरा.32.55)। कवि भागचन्द विषयों से विरक्ति की प्रेरणा करते हुए कहते हैं-***विषय विष सम जान भौंदू वृथा क्यों लुभाया***।-**अध्यात्मपद पारिजात, पृ. 96** कवि जिनेश्वरदास ने कहा है-***जगउ की झूठी सब माया, अरे नर चेत वक्त पाया***।-**अध्यात्मपद पारिजात, पृ. 110**

कोई साधक यह कहे कि उसकी कोई भूमिका नहीं है, वह किस प्रकार साधना करे तो उसके लिए भी संवेग का भाव एवं साथ ही निर्वेद का भाव उपयोगी उपाय हैं। इन उपायों की वृद्धि संतों के सत्संग और सत्साहित्य के स्वाध्याय से हो सकती है।

संवेग और निर्वेद के भावों की प्राप्ति एवं अभिवृद्धि क्यों आवश्यक है, उसके लिए आगमों में जो विचार हुआ है उसके आधार पर कुछ तर्क प्रस्तुत हैं- 1. शरीर, परिजन, धन-धान्य आदि सभी के साथ हमारा सम्बन्ध नश्वर है। 2. अरिहन्त, सिद्ध, साधु एवं धर्म की शरण के अतिरिक्त कोई वस्तु शरणभूत नहीं है। 3. धन आदि वस्तुएँ भी स्थायी रूप से मनुष्य की रक्षा नहीं करतीं। 4. इन्द्रियों के विषयों का सेवन करने से स्थायी सुख प्राप्त नहीं होता। कामनाओं की निरन्तरता बनी रहती है। एक कामना पूर्ण होने पर दूसरी उत्पन्न हो जाती है। कामना पूर्ण न होने पर हताशा एवं नीरसता का भाव आता है। 5. विषयों के सेवन में व्यक्ति पराधीन होता है, उसकी स्वाधीनता लुट जाती है। 6. यह जीवन एक सीमित अवधि के लिए मिला है। जीवन कब समाप्त हो जायेगा इसका कोई पता नहीं है। 7. यहाँ किसी वस्तु या शरीर आदि पर मद करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि किसी से भी चेतना का नित्य सम्बन्ध नहीं है। 8. आत्मा की शुद्ध दशा को प्राप्त करना है तो संवेग और निर्वेद का आलम्बन आवश्यक है। 9. आत्मगुणों के विकास हेतु संवेग और निर्वेद भाव उपयोगी हैं। 10. परम सत्य की प्राप्ति का लक्ष्य हो तो भी संवेग का भाव आवश्यक है।

संवेग और निर्वेद निरन्तर पुष्ट होते रहें तो साधक अपनी साधना से कभी विचलित नहीं हो सकता तथा वह पापकर्म के बंधन से भी बचा रह सकता है। शम, अनुकम्पा और आस्तिक्य के साथ संवेग और निर्वेद भी सम्यग्दर्शन के लक्षण हैं। अतः इनके रहते साधक का भटकाव संभव नहीं है। जो इन दोनों आलम्बनों को अपनाकर चलता है, वह पराधीनता के बंधन को छोड़कर स्वाधीन हो जाता है। विषयों का सेवन जहाँ पराधीनता का कारण है, वहाँ समभावपूर्वक उनसे विरक्ति का भाव स्वाधीनता का आधार है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा।
ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे।।

-सूत्रकृतांगसूत्र, 1.3.4.14

अर्थ- भविष्य (में होने वाले परिणाम) को नहीं देखते हुए जो लोग वर्तमान (सुख-भोगों) के अन्वेषण में लगे रहते हैं वे बाद में आयु एवं युवावस्था के क्षीण होने पर परिताप को प्राप्त होते हैं।

विवेचन- सूत्रकृतांगसूत्र में साधक को सावधान किया गया है कि वह सुखभोग की मनोवृत्ति का त्याग करे। किसी अन्य के कष्ट को दूर करने के लिए भी स्वयं भोग की वृत्ति को न अपनाये। क्योंकि सुखभोग की वृत्ति का परिणाम दुःखदायक ही होता है। जो मनुष्य वर्तमान काल में सावधान न रहकर इन्द्रियजन्य सुखों में लीन रहते हैं वे उनका दुष्परिणाम भोगते समय परिताप को प्राप्त होते हैं। उन्हें दुःख रूप परिणाम प्राप्त होने पर पश्चात्ताप एवं खेद होता है। इसीलिए सूत्रकृतांग में कहा गया है कि जो भविष्य में प्राप्त होने वाले परिणाम को नहीं देखते तथा वर्तमान में सुखभोगों के पीछे लालायित रहते हैं, उनके साधनों का संग्रह करने में लगे रहते हैं, वे आयु बीतने पर अथवा यौवन समाप्त होने पर अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप करते हैं।

प्रस्तुत गाथा में यह संकेत किया गया है कि वर्तमान में प्रवृत्ति करते समय उसके भावी परिणाम पर भी दृष्टि रहनी चाहिए। प्रत्येक प्रवृत्ति का कोई न कोई फल अवश्य होता है। शुभ भावना से की गई शुभ प्रवृत्ति का फल शुभ तथा अशुभ भावना से की गई अशुभ प्रवृत्ति का फल अशुभ होता है। कर्म सिद्धान्त का यह नियम है कि हमें अपने सुकृत एवं दुष्कृत के अनुसार फल की प्राप्ति अवश्य होती है।

सूत्रकृतांग में यह भी कहा गया है कि इस क्षण को जानो- **इणमेव खणं वियाणिया।'**(सूत्रकृतांग, 1.2.3.19) अर्थात् "वर्तमान पर दृष्टि रखो।" जो वर्तमान को सुधारता है उसका भविष्य अपने आप सुधर जाता है। आचारांगसूत्र में भी यही बात कही गई है- **'खणं जाणाहि पंडिए।'** अर्थात् "हे पण्डित! तुम प्राप्त क्षण को जानो।" आचारांग में यह भी कहा गया है कि वय बीती जा रही है, यौवन बीत रहा है- **'वओ अच्चेति जोव्वणं च।'** इसलिए प्राप्त समय की महत्ता समझने की आवश्यकता है। उत्तराध्ययनसूत्र भी साधक को सावधान करता है- **'समयं गोयम! मा पमायए।'** हे गौतम! समयमात्र का भी प्रमाद मत करो। साधक को प्रत्येक क्षण सजगतापूर्वक जीने का अभ्यास करने की आवश्यकता है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है-

अच्चेइ कालो तूरंति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा।
उविच्च भोगा पुरिसं चयंति, दुमं जहा खीणफलं व पक्खी।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 13.31

समय बीता जा रहा है, रात्रियाँ बीत रही हैं। मनुष्य के साथ भोग सदा रहने वाले नहीं हैं। जिस प्रकार फलों से रहित वृक्ष को पक्षी छोड़ देते हैं, उसी प्रकार अवस्था बीतने पर सामर्थ्य रहित व्यक्ति को कामभोग छोड़ देते हैं। अर्थात् वह व्यक्ति मन में भले ही कामभोगों की इच्छा रखता हो, किन्तु शरीर में सामर्थ्य नहीं होता कि वह कामभोग कर सके।

चाणक्य नीति में उल्लेख आता है-

गते शोको न कर्तव्यो, भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन, वर्तयन्ति विचक्षणाः।।

जो बीत गया उसका शोक करने की आवश्यकता नहीं है तथा भविष्य में क्या होगा इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। विचक्षण पुरुष वर्तमानकाल के अनुसार व्यवहार करते हैं।

यहाँ पर विचारणीय है कि सूत्रकृतांग में भविष्य में प्राप्त होने वाले परिणामों पर दृष्टि रखने की बात कही गई है, जबकि चाणक्य नीति के श्लोक में भविष्य की चिन्ता नहीं करने की बात कही गई है। क्या इन दोनों में परस्पर विरोध है? तो कहना होगा कि इन दोनों कथनों में मात्र दृष्टि का भेद है, तात्पर्य का नहीं। वर्तमानकाल की प्रवृत्ति सजगतापूर्वक हो, यह संकेत दोनों स्थानों पर समान है। जो वर्तमान की प्रवृत्ति पर दृष्टि न रखकर भविष्य की उधेड़बुन में लगा रहता है वह अपना वर्तमान भी विकृत करता है एवं भविष्य को भी बिगाड़ लेता है। हाँ वर्तमान में प्रवृत्ति करते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि मैं ऐसी प्रवृत्ति न करूँ जिसका मुझे दुष्परिणाम भोगना पड़े। भविष्य को सुधारने के लिए इतनी जागरूकता आवश्यक है कि जो भी प्रवृत्ति की जाय वह सोच समझकर, विवेकपूर्वक की जाय ताकि जीवन का भविष्य दुःखदायी एवं परितप्त करने वाला न बने।

भगवद्गीता में निष्काम कर्म करने की प्रेरणा की गई है, किन्तु इसका आशय यह नहीं कि कोई दुष्प्रवृत्ति करता रहे एवं फलभोग की चिन्ता न करे। वहाँ पर वस्तुतः सत्कर्म करते हुए भी फल की कांक्षा नहीं करने की बात कही गई है, जिसका सूत्रकृतांग से कोई विरोध नहीं है। दोनों ग्रंथों में दुष्प्रवृत्तियों के त्याग का विधान किया गया है।

दुष्प्रवृत्तियों का दुष्परिणाम कर्मसिद्धान्त के नियम से भी प्राप्त होता है तथा समाज में भी बदनामी होती है। कभी राज्य की ओर से भी दण्डित किया जाता है। इसलिए दुष्प्रवृत्ति का त्याग उसके परिणाम को अनुमान से जानकर भी करना चाहिए।**-सम्पादक**

विचार-वारिधि

ब्रह्मचर्य (3)

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जहाँ स्त्री, नपुंसक और पशु निवास करते हों, वहाँ ब्रह्मचारी साधु को नहीं रहना चाहिए। ब्रह्मचारिणी स्त्री के लिए भी यही नियम जाति-परिवर्तन के साथ लागू होता है। इसी प्रकार मात्रा से अधिक भोजन करना, उत्तेजक भोजन करना, कामुकता वर्धक बातें करना, विभूषा-शृंगार करना और इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति धारण करना, इत्यादि ऐसी बातें हैं जिनसे ब्रह्मचारी को सदैव बचते रहना चाहिए। जो इनसे बचता रहता है, उसके ब्रह्मचर्य व्रत को आंच नहीं आती। जिस कारण से भी वासना भड़कती हो, उससे दूर रहना ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक है।
- तारुण्य या प्रौढ़ावस्था में यदि सहशिक्षा हो तो वह ब्रह्मचर्य पालन में बाधक होती है। अच्छे संस्कारों वाले बालक-बालिकाएँ भले ही अपने को कायिक सम्बन्ध से बचा लें, किन्तु मानसिक अपवित्रता से बचना तो बहुत कठिन है। जब मन में अपवित्रता उत्पन्न हो जाती है तो कायिक अधःपतन होते देर नहीं लगती। तरुण अवस्था में अनंगक्रीडा की स्थिति उत्पन्न होने का खतरा बना रहता है। अतएव माता-पिता आदि का यह परम कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तति के जीवन-व्यवहार पर नजर रखें और कुसंगति से बचाने का यत्न करें। उनके लिए ऐसे पवित्र वातावरण का निर्माण करें कि वे गन्दे विचारों से बचे रहें और खराब आदतों से परिचित न हो पाएँ।
- काम-वासना की उत्तेजना के यों तो अनेक कारण हो सकते हैं और बुद्धिमान व्यक्ति को उन सबसे बचना चाहिए, परन्तु दो कारण उनमें प्रधान माने जा सकते हैं- 1. दुराचारी लोगों की कुसंगति, 2. खानपान संबंधी असंयम। व्रती पुरुष भी कुसंगति में पड़कर गिर जाता है और अपने व्रत से भ्रष्ट हो जाता है। इसी प्रकार जो लोग आहार के सम्बन्ध में असंयमी होते हैं, उत्तेजक भोजन करते हैं, उनके चित्त में भी काम-भोग की अभिलाषा तीव्र रहती है। वास्तव में आहार-विहार के साथ ब्रह्मचर्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतएव ब्रह्मचर्य की साधना करने वाले को इस विषय में सदा जागरूक रहना चाहिए। मांस, मदिरा, अंडा आदि का प्रयोग करना ब्रह्मचर्य को नष्ट करने का एक कारण है। कामोत्तेजक दवा और तेज मसालों के सेवन से भी उत्तेजना पैदा होती है। *-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार*

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (27)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- जीवन-निर्माण के लिए समय का पूर्ण उपयोग करना चाहिये।
- समाज के लिए श्रद्धावान जीवनदानी श्रावक चाहिये।
- आपको पवित्र बनना है, अपना उद्धार करना है तो धर्म संस्कार लेकर चलना होगा।
- आध्यात्मिक ज्ञान की उपेक्षा के कारण घर-घर में झगड़े हैं।
- किसी बच्चे में वैराग्य भावना जगे तो उसे शासन सेवा में समर्पित करने की तत्परता होनी चाहिये।
- इस जीव को अधिकतर दुःख मिला है तो उसके अपने अविवेक से। अविवेक से सुख भी दुःख बन जाता है।
- अविवेक से यौवन, धन और प्रभुता भी अनर्थकारी बन जाते हैं।
- सम्पदा है और विवेक है तो वह सम्पदा मनुष्य को दानवीर बना सकती है।
- जो पाप से हटाकर धर्म की ओर बढ़ाये, उसका नाम है- विवेक।
- विवेक बिना धर्म निष्प्राण शरीर है। विवेक बिना धर्मक्रिया अंधी है, महत्त्वहीन है।
- दया, दान, जप, तप, संयम सबमें विवेक की जरूरत है।
- पूर्व कर्म के कारण बुद्धि ऐसी बन गई कि मोह के बंधनों को छोड़ने का खयाल ही नही आ रहा है।
- राग-द्वेष, कषाय, खिच-खिच एवं प्रतिदिन लड़ाई-झगड़े करते रहे तो मोक्षप्राप्ति संभव नहीं है।
- अधिक रस लेकर कर्म का बंध करोगे तो भोगना कठिन होगा।
- स्थूल हिंसा से सूक्ष्म हिंसा का पलड़ा भारी बताया गया है।
- द्रव्य-हिंसा के साथ-साथ भाव-हिंसा का त्याग कीजिये।
- जो प्राण आप नहीं दे सकते, उनको लेने का आपको कतई अधिकार नहीं है।
- मानव-जाति में फैल रही संवेदनहीनता मानव-जाति के लिए बहुत बड़े खतरे का संकेत है।
- मांसाहार से स्वयं बचें, घर-परिवार को बचाएँ और समाज व राष्ट्र में इसकी बढ़ती व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाएँ।
- मरने वाले जानवरों को अपनी अर्जित कमाई से बचाने की ओर सक्रिय बनें।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

भक्ष्याभक्ष्य विवेक एवं रात्रि-भोजन-त्याग

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.) में 24 जुलाई 1994 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतनमल जी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है। यह प्रवचन रात्रि-भोजन त्याग की प्रेरणा करता है।-**सम्पादक**

शरीर साधन है, साध्य नहीं

साध्य की सिद्धि के लिए साधन की आवश्यकता होती है। बिना साधन के साध्य सिद्ध नहीं होता। दर्जी चाहे कितना ही कुशल क्यों न हो, बिना सूई, कैंची एवं धागे के वस्त्र नहीं सिल सकता, चिकित्सक चाहे कितना ही निपुण क्यों न हो, औजारों और साधनों की सहायता के बिना शल्यक्रिया नहीं कर सकता, कुम्भकार कितना ही कलावान् क्यों न हो, चाक, डण्डे और मिट्टी के बिना घट का निर्माण करने में समर्थ नहीं होता। साधना की सिद्धि में भी इसी प्रकार साधन का महत्त्व है।

हमारा प्रमुख साध्य तो मोक्ष है और उसकी प्राप्ति में साधन हैं- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र। इन तीनों की आराधना में साधन बनता है मनुष्य का औदारिक शरीर। यह शरीर हमें मिला है, किन्तु इसके महत्त्व से हम अनभिज्ञ हैं। देवता भी इस शरीर को प्राप्त करने के लिए तरसते हैं, क्योंकि मनुष्य-शरीर को प्राप्त किए बिना रत्नत्रय की साधना संभव नहीं है। क्षायिक सम्यग्दर्शनी देव यह जानते हुए भी कि निर्जरा किस प्रकार होती है, कर्म किस प्रकार कटते हैं तथा मोक्ष कैसे प्राप्त होता है, वे मनुष्य-देह के अभाव में अप्रमत्तता और वीतराग की साधना में चारित्र के चरण नहीं बढ़ा सकते।

रत्नत्रय की आराधना में विशेषतः सम्यक्चारित्र में आरूढ होने के लिए मनुष्य का औदारिक शरीर भी एक साधन है। साधना की भावनाएँ, मन की उमंगें और निर्मल विचार होने पर भी बिना इस शरीर के साधना नहीं हो पाती। इसीलिए नीतिकार कहते है- "**शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**" अर्थात् धर्म की साधना में सबसे पहला साधन शरीर है। यह ध्यान रहे कि शरीर साधन है, साध्य नहीं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो साधनभूत इस शरीर को ही साध्य मान लेते हैं। नतीजा होता है कि वे पेट को पेटी की तरह इस्तेमाल करते हैं। कब खाना, क्या खाना, क्यों खाना और कैसे खाना आदि का विचार किए बिना

ही वे शरीर में कचरा एकत्रित करते रहते हैं, जिससे शरीर में साधना की क्षमता ही नष्टप्राय हो जाती है और शरीर विभिन्न व्याधियों का पिटारा बन जाता है।

त्रिविध मनुष्य

भोजन ग्रहण करने की दृष्टि से विचार करें तो हमें तीन प्रकार के मनुष्य दिखाई देते हैं- एक खाने के लिए जीते हैं, दूसरे जीने के लिए खाते हैं तथा तीसरा वर्ग साधकों का है, जो संयम यात्रा का निर्वाह करने के लिए आहार लेते हैं।

(1) खाने के लिए जीने वाले

जो खाने के लिए जीते हैं वे खाद्य-अखाद्य, पेय-अपेय, समय-असमय आदि का विचार नहीं करके अपनी तो हानि करते ही हैं, किन्तु अनन्त जीवों की हिंसा के दोष से भी वे नहीं बच पाते। जिनका लक्ष्य खाना है, वे सोचते हैं- मानव जीवन में आए हैं तो सब तरह के पदार्थों का सेवन कर लेना चाहिए, फिर न जाने यह नर तन कब प्राप्त हो। किन्तु उनका यह चिन्तन उन्हें किस पतन की ओर धकेल रहा है, इससे वे अनभिज्ञ बने रहते हैं। यह अज्ञान एवं मिथ्यात्व की दशा है। ऐसी दृष्टि वाले लोगों के लिए एक पुरानी कहावत है- 'मूर्ख का मरण दो तरह से होता है, या तो खाय मरे या उठाय मरे।' ये लोग स्वाद के वशीभूत होकर भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक न रखते हुए मद्य-मांस जैसे अभक्ष्य एवं असेवनीय पदार्थों का सेवन करते हुए भी नहीं हिचकते हैं और अपनी क्षणभर की स्वादलोलुपता के लिए हजारों-लाखों प्राणियों की अकाल मृत्यु में निमित्त बन जाते हैं।

खाने के लिए जीने वाले रसना के अधीन होते हैं। उन्हें कब खाना और क्या खाना इसका भी बोध नहीं होता। नीतिशास्त्र कहते हैं कि जब कभी खाने का अवसर आता है तो जानवर भी सूँघ कर खाता है। गधा जैसा मूढ़ जानवर भी मुँह डालने से पहले भोजन को सूँघता है। अगर कभी उसके आहार में तम्बाखू का अंश आ जाय तो वह मुँह फेर लेता है। ऊँट एवं बकरी के लिए भी कहावत है- 'ऊँट छोड़े आँकड़ो, बकरी छोड़े काँकरो।' ऊँट कँटीली झाड़ियाँ खा लेता है, बाँवलिया खा लेता है, कड़वी पत्तियाँ खा लेता है, किन्तु आँकड़े (आकवृक्ष) के पत्ते आते ही मुँह फेर लेता है। बकरी जमीन पर पड़ी पत्तियाँ खा जाती है, किन्तु कंकर नहीं खाती है। जानवर भी भक्ष्य-अभक्ष्य में भेद करना जानते हैं, किन्तु यह बुद्धिशील मनुष्य इसका विचार नहीं करता। वह ऐसे होटलों और रेस्टोरेण्टों में जाता है जहाँ उसे खाने को मांस और अण्डे मिलें, पीने को मदिरा मिले और भोगने को भोग मिलें। धिक्कार है उसकी बुद्धिशीलता को। उससे तो एक कबूतर अच्छा है। कबूतर कंकर भले ही खा लेता है, किन्तु किसी जीव को हानि नहीं पहुँचाता। वह शुद्ध शाकाहारी है। उसके लिए कहा गया है- काल हो, दुष्काल हो, अन्न की दुर्लभता हो, कबूतर दाना नहीं

मिलने पर कंकर खा जाता है, किन्तु सुले हुए (त्रस जीव युक्त) अनाज के दाने को नहीं चुगता है। कहने का आशय है कि पशु-पक्षी भी खाद्य-अखाद्य का भेद करके चलते हैं, किन्तु खाने के लिए जीने वाला मनुष्य इसका विचार करके नहीं चलता।

जो खाद्य-अखाद्य का भेद करना जानते हैं उनमें बहुत से ऐसे हैं, जिन्हें यह ज्ञान नहीं है कि उन्हें कितनी मात्रा में खाना चाहिए। वैद्यों एवं डॉक्टरों के द्वारा चेताये जाने पर भी वे अपनी आदतों को नहीं बदलते हैं। एक समय में चार-चार सेर चूँटिये (बेसन) की चक्की खाने वालों के उदाहरण ध्यान में है।

(2) जीने के लिए खाने वाले

दूसरे प्रकार के मनुष्य जीने के लिए खाते हैं। ये आहार-विहार का थोड़ा खयाल रखकर चलते हैं। अपनी प्रकृति के अनुकूल आहार करते हैं। अगर वह पित्त प्रकृति का है तो उसके अनुसार, अगर वह वात प्रकृति का है तो उसके अनुसार तथा अगर वह कफ प्रकृति का है तो उसके अनुसार आहार ग्रहण करता है। पेट में अल्सर हो गया है तो पेय पदार्थ ज्यादा लेता है तथा ठोस पदार्थ कम। कब्ज होने पर कब्जनाशक आहार लेता है, दस्त लगने पर उसे रोकने का उपाय सोचता है। तेल, मिर्च, मसाले के अधिक उपयोग से भी बचता है। उसे यह भी विवेक रहता है कि खाद्य क्या है, अखाद्य क्या है, कब खाना चाहिए और कब नहीं खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए और कितना नहीं खाना चाहिए? इन सबका विवेक रखकर चलने वाले ये लोग खाने के लिए जीने वालों की अपेक्षा स्वास्थ्य के उपयुक्त लक्ष्य वाले हैं। इनका जीवन उतना असंतुलित नहीं होता जितना खाने के लिए जीने वालों का होता है। व्याधियों से भी ये अपेक्षाकृत कम घिरे रहते हैं।

(3) संयम-निर्वाह के लिए खाने वाले

साधकों के लिए भी भोजन जरूरी है। क्योंकि साधना में शरीर सहायक है तो शरीर को साधना योग्य रखने के लिए भी आहार आवश्यक है।सच्चे साधक संयम-निर्वाह के लिए आहार ग्रहण करते हैं, जीने के लिए अथवा स्वादलोलुपता के लिए नहीं। प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है- **'तहा भोत्तव्वं जहा से जाया माया य भवइ।'** अर्थात् उतना एवं वैसा आहार ग्रहण करो, जिससे तुम्हारी संयम यात्रा का निर्वहन हो सके, तुम्हारी साधना में आहार के कारण विघ्न उत्पन्न न हो, प्रमाद नहीं आवे और विकार भी उत्पन्न न हो। स्वाद के लिए भोज्य पदार्थों का सेवन करने की साधक को अनुज्ञा नहीं दी गई, **'रसट्ठयाए न भुंजिज्जा।'** रस के लिए मत खाओ। **'जवणट्ठयाए भुंजिज्जा'**- संयम-यात्रा का निर्वाह करने के लिए खाओ।

साधना करने वाले गृहस्थ साधक के लिए भी आहार करते समय तीन बातें ध्यान में

रखने की हैं। वह 1. स्वास्थ्य की दृष्टि से, 2. साधना की दृष्टि से और 3. विकृति उत्पन्न करने वाला न हो, इसको खयाल में रखकर आहार ग्रहण करे। जो साधक इन तीन बातों को ध्यान में रखकर आहार लेते हैं वे विवेक दृष्टि वाले कहे जाते हैं।

साधक-जीवन में सात्त्विक आहार हो, क्योंकि आहार के साथ मन का गहरा सम्बन्ध है। 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन' यह प्रसिद्ध उक्ति इस बात का संकेत करती है कि साधक को अपना चित्त निर्मल बनाना है तो आहार का चयन सही करना जरूरी है।

आहार के तीन प्रकार

गीता में श्रीकृष्ण ने आहार के तीन प्रकार बताए हैं- तामसिक, राजसिक और सात्त्विक। तमस् अर्थात् रात्रि में निष्पन्न या रात्रि में भक्ष्यमाण अथवा आलस्य, प्रमाद एवं जड़ता को पैदा करने वाला भोजन तामसिक भोजन है। राजसिक भोजन सरस होता है। इससे क्रियाशीलता तो बढ़ती है, किन्तु चित्त विकृत रहता है। इस भोजन का स्वभाव है विकार पैदा करना। जड़ता और विकार से दूर रहने वाले साधक को सात्त्विक भोजन लेना चाहिए। जिस भोजन को ग्रहण करने से मन में विकार उत्पन्न न हों, चित्त में समाधि रहे तथा संयम-यात्रा का निर्वाह भली प्रकार से हो वह सात्त्विक भोजन है। साधक की साधना सात्त्विक भोजन से बाधित नहीं होती उसे तामसी एवं राजसी भोजन छोड़कर सात्त्विक भोजन लेना चाहिए।

भोजन लें, पर रात में नहीं

भोजन जरूरी है। शरीरधारी व्यक्ति बिना भोजन के दीर्घकाल तक जीवन नहीं चला सकता। दीया तभी तक जलता है जब तक भीतर में तेल है। खेत में वही अंकुर पल्लवित एवं पुष्पित होता है जिसे जल का सिंचन मिलता है। इसी प्रकार शरीर तभी तक चलता है जब तक उसको आहार मिल रहा है। आहार आवश्यक है, फिर भी हमें यह खयाल रखना पड़ता है कि हम किस प्रकार का आहार ग्रहण करें। अखाद्य एवं अपेय वस्तुओं के सेवन से बचें। तामसी और राजसी आहारों को छोड़कर सात्त्विक आहार लें।

यह सब जान लेने के पश्चात् भी यह जानना जरूरी है कि हम आहार कब करें? प्रायः यह कहा जाता है कि जब भूख लगे तब खाओ, बिना भूख के मत खाओ। किन्तु आहार का समय क्या हो? यह चिन्तन का विषय है। कोई रात के दो बजे उठकर भोजन कर रहा है तो क्या आहार-विज्ञान इसे स्वीकार करेगा? नहीं। आहार करने का काल रात में नहीं दिन में होता है। स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से भी दिन में ग्रहण किए गए भोजन का ही महत्त्व है। खाने एवं सोने के बीच चार घण्टे का अन्तराल स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। जो ऐसा नहीं करते वे कब्ज, अपच एवं गैस की बीमारी से घिरे रहते हैं। इसके साथ ही बड़े-बड़े रोग भी

उन्हें घेर लेते हैं। रात में भोजन करने में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह व्रतों का पालन ठीक से नहीं हो सकता।

साधनाशील व्यक्ति को तो रात में भोजन छोड़ना जरूरी है ही, किन्तु जो जीने के लिए खाता है उसके लिए भी स्वास्थ्य की दृष्टि से रात का भोजन हानिकारक है। जो जीना चाहता है उसे बीमारी से बचने के लिए रात्रि-भोजन छोड़ना अत्यन्त जरूरी है। मैं यह कहूँ कि जो खाने के लिए जीता है, वह भी खाने का कार्य तब जारी रख सकता है, जब वह दीर्घकाल तक जीए। इसलिए खाने के लिए जीने वाले को भी आखिर जीना तो है ही। इसलिए मानव चाहे साधनाशील हो, चाहे जीने के लिए खाने वाला हो, चाहे खाने के लिए जीने वाला हो, किसी के लिए भी रात को भोजन करना लाभकारी नहीं है।

रात को भोजन न करने वाले का मनोबल एवं आत्मबल बढ़ता है, पैसा बचता है और साथ ही अनेक रोगों से वह छुटकारा पा लेता है।

रात्रि भोजन से नरक

हमारे यहाँ नरक जाने के चार कारण कहे गए हैं- महारम्भ, महापरिग्रह, पंचेन्द्रिय की घात करना और मद्यमांस का सेवन। महाभारत के शांतिपर्व में नरक में जाने के चार कारण बतलाए गए हैं, जिनमें एक रात्रि-भोजन भी है। वे चार कारण हैं-

चत्वारि नरकद्वारं, प्रथमं रात्रिभोजनं।
परस्त्रीगमनं चैव, सन्धानानन्तकायिकं।।

-महाभारत, शांतिपर्व

नरक में जाने के चार द्वार हैं। उनमें पहला रात्रि-भोजन है। दूसरा परस्त्रीगमन है, तीसरा सन्धान अर्थात् अचार आदि का सेवन है और चौथा अनन्तकायिक जीवों का सेवन करना है। नरक में जाने के इन चार द्वारों में रात्रि-भोजन पहले क्रम पर है।

ओसवालों के तीन नियम

पूज्य रत्नप्रभसूरि ने जब ओसियाँ में क्षत्रियों को ओसवाल बनाया तो उन्हें तीन प्रमुख प्रतिज्ञाएँ करवायीं। उनमें एक प्रतिज्ञा थी कि ओसवाल मद्य-मांस का आहार नहीं करेंगे, दूसरी थी कि वे नवकार मंत्र पर श्रद्धा रखेंगे और तीसरी तथा महत्त्वपूर्ण प्रतिज्ञा थी कि वे रात्रि में भोजन नहीं करेंगे। आज आप उन प्रतिज्ञाओं अथवा नियमों को भूल गए हैं। मद्य-मांस का सेवन करने वाले आज भी कम होंगे, किन्तु रात्रि में खाने वालों की बहुलता है। आप अधिकांश भोज रात्रि में आयोजित करते हैं।

आप अपने आपको पहचानिए। आप कौन हैं? क्या आपके कोई प्रतिज्ञा है? क्या आपकी कोई पहचान है? जिसे देखकर समझा जा सके कि आप जैन हैं। रात में न खाना

जैनों की मोटी पहचान है। रेलयात्रा में भी यदि आप सायंकाल जल्दी भोजन करना आरम्भ करते हैं, तो लोग स्वतः पूछेंगे, क्या आप जैन हैं? जैनों की इस पहचान को आप खो रहे हैं, यह चिन्ता की बात है। आज भी कई जातियाँ हैं, जो रात्रि-भोजन नहीं करतीं। जो किसानी का धंधा करने वाले हैं वे सुबह भाता (भोजन) लेकर खेतों पर जाते हैं, रात को नहीं खाते। किसान लोग कहते हैं- महाराज! जब से कंठी धारण की है, रात में नहीं खाया।

क्या रात में खाने वाले को जैन कहना?

आचार्य भगवन्त (स्व. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) सं. 2027 और संवत् 2029 में पल्लीवाल क्षेत्र में पधारे। भगवन्त दूसरे गाँव में विराज रहे थे और पं. छोटे लक्ष्मीचंद जी म.सा. के साथ मैं किसी दूसरे गाँव में था। पं. लक्ष्मीचंद जी महाराज ने विशेष नियम दिलाते हुए फरमाया-आज रात को भोजन नहीं करना। एक भाई ने पूछा- महाराज! क्या जैन भी रात में खाते हैं? अगर कोई रात्रि में खाता है तो उसे जैन कहना क्या? आज भी पोरवाल और पल्लीवाल समाज के अधिकांश लोग दिन में ही भोजन करते हैं। उनके यहाँ भोज का आयोजन भी दिन में होता है, रात्रि में नहीं।*

जैन घरानों में सामान्य रूप से रात्रि में भोजन नहीं होता था, पर देखा-देखी आपने इसे शुरू कर दिया। कर्नाटक में एक पुलिस अधीक्षक गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए। बातचीत में उन्होंने फरमाया-'महाराज! हमारे घर में बड़े ही नहीं, बच्चे भी रात को नहीं खाते हैं। छोटे बच्चों को रात्रि में दुग्धपान भी नहीं कराया जाता है। हमारे यह संस्कार हमें बचपन से अपने जैन घर में मिले हैं।

रात्रि-भोजन पर प्रहार

पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने रात्रि-भोजन पर बहुत तीखे प्रहार किए हैं-

आँधो जीमण रात रो, करे अधर्मी जीव।
ओछा जीतव कारणे, द्वेवे नरक में नींव।।

रात्रि में भोजन करने वाले को, जूँ है या जीरा, राई है या लाल चींटी नज़र का चश्मा चढ़ाकर देखने पर भी दिखाई नहीं पड़ता। वर्षा के मौसम में दिन के उजाले में जहाँ देखना कठिन होता है, वहाँ रात में दिखाई पड़ना और भी कठिन है। इस प्रकार रात्रि के अन्धकार में भोजन करने का काम अधर्मी जीव करते हैं, यह धर्मियों का काम नहीं है।

पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. ने रात्रि-भोजन के त्याग का उदाहरण देते हुए

* पोरवाल एवं पल्लीवाल समाज में बाद में रात्रि-भोजन का कुछ प्रचलन बढ़ा, जिसे रोकने के लिए पूज्यप्रवर ने अनेक ग्राम-नगरों में सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन न करने हेतु नियम करवाए हैं।

कहा-

चिड़ी कमेड़ी कागला, रात चुगण नहीं जाय।
नरदेहधारी मानवा, तू रात पड्याँ किम खाय।।

भाई! जिनके पास संग्रह नहीं है, चार दाने भी कल के लिए जो नहीं रख पाते, ऐसे पशु और पक्षी भी रात पड़ने पर नहीं खाते हैं। चिड़ी, कबूतर आदि पक्षियों के पास कुछ न होने पर भी वे रात में नहीं खाते हैं। दिन में भी वे ढेर सारे अनाज में से भी जितना चोंच में आता है उतना लेकर उड़ जाते हैं। बच्चों को खिलाने की जरूरत होने पर भी इसी प्रकार चोंच भरने के बाद घोंसले में पहुँच जाते हैं। आपके यहाँ कई-कई दिनों का नहीं, महीनों और वर्षों के लिए संग्रह है फिर भी आप रात में खाते हैं। क्या यह आश्चर्य नहीं? क्या यह लज्जा की बात नहीं?

माधवमुनि ने रात में खाने वाले को निशाचर बतलाया है। उन्होंने कहा है-

रात को फिरे और खावे, मनुज वह निशिचर कहलावे।
निशाचर रावण के भाई, नहीं रघुवर के अनुयायी।।

चर् धातु के दो अर्थ हैं- चलना और खाना। जो रात को चले और रात में खाए वे निशिचर मतलब राक्षस कहलाते हैं। जो राक्षस हैं, वे रावण के भाई हैं, वे राम के अनुयायी नहीं होते।

आप दिन में खा सकने की स्थिति वाले हैं, फिर क्यों रात में खाते हैं? आजकल दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। वर्तमान में करीब साढ़े तेरह घण्टे का दिन होता है और रात लगभग दस घण्टे की। फिर भी दिन में खाने की फुर्सत नहीं?

रात्रि-भोजन का त्याग क्यों?

रात्रि में भोजन करना न स्वास्थ्य-विज्ञान की दृष्टि से अच्छा है और न ही धार्मिक दृष्टि से। इससे शरीर भी बिगड़ता है, पैसा भी बिगड़ता है और अनेक जीवों की विराधना का दोष भी लगता है।

(1) स्वास्थ्य की दृष्टि से- रात्रि में भोजन करना स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है। आरोग्यशास्त्री कहते हैं कि भोजन और शयन के बीच में कम से कम तीन घण्टों का अन्तर होना चाहिए। तभी भोजन पचता है और पेट सम्बन्धी विकारों की गति मन्द पड़ती है। भोजन करते ही सो जाने पर अथवा पर्याप्त अन्तराल न मिलने पर विकृतियाँ बढ़ने के साथ शरीर का स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। फिर हम वैद्यों, डॉक्टरों, अस्पतालों एवं दवाइयों की दुकानों पर चक्कर काटते रहते हैं। यही नहीं रात में भोजन में कीड़े-मकोड़े या जूँ जैसा जीव

जंतु भी खाने में आ सकता है। जिससे जलोदर जैसा भयानक रोग हो सकता है। कभी-कभी तो रात में खाने वालों का सवेरे तक जीवन नहीं बच पाता है, क्योंकि रात के भोजन में किसी जीव का ज़हर मिल जाता है। दूध में छिपकली गिर जाने और बिना जाँच किए उसे पी लेने से भी जीवन संकट में पड़ जाता है।

(2) धार्मिक दृष्टि से– जैन शास्त्रों में ही नहीं अन्यान्य ग्रन्थों में भी कहा गया है कि जो रात्रि में नहीं खाता उसके जीवन का आधा भाग एक प्रकार से तप में गुजरता है। ऐसे लोग वर्ष में छह मास तपस्या करते हैं। धर्म की दृष्टि से नवकारसी से लगाकर मास-खमण आदि तक जितने भी प्रत्याख्यान हैं वे रात्रि-भोजन के त्याग से आरम्भ माने गए हैं। नवकारसी तप उसी का है जो रात्रि-भोजन का त्यागी है। शास्त्रों में नवकारसी तप को नरक के बंधन तोड़ने वाला माना गया है। राजा श्रेणिक को नरक का बंध तोड़ने का उपाय प्रभु महावीर ने नवकारसी तप बताया, किन्तु वह उसे भी न कर सका।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह महाव्रत तथा अणुव्रतों का पालन तभी हो सकता है जब रात्रि-भोजन का त्याग हो। रात्रि-भोजन करने वाला ब्रह्मचर्य की उतनी रक्षा नहीं कर सकता, जितनी रात्रि-भोजन का त्यागी कर सकता है। यही बात अन्य व्रतों के बारे में भी है। धर्म-साधना एवं व्रतों का पालन करने में रात्रि-भोजन का त्याग एक अनिवार्य कर्त्तव्य है।

रात्रि-भोजन में अनन्त जीवों की विराधना होती है। रात्रि में भोजन करने वाले अकारण ही अनन्त जीवों की अकाल मृत्यु के निमित्त बनते हैं। हिंसा के इस घमासान से बचने की जरूरत है। जीवों पर करुणाशील होकर उनकी विराधना से बचने की जरूरत है।

(3) वैज्ञानिक दृष्टि से– वैज्ञानिक दृष्टि से भी रात में खाना नुकसानकारक है। दिन में सूर्य की धूप से निकलने वाली अल्ट्रावायलेट किरणों के कारण जहाँ अनेक सूक्ष्म जीव उत्पन्न होकर संचरण नहीं कर पाते, वहाँ रात्रि में उनकी उत्पत्ति एवं संचरण का आधिक्य हो जाता है। इतने अधिक सूक्ष्म जीव भी होते हैं जिन्हें तीक्ष्णदृष्टि वाला व्यक्ति भी नहीं देख सकता। दूसरी बात यह है कि दिन में सूर्य की धूप से पाचन-क्रिया जितनी आसान होती है, उतनी अन्धकार में नहीं। एक वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि दिन में पेड़-पौधे जहाँ ऑक्सीजन छोड़ते हैं, वहाँ वे रात्रि में कार्बनडाइऑक्साइड छोड़ते हैं और हमारे पाचनतंत्र एवं स्वास्थ्य के लिए ऑक्सीजन का बड़ा महत्त्व है।

आप किसी भी दृष्टि से रात्रि-भोजन छोड़कर चलेंगे तो शरीर से स्वस्थ रह सकेंगे, विराधना से बच सकेंगे और रत्नत्रय की आराधना में आगे बढ़ सकेंगे। ■

जीवन-व्यवहार

बोलें प्रिय-हित-मित वचन

मुनि श्री मनीष सागर जी

1. प्रिय वचन

मधुर वचन एक प्रकार का वशीकरण मंत्र है। जो मधुर बोलता है, वह सहज ही सबका प्रिय बन जाता है। किसी कवि ने कहा भी है[1]-

प्रिय-वाक्य-प्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति मानवाः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता?

अर्थात् सभी मनुष्य प्रिय वचन से सन्तुष्ट रहते हैं, तो फिर मधुर वचन बोलने में दरिद्रता क्यों की जाए? प्रसिद्ध उक्ति है[2]-

काग काको धन हरे, कोयल काको देय।
मीठी वाणी बोल के, जग अपनो कर लेय।।

अर्थात् न कौआ किसी का धन हरता है और न कोयल किसी को धन देती है, फिर भी कोयल मधुर बोलकर सबको अपनी ओर आकर्षित करती है और सबकी प्यारी बन जाती है, किन्तु रंग-रूप में समान होने पर भी कौआ काँव-काँव करके तिरस्कृत होता है। इस प्रकार यदि हम आकृति से सुन्दर न भी हैं, तो भी अपनी वाणी की मिठास से सुन्दर बन सकते हैं।

'बोलो' शब्द का किसी ने अर्थ किया है- बो+लो यानी 'बो' कर 'लो' (Sow and Reap)। यदि हम श्रेष्ठ और मीठे फल प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें सदा मीठे वचनों के ही बीज बोने चाहिए। कटु वचनों का प्रयोग करने पर कटु फल ही मिलेंगे, मीठे फल नहीं।

लौकिक कहावत भी है कि 'गुड न दो तो चलेगा, लेकिन गुड जैसा मीठा अवश्य बोलो'। किन्तु कई बार हमारे शब्द तलवार की धार से भी अधिक तीक्ष्ण होते हैं। दशवैकालिकसूत्र में साधक को सावचेत करते हुए कहा गया है- **'वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि'** अर्थात् वाणी के द्वारा कहे गए दुष्ट और कठोर वचन दीर्घकाल के लिए वैर और भय के कारण बन जाते हैं।[3] अतः वाणी का प्रयोग सम्यक्तया विचारकर ही करना चाहिए। आचारांगसूत्र में भी इसी बात की पुष्टि करते हुए कहा गया है- **'नो वयणं फरुसं वइज्जा'** अर्थात् कटुवचनों का प्रयोग कदापि न करो।[4] सूत्रकृतांग में इसके भयावह परिणामों के बारे में कहा गया- **'जो परिभवइ परं जणं,**

संसारे परिभमइ महं' अर्थात् जो बात-बात में दूसरों को तिरस्कृत करते हैं एवं कटु सुनाते हैं, वे कर्मबन्धन के फलस्वरूप दीर्घकाल तक इस संसार अटवी में भटकते ही रहते हैं।[5] अतः हमें कटुक, कठोर एवं कर्कश वाणी का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

दुनिया में अलग-अलग तरह के लोग हैं। कोई मीठा बोलते हैं, तो कोई कड़वा। कोई कड़वा सच कहकर स्पष्टवादी होने का दम्भ भरते हैं, किन्तु यह उनका झूठा अहंकार ही होता है,[6] जबकि वास्तविकता में-

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।।

अर्थात् व्यक्ति को सिर्फ सत्य ही नहीं बोलना चाहिए, बल्कि ऐसा सत्य बोलना चाहिए, जो प्रियकारी भी हो।[7]

अधिकांश समस्याओं की शुरुआत वाणी की अशिष्टता और अभद्रता से ही होती है। व्यक्ति जितना करके नहीं बिगाड़ता है, उससे ज्यादा बोलकर बिगाड़ता है। वृंदसतसई में कहा भी है[8]-

बात कहन की रीति में, है अन्तर अधिकाय।
एक वचन तैं रीस बढ़े, एक वचन तैं जाय।।

अर्थात् किसी एक तरीके से कहे गए वचन से जहाँ आत्मीयता और प्रेम बढ़ता है, वहीं किसी अन्य तरीके से कहे गए वचन से परस्पर रोष एवं दूरियाँ बढ़ती है।

जैनाचार्यों ने इसीलिए ओछे, अभद्र, असभ्य, अभिशप्त एवं अशिष्ट शब्दों के प्रयोग का दृढ़ता से निषेध किया है। सूत्रकृतांग में कहा भी गया है- **'तुमं तुमन्ति अमणुन्नं सव्वसो तं न वत्तए'** अर्थात् तू-तू जैसे अभद्र शब्द कभी नहीं कहना चाहिए।[9]

शिष्ट व्यक्ति और शिष्ट समाज की भाषा में वाणी का विवेक होता है। उसमें अपशब्दों की बौछार नहीं होती। कुछ व्यक्ति जब आक्रोश में रहते हैं, तो गालियों की बौछार कर देते हैं। गालियों का एक छोटा सा शब्दकोश बन जाता है। इससे विपरीत कुछ लोग मीठी और भद्र भाषा का ही प्रयोग करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी ने इसीलिए कहा है- "कषाय की छलनी से छनकर जो भाषा बोली जाती है, वह नहीं बोलनी चाहिए, कषायमुक्त भाषा ही बोलनी चाहिए।"[10]

यह ज्ञातव्य है कि सभी भाषाओं में आदरसूचक शिष्ट शब्दों का प्रयोग करने की सुविधा होती है, अतः हमें तिरस्कार रूप अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

विपरीत एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वाणी की मधुरता, कोमलता एवं सौम्यता

प्रतिरोधी के समक्ष विशिष्ट प्रभाव छोड़ती है। अतः कहा गया है[11]-

अतिवादांस्तितिक्षेत नावमन्येत कंचन।
न चेमं देहमाश्रित्य वैरं कुर्वीत केनचित्।।

किसी के द्वारा कही गई कटु-कठोर वाणी को सहन करना चाहिए, किसी का अपमान नहीं करना चाहिए और इस शरीर से किसी के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए। यहाँ तक कि क्रुद्ध व्यक्ति के प्रति क्रोध नहीं करना चाहिए तथा निन्दित होने पर भी निन्दक के प्रति मधुरवाणी का ही प्रयोग करना चाहिए।[12]

अच्छी मधुर भाषा तो व्यक्तित्व की विशिष्टता की ही परिचायक है। प्रसिद्ध कहावत भी है- बोल्या के लाध्या। व्यक्ति कैसा है, यह जानने के लिए बहुत गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं है, उससे पाँच मिनट बात करने पर सहज ही पता चल जाता है।[13]

यहाँ पर ध्यातव्य है कि मधुर वाणी का प्रयोग चापलूसी, ठगी, मायाचारी आदि दुष्कार्यों के लिए करना भी उचित नहीं है। स्थानांगसूत्र में गलत अभिप्राय वाले लोगों के सन्दर्भ में स्पष्ट कहा गया है कि जिनका हृदय तो कलुषित और दम्भयुक्त है, किन्तु वाणी से मीठा बोलते हैं, वे मनुष्य विष के घड़े पर मधु के ढक्कन के समान हैं।[14] आज अधिकांश लोग, जिनकी वाणी में सरलता, सरसता और सुमधुरता का प्रदर्शन है, मौकापरस्त और स्वार्थी हैं। इनके विचार, वाणी और व्यवहार में एकरूपता नहीं होती है।

वस्तुतः हमारी जीवनशैली मधु के घड़े के ढक्कन के समान होनी चाहिए। हमारा अन्तर्हृदय निष्पाप एवं निर्मल हो और वाणी में मधुरता हो, यही जैनाचार्यों को अभीष्ट है।[15] सूत्रकृतांगसूत्र में इसीलिए कहा गया है- साधक न तो किसी का तिरस्कार करते हुए तुच्छ और हल्की भाषा का प्रयोग करे और न ही किसी की झूठी प्रशंसा करे।[16] आशय यह है कि न तो कटु शब्द कहे और न ही दिखावटी मधुरता जताए।

भले ही व्यक्ति प्रकाण्ड विद्वान् ही क्यों न हो अथवा किसी विषय का कितना ही मर्मज्ञ भी क्यों न हो, लेकिन उसकी वाणी में अल्पज्ञों और मूर्खों के प्रति भी उपहास, व्यंग्य और कटुता की अभिव्यक्ति नहीं होनी चाहिए। बृहत्कल्पभाष्य में स्पष्ट कहा गया है- "जिस प्रकार जहरीले काँटों वाली लता से लिपटा होने पर अमृत-वृक्ष का कोई आश्रय नहीं लेता, उसी प्रकार दूसरों का तिरस्कार करने एवं दुर्वचन कहने वाले विद्वानों को भी कोई सम्मान नहीं देता।[17]

सार रूप में कहा जा सकता है कि मधुर वाणी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आभूषण है। यह जीवन के सौन्दर्य को निखार देती है। इससे व्यक्तित्व की कई प्रकार की कमियाँ स्वतः

ढँक जाती हैं। यह जख्मी दिलों के लिए मरहम पट्टी का कार्य करती है।[18] जिसकी वाणी में दूसरों के लिए आदर है, प्रशंसा है और नम्रता है, वह सहज ही दूसरों के दिलों पर राज करता है। ऋषिभाषित में भी कहा गया है– जो सदा सुवचन बोलता है वह समय पर बरसने वाले मेघ की तरह सदा प्रशंसनीय और जनप्रिय होता है।[19]

2. हित वचन

प्रिय वचनों के साथ–साथ हित वचनों का समावेश करना भी अत्यावश्यक है। कोई वचन प्रिय तो है, किन्तु हितकर नहीं है, तो उन प्रिय वचनों से भी कोई लाभ नहीं है। दशवैकालिक सूत्र में इसीलिए कहा गया है कि बुद्धिमानों को ऐसी भाषा ही बोलनी चाहिए, जो प्रियकारी भी हो और हितकारी भी।[20]

आज विडम्बना यह है कि व्यक्ति के वचनों में मौकापरस्ती, चापलूसी, स्वार्थपरकता और शठता के भाव विद्यमान हैं और यह एक सामान्य सामाजिक व्यवहार बनता जा रहा है। कई लोगों के बारे में कहा जाता है– **'मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे, हृदये तु हलाहलम्'**[21] अर्थात् उनकी जीभ पर तो शहद होता है, किन्तु मन में ज़हर। आशय यह है कि वे मीठा बोलकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। किन्तु जैनाचार्यों ने इस वृत्ति का पूर्ण निषेध किया है। व्यक्ति की अभिव्यक्ति ऐसी होनी चाहिए, जिससे सबका हित सधे। उत्तराध्ययन में स्पष्ट कहा है कि हमें सदैव हितकारी वचन ही बोलना चाहिए।[22]

वाणी में हिंसक शब्दों का प्रयोग होना इस बात को इंगित करता है कि हमारी वाणी दूसरों के लिए हितकर नहीं है। जैन–परम्परा में वाणी की अहिंसकता पर विशेष बल दिया है। आज भी जैन उपासक फलादि के लिए 'काटो', 'छीलो' या 'विदारण करो' जैसे अहितकर शब्दों का प्रयोग नहीं करते हुए 'सुधारो' शब्द का प्रयोग ही करते हैं। 'ओ, बहु! आप सब्जी सुधार लो', जैसे वाक्य दूसरे प्राणियों की हिंसा के प्रति हमारे हृदय की कोमलता और सहानुभूति के परिचायक हैं। इसी प्रकार 'सफाई करो', 'पौंछा लगा दो' आदि के स्थान पर 'प्रमार्जन कर दो', जैसे वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है, जो पुनः अन्य जीवनरूपों के प्रति हितकारी भावों की अभिव्यक्ति का एक रूप है। यह ज्ञातव्य है कि बंगाली नारियाँ भी आंगन की सफाई के लिए कहती है– **'आमि पोरिष्कृत करबे'**। इसी प्रकार जैन संस्कृति में 'उपयोग रखो', 'जयणा करो' आदि वाक्यांश भी हितकर भाषा के उदाहरण हैं। यदि पिता कहते हैं– 'हे पुत्र! खिड़की की जयणा करो', तो इसका अर्थ यह हुआ कि– 'हे पुत्र! किसी जीव की हिंसा न हो, इस प्रकार से विवेकपूर्वक खिड़की बंद कर दो।' इतना अर्थ–गाम्भीर्य 'हे पुत्र! खिड़की बंद कर दो', जैसे वाक्य में नहीं झलकता।

अतः कहना होगा कि जैनाचार्यों ने हितकर वचनों के प्रयोग पर विशेष जोर दिया है। इनका जीवन में अनुपालन करना प्रत्येक जीवन-प्रबन्धक का अनिवार्य कर्त्तव्य है।

शिष्ट, सौम्य एवं प्रसन्नचित्त रहना तो उचित है, किन्तु हास्य, व्यंग्य एवं मजाक उड़ाना घोर अनुचित कार्य है। इससे शत्रु तो मित्र नहीं बनते, किन्तु मित्र को शत्रु बनते देर नहीं लगती। 'सेंस ऑफ ह्यूमर' होना (प्रसंगानुकूल सभ्य विनोद करना अथवा किसी के विनोद को समझना) अलग बात है और किसी की हँसी उड़ाना अलग बात है।[23] द्रौपदी के ये वचन कि 'अन्धे के पुत्र अन्धे ही होते हैं', महाभारत के युद्ध का प्रमुख कारण बना। अतः ऐसी अहितकर वाणी का प्रयोग भी क्यों करना? विटगिन्सटाइन कहते हैं-"There are remarks that sow and remarks that reap" अर्थात् 'टिप्पणियाँ ही बोती हैं अर्थात् जोड़ती है और टिप्पणियाँ ही काटती है।'[24] सूत्रकृतांग में इसीलिए सावचेत किया गया है- 'णातिवेलं हसे' अर्थात् असमय में नहीं हँसना चाहिए।[25] यह बुद्धिमान् पुरुषों की विशिष्ट पहचान होती है कि वे किसी का भी उपहास नहीं करते।[26] जैनाचार्यों के अनुसार तो हास्य करना, मनोरंजन करना, मखौल उड़ाना, गप्पेबाजी करना, चुटकले सुनाना आदि ऐसे कार्य हैं, जो दूसरों को निराश करते हैं और स्वयं के कर्मबंधन के कारण भी होते हैं। अतः इन्हें काषायिक वृत्ति एवं स्व-पर अहितकारी कार्य जानकर नहीं करना चाहिए।

निन्दा करना, झूठा दोषारोपण करना, कान भरना, कलह करना आदि वचनों के प्रयोग भी स्व और पर के लिए अहितकर हैं, इनका भी जैनाचार्यों ने स्पष्ट निषेध किया है। निन्दा (पर-परिवाद) करने से समय और सामर्थ्य का दुरुपयोग तो होता ही है, साथ ही हम विचारों के जाल में फँसते चले जाते हैं। हमारे निषेधात्मक भावों, जैसे-क्रोध, मान, माया, लोभ इत्यादि और अधिक गाढ़ हो जाते हैं। इनसे हमारा चित्त अशान्त, अस्थिर और अधीर हो उठता है। इतना ही नहीं, वर्तमान में अशान्ति के साथ-साथ हम भविष्य के लिए दुःखदायी पाप कर्मों का संचय कर बैठते हैं। जिसकी निन्दा की जाती है, उसका कार्य भले ही निन्दनीय हो, लेकिन निन्दा करना स्वयमेव निन्दनीय कृत्य है। यह हमारी दुर्बलता एवं हीनभावना का परिचायक है। इसमें कहीं न कहीं आत्म-प्रशंसा के भाव भी निहित होते हैं। प्रश्नव्याकरणसूत्र में निन्दा को असत्य के समकक्ष बताया गया है।[27] सूत्रकृतांगसूत्र में स्पष्ट कहा है कि- 'हे जीव! दूसरों की निन्दा करना किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं है।'[28] कहा भी गया है- 'जो दूसरों की निन्दा करके अपने को गुणवान स्थापित करना चाहता है, वह व्यक्ति दूसरों को कड़वी औषधि पिलाकर स्वयं नीरोगी होने की इच्छा रखता है, जो असम्भव है।'[29] सार रूप में कहना होगा कि निन्दा करना अहितकर है, दुष्कृत्य है, अतः

निन्दा नहीं करनी चाहिए।

अभ्याख्यान अर्थात् झूठा दोषारोपण करना भी अहितकर भाषा का ही एक रूप है। इसमें अपने दोषों को छिपाने के भाव और दूसरों का अपलाप एवं अपमान करने के भावों की प्रधानता होती है। जब भावों में कठोरता और कुटिलता होती है, तब अभिव्यक्ति में शिकायत और दोषारोपण की वृत्ति प्रखर हो उठती है। जैनाचार्यों ने इसे 'अभ्याख्यान' कहा है और इसको अधर्म एवं अकरणीय कार्यों के अन्तर्गत शामिल किया है। उत्तराध्ययन सूत्र में सभ्य, शिष्ट और सुशिक्षितों के लिए कहा गया है कि वे किसी पर दोषारोपण नहीं करते। यहाँ तक कि मतभेद होने पर भी परोक्ष रूप से दूसरों की भलाई की ही बात करते हैं।[30] वस्तुतः यही सकारात्मक पद्धति है। इससे मतभिन्नता भी मतैकता में बदल जाती है और चित्त में व्यग्रता के स्थान पर शान्ति छा जाती है।

पैशुन्य अर्थात् चुगलखोरी करने की वृत्ति को भी अहितकर एवं अनुचित कहा गया है। सूत्रकृतांग में कहा गया है- **'जं छन्नं तं न वत्तव्वं'** अर्थात् किसी की भी गुप्त बात को प्रकट नहीं करना चाहिए।[31] आजकल दूसरों की गुप्त अर्थात् रहस्यमय बातों को उजागर करने की वृत्ति बढ़ती जा रही है। साथ ही श्रोता को भी ऐसी बातें सुनने में रस आता है। व्यावहारिक जीवन में व्यक्ति को निन्दा, आलोचना और अपयश का भय रहता है, इससे बचने के लिए वह अपनी गुप्त बातें छिपाकर रखने का प्रयास करता है। यह जरूरी नहीं कि ये गुप्त बातें हमेशा बड़े दुराचारों की ही द्योतक हों, अपितु कई बार यह खाने-पीने, सोने-उठने या घूमने-फिरने आदि की किसी विचित्र आदत से सम्बन्धित भी होती हैं। चूँकि व्यक्ति अपनी छवि खराब नहीं करना चाहता, अतः वह अपनी, अपने परिवार की या अपने कुटुम्ब की कितनी ही बातों को छिपाता है। परन्तु एक का छिपाया हुआ सत्य, दूसरा जान ही न सके, ऐसा सम्भव नहीं है। जाने-अनजाने में दूसरों की नज़र उस पर पड़ ही जाती है और भेद खुल जाता है। कई बार तो व्यक्ति के हाव-भाव एवं व्यवहार से भी यह प्रकट हो जाता है। बहुत-सी बार दूसरों से सहानुभूति या मदद प्राप्त करने के लिए भी व्यक्ति अपनी गुप्त बातें दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ऐसी दशा में भगवान् महावीर का स्पष्ट निर्देश है कि ऐसी गोपनीय बातें दूसरों को कहकर सुज्ञ व्यक्तियों को कान भरने का पाप नहीं करना चाहिए।[32] दशवैकालिक सूत्र में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि पीठ पीछे किसी की बुराई करना पीठ का मांस नोंचने के समान है।[33] अन्यत्र भी समझाते हुए कहा गया है कि 'कानों से बहुत-सी बातें सुनने को और आँखों से बहुत-सी बातें देखने को मिलती हैं, किन्तु ऐसी देखी-सुनी बातें लोगों को कहना कतई उचित नहीं है।[34]

आज **पारस्परिक-कलह** की वृत्ति भी एक चिन्तनीय विषय है। दो या अधिक व्यक्तियों की मतभिन्नता जब अपनी सीमा का उल्लंघन कर देती है, तो परस्पर अशिष्ट, असभ्य एवं अभिशप्त वचनों का आदान-प्रदान प्रारम्भ हो जाता है। यह वाचिक आदान-प्रदान ही 'कलह' कहलाता है। आज परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में सर्वत्र ही कलह का वातावरण छाया रहता है। प्रायः देखा जाता है कि थोड़े समय का कलह भी लम्बे समय तक व्यक्ति, परिवार और समाज के भावात्मक वायुमण्डल को विषाक्त बना देता है। इससे व्यक्ति कभी-कभी मानसिक और शारीरिक रोगों से ग्रस्त भी हो जाता है। सम्बन्धों का विच्छेद और संगठनों का विघटन होना, इन्हीं कलहों का दुष्परिणाम है। आज परिवार बिखर रहा है, समाज टूट रहा है और देश विभक्त हो रहा है- इसका प्रारम्भिक बिन्दु पारस्परिक कलह ही है। किन्तु जैनदृष्टि से यह कलहकारी प्रवृत्ति भी निषिद्ध है। यह स्व-पर दोनों के लिए अहितकर है।

जैनाचार्यों ने कलह के निवारण के लिए सरल, सटीक और समुचित समाधान भी दिया है और वह है- मताग्रही, कदाग्रही और दुराग्रही वृत्ति का त्याग करना। 'मेरा मत ही सच्चा है, शेष सब मिथ्या है' यह अहंकारयुक्त सोच कलहोत्पादक है, त्याज्य है। सूत्रकृतांग में स्पष्ट कहा है- 'जो अपने मत की प्रशंसा और दूसरों के मत की निन्दा करने में ही अपना पाण्डित्य दिखाते हैं, वे दुराग्रही संसार में भटकते रहते हैं।[35] यदि व्यक्ति स्याद्वाद का आश्रय लेकर परस्पर बोले, तो कलह उत्पन्न ही नहीं होगा। वहाँ विवाद नहीं, बल्कि स्वस्थ संवाद होगा, कलह नहीं, बल्कि अतुलनीय प्रेम होगा एवं खिन्नता नहीं, बल्कि अपूर्व प्रसन्नता छा जाएगी। इसके लिए आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझें और सदा स्याद्वाद से युक्त वचनों का ही प्रयोग करें।[36] सूत्रकृतांग में बुद्धिमान् व्यक्ति की विशिष्टता दर्शाते हुए कहा गया है कि 'वह कभी किसी से कलह नहीं करता, क्योंकि कलह से बहुत हानि होती है।[37] अतः वाचिक-विवाद से बचना चाहिए। आचारांग में कहा गया है कि 'कुछ लोग मामूली कहा-सुनी होने पर क्षुब्ध हो जाते हैं'[38] परन्तु यह उचित नहीं है। वस्तुतः यह शक्य नहीं है कि हम कानों में पड़ने वाले अच्छे या बुरे शब्द सुनें ही नहीं, अतः हमें चाहिए कि हम शब्दों का नहीं, अपितु शब्दों के प्रतिकार या प्रतिशोध रूप में जन्म लेने वाले राग-द्वेष का त्यागकर दें।[39] दुर्वचन सुनने पर भी हम न जलें अर्थात् क्रोध न करें।[40] हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम विग्रह बढ़ाने वाली बातें नहीं करें।[41] आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं- 'सज्जन पुरुष, दुर्जनों के निष्ठुर और कठोर वचनों को भी समभावपूर्वक सहन कर लेते हैं। यही कलह रूपी अग्नि को बुझाने का एकमात्र उपाय है।'[42]

सार रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्ति को स्व-पर हितकारी वचनों का ही प्रयोग करना चाहिए।

संदर्भ-

1. जैन भारती (पत्रिका), अगस्त, 2004, बोलो वचन विचार, पृ. 36
2. वही, पृ. 35
3. दशवैकालिकसूत्र, 9.3.7
4. आचारांगसूत्र, 2.1.1.6.2
5. सूत्रकृतांगसूत्र, 1.2.2.1
6. जैन भारती (पत्रिका), अगस्त, 2004, बोलो वचन विचार, पृ. 36
7. मनुस्मृति, 4.138
8. वृन्दसतसई, 100 (हिन्दीसूक्ति-संदर्भकोश, महो.चन्द्रप्रभसागर, पृ.174 से उद्धृत)
9. सूत्रकृतांगसूत्र, 1.9.27
10. अध्यात्मविद्या, आ.महाप्रज्ञ, पृ. 129
11. मनुस्मृति, 6.47
12. वही, 6.48
13. अध्यात्मविद्या, आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. 130
14. स्थानांगसूत्र, 4.4.596
15. वही, 4.4.596
16. नो तुच्छए नो य विकंथतिज्जा, सूत्रकृतांग, 1.14.21
17. बृहद्कल्पभाष्य, 6092
18. जैनभारती (पत्रिका), अगस्त-2004, बोलो वचन विचार, पृ. 35
19. सुभासियाए भासाए, सुकडेण य कम्मुणा। पज्जण्णे कालवासी वा, जसं तु अभिगच्छति।।
    -ऋषिभाषित, 33.4
20. वइज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं- दशवैकालिकसूत्र 7.56
21. जैनभारती (पत्रिका), अगस्त-2004, बोलो वचन विचार, पृ. 36
22. भासियव्वं हियं सच्चं- उत्तराध्ययनसूत्र, 9.27
23. जैन भारती (पत्रिका), अप्रेल-2003, शब्द : सृजन भी, संहार भी, पृ. 46
24. वही, दिसंबर-2002, भाषा और हिंसा, पृ. 26
25. सूत्रकृतांग सूत्र, 1.9.29
26. न यावि पन्ने परिहासं कुज्जा- सूत्रकृतांगसूत्र, 1.14.19
27. प्रश्नव्याकरणसूत्र, 2.2
28. अहऽसेयकरी अन्नेसिं इंखिणी- सूत्रकृतांगसूत्र, 1.2.2.1
29. भगवती आराधना, 373
30. न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तेसु कुप्पई। अप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कल्लाणं भासई।।
    - उत्तराध्ययनसूत्र, 11.12
31. सूत्रकृतांगसूत्र, 1.9.26
32. वीरप्रभु के वचन, रमणलाल ची. शाह, 1.3.38
33. पिट्ठिमंसं न खाइज्जा- दशवैकालिकसूत्र, 8.46

34. बहुं सुणेहि कन्नेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ। न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ।। - वही, 8.20
35. सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं। ते उ तत्थ विउस्सन्ति, संसारं ते विउस्सिया।।- सूत्रकृतांगसूत्र, 1.1.2.23
36. विभज्जवादं च वियागरेज्जा- वही, 1.14.22
37. अट्ठे परिहायती बहुं, अहिगरणं न करेज्ज पंडिए - वही, 1.2.2.9
38. वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा - आचारांगसूत्र, 1.5.4.2
39. वही, 2.15.130, पृ. 416
40. वुच्चमाणो न संजले - सूत्रकृतांगसूत्र 1.9.31
41. न य वुग्गाहियं कहं कहिज्जा- दशवैकालिकसूत्र, 10.10
42. दुज्जणवयण चडक्कं, णिट्ठुर कडुयं सहंति सप्पुरिसा -भावप्राभृत, 105

-जैन विज्ञान एवं प्रबन्धन संस्थान,
112, विक्रम टॉवर, सपना संगीता रोड, इन्दौर-452001 (मध्यप्रदेश)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनिजी

उद्धार

संसार का कार्य किया अनन्त बार,
इस बार तो धार,
निज चेतन का उद्धार।

विवेक

करें देह और देही में विवेक,
जीवन बन ही जाएगा नेक।

राग

राग है भयंकर विषधर नाग,
और धधकती प्रज्वलित आग,
इसीलिए तू ले स्वीकार
उपकारी विराग,
क्योंकि यही है सुन्दर-सुवासित बाग।

मानवभव

अनन्त बार मेरी आत्मा मोह से हारी,
अब इसको हराऊँ, इसी में है
मानव-भव की बलिहारी।

समाधि

समाधि टिकानी है अपणी,
तो न कर किसी की टीका-टिप्पणी।

भक्ति

भक्ति हो भरपूर, तो फिर
प्रभु नहीं तुझसे दूर।

आचरण

महावीर को मन से सुनो,
पर आचरण के लिए कुछ तो चुनो।

-संकलित

अध्यात्म

जैन आचार से स्वस्थ जीवन की प्राप्ति

श्री रणजीत सिंह कूमट, (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

तंदुरुस्ती हजार नियामत है। अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवन बोझ लगता है। स्वस्थ बने रहने के नियम हैं, जिनका पालन नितांत आवश्यक है। जैन आचार और तप के नियम स्वास्थ्य के नियमों के अनुकूल हैं स्वास्थ्य का अर्थ केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक और अध्यात्मिक स्वास्थ्य भी आवश्यक है। तीनों परस्पर जुड़े हैं और अन्योन्याश्रित हैं। अतः स्वास्थ्य का अर्थ तीनों प्रकार के स्वास्थ्य से है। जैन आचार के पालन से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य के नियमों का पालन स्वतः हो जाता है।

स्वस्थ का अर्थ

'स्वस्थ' शब्द का विग्रह कर के देखें तो बनता है 'स्व+स्थ' जिसका अर्थ होता है स्व में स्थित होना। जो स्व में स्थित है वह स्वस्थ कहलाता है। जो स्व में स्थित है वह प्राकृतिक रूप से नीरोग है; हमारे अधिकांश रोग स्व से बाहर स्थित होने से होते हैं। जगत् की वस्तुएँ और प्राणी स्व से बाहर हैं, जिनके प्रति आकर्षण और चिपकाव हमें भ्रमित, चकित और दुःखी करता है। बाहरी जगत् से विरक्ति हो अर्थात् चिपकाव न हो तो स्वास्थ्य स्वतः उपलब्ध है। जिसका बाहरी वस्तुओं से संग छूट गया उसका जीवन समस्त चिंताओं से मुक्त हो गया। जिसकी तृष्णा समाप्त हो गई और संतुष्टि को प्राप्त कर गया वह सांसारिक बंधनों से छूट गया। मानो वह मुक्त ही है। मुक्त व्यक्ति का आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य उच्च कोटि का ही होगा।

जैन आचार व तप

सर्वप्रथम जैन आचार और तप के प्रमुख नियमों पर नज़र डालें, फिर उनका प्रभाव स्वास्थ्य पर देखें तो बात स्वतः स्पष्ट हो जायेगी। जैन आचार में प्रमुख है श्रावक के 12 व्रत और 12 प्रकार के तप। वैसे ये दोनों नियम आध्यात्मिक विकास के लिए बनाये गए हैं, परन्तु इनका लाभ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी मिलता है जो एक प्रकार से अनुषंगिक (auxiliary) लाभ है।

श्रावक अर्थात् सद्गृहस्थ से अपेक्षा है कि वह बारह व्रतों का पालन करे। इनमें पाँच अणुव्रत, तीन गुण व्रत और चार शिक्षा व्रत कहलाते हैं। तप 12 प्रकार के हैं, उनमें से 6 बाह्य तप कहलाते हैं और 6 आंतरिक तप। इनका विस्तार से विवेचन कर यह देखेंगे कि किस

प्रकार ये नियम आध्यात्मिक विकास के साथ शारीरिक स्वास्थ्य का भी वर्द्धन करते हैं।

अणुव्रत

पाँच अणुव्रतों में सबसे पहला अणुव्रत है प्राणातिपात का त्याग, जिसका अर्थ है सब प्राणियों की हिंसा का त्याग। हिंसा में प्राणों के वध के अतिरिक्त प्राणी का उत्पीड़न, दमन, दासत्व का भी निषेध है। किसी भी प्राणी को तंग करना, परेशान करना, उसकी सीमा या बल से अधिक काम लेना भी हिंसा में शामिल होता है। अहिंसा का व्रत लेने वाला सर्वप्रथम अपने भोजन में शाकाहार का प्रयोग करेगा और जानवरों के मांस आदि का त्याग करेगा। शाकाहारी भोजन से व्यक्ति स्वस्थ रहता है और वह मांस-भक्षण से होने वाली बीमारियों से बच जाता है। मांसाहार हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज आदि रोगों की वृद्धि करता है। कोलोस्ट्रॉल, यूरिक एसिड आदि भी मांसाहार से बढ़ते हैं। अतः सात्त्विक भोजन स्वास्थ्य की प्राथमिक आवश्यकता है।

किसी भी प्राणी का उत्पीड़न या दमन हमारे मानसिक रोगों का कारण बनता है। प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। किसी भी व्यक्ति को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने पर वह हमारे प्रति विपरीत मानसिक प्रतिक्रिया करता है और उसका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष असर हमारी मानसिकता पर होता है और धीरे-धीरे हमारे स्वास्थ्य पर असर करता ही है। यदि हम किसी के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं तो वह हमारे प्रति अच्छी मानसिक प्रतिक्रिया करता है और वह हमको अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करता है। हमारे प्रति किसी की भी सकारात्मक प्रतिक्रिया हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है और नकारात्मक प्रतिक्रिया हानिकारक है। इस बात को ध्यान में रख कर ही यह प्रावधान किया गया है कि किसी को पीड़ित व परेशान न करें और लोगों को जितना सुखी कर सकें करें। जितना हम लोगों को सुखी करेंगे उनकी सकारात्मक मानसिक प्रतिक्रिया (Positive vibes) हमको सुखी व स्वस्थ बनायेंगी। इसके विपरीत नकारात्मक मानसिक प्रतिक्रिया (Negative vibes) हमें दुःखी व बीमार करेंगी।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सब प्राणियों की अनुभूति एक-सी होती है। जब इस बात को जीवन में उतारते हैं तो सब प्राणी हमें अपने समान लगते हैं और उनकी पीड़ा को स्वयं अनुभूत करते हैं और तब उनके प्रति करुणा का भाव प्रस्फुटित होने लगता है। प्राणियों के प्रति यह संवेदनशीलता हमारे हृदय को कोमल और करुणाशील बनाती है। ऐसा हृदय अंदर से प्राणियों के प्रति दयावान होने से किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करता, न इस प्रकार के भाव ही उसमें उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार प्राणातिपात के त्याग का नियम स्वतः पालन में आता है। जिसका हृदय कोमल है उसका शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य निश्चित ही उत्तम होगा और किसी भी प्रकार के रोग की आशंका निर्मूल है।

जिसने अहिंसा का पथ पकड़ लिया, उसने सब प्राणियों को अभय प्रदान कर दिया और स्वयं निर्वैर हो गया; अब उसकी किसी से दुश्मनी नहीं है, बल्कि सब प्राणी उसके मित्र हैं। जिसने सबको अभय प्रदान किया वह सब ओर से निर्भय ओर निर्वैर हो गया। भय स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु है। जिसको भय है वह निःशंक होकर सो नहीं सकता, घूम नहीं सकता और आशंकित हो अपनी सुरक्षा के उपायों में व्यस्त रहता है। जो हर वक्त आशंकित है वह स्वस्थ कैसे रह सकता है? बकरी को कितना ही चारा खिलाओ और उसके सामने यदि शेर खड़ा रहे तो बकरी कभी मोटी नहीं हो सकती। जो डरा हुआ है वह मरा हुआ ही है। वही स्वस्थ रह सकता है जो निःशंक और निर्भय है और ऐसा वही व्यक्ति हो सकता है जिसका कोई दुश्मन न हो, अर्थात् जो निर्वैर हो। अहिंसक व्यक्ति ही निर्वैर, निःशंक और निर्भय हो सकता है।

दूसरा अणुव्रत है मृषावाद अर्थात् झूठ बोलने का त्याग। यह नकारात्मक प्रस्तुति है, क्योंकि सकारात्मक रूप अर्थात् सत्य बोलना अपेक्षाकृत कठिन व अत्यधिक गहन है। व्यावहारिक रूप से दैनिक व्यापार व व्यवहार में झूठ न बोलें। इसका प्रभाव शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा पड़ता है। जो झूठ नहीं बोलता उसे डर नहीं लगता और जिसे डर नहीं लगता उसका मानसिक और शारीरिक संतुलन बना रहता है। झूठ बोलने पर पकड़े जाने का डर बना रहता है और झूठ को साबित करने के लिए और झूठ बोलने पर मजबूर होना पड़ता है। एक बार झूठ पकड़े जाने पर प्रामाणिकता गायब हो जाती है और लोग विश्वास करना बंद कर देते हैं। झूठ से व्यापार और व्यवहार में तो हानि होती ही है मानसिक चिंता भी बनी रहती है कि उसका झूठ पकड़ा न जाय। यदि राज्य नियमों के विपरीत झूठ बोला है तो दंडनीय अपराध भी बन सकता है। इन सब चिंताओं से मुक्त व्यक्ति ही स्वस्थ रह सकता है अतः झूठ न बोलना आध्यात्मिक गुण का विकास ही नहीं, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का आधार भी है।

सत्य बोलना व सत्य में निवास करना गहन आध्यात्मिक प्रक्रिया है। जिसके विचार, वाणी और कार्य में एकरूपता आ जाय, जीवन में सत्य उतर जाय और सत्य के अतिरिक्त जो भी असत् या नाशवान वस्तुएँ हैं उनका संग छूट जाय और अपने आप में समाहित हो जाय वह वास्तविक रूप से सत्य का जीवन ही जी रहा है। इसमें सत्य बोलना एक ऊपरी क्रिया है जो अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है, परन्तु सत्य को जीवन में उतारना और सत्य का जीवन जीना बहुत गहरी बात है। जो अपने आपमें समाहित हो गया वह स्व में स्थित हो गया और वह स्वतः ही 'स्व-स्थ' हो गया।

तीसरा अणुव्रत है अदत्तादान न लेना, जिसका अर्थ है बिना दी हुई वस्तु ग्रहण न करना। इस नियम के पालन से व्यवहार में वैयक्तिक व सामाजिक शांति और कानून से अभय तो

निहित है ही, शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ भी निहित हैं। पराई वस्तु की चोरी या अपहरण का विचार ही हमें कुविचार और कु-ध्यान की ओर ले जायेगा जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। चोरी करने पर पकड़े जाने का भय और पकड़ में आने पर दंड का भय और दंड का भुगतना शारीरिक और मानसिक कष्ट के कारण बनते हैं। निर्भय होकर जीने के लिए अदत्तादान न लेने के नियम का पालन आवश्यक है। अध्यात्मिक रूप से जब तक किसी की वस्तु पर नज़र है तो वह हमें बहिर्मुखी बनाएगी, आर्त्त और रौद्र ध्यान में ले जायेगी और धर्म ध्यान से विमुख करेगी। मन जब तक बाहर है, हम अंतर्मुखी बन ही नहीं सकते और अंतर्मुखी हुए बिना आत्मिक शांति अथवा समाधि की प्राप्ति एक छलना ही रहेगी।

चौथा अणुव्रत है मैथुन पर संयम, जिसका अर्थ है लैंगिक सम्भोग (Sexual urge) पर नियंत्रण अथवा संयम। गृहस्थ के लिए संभोग पर निषेध करने के स्थान पर अपने जीवन साथी (पति और पत्नी) के अतिरिक्त किसी अन्य से सम्भोग करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। सम्भोग में संयम तो स्वास्थ्य के लिए हमेशा ही लाभदायक है, परन्तु आज के युग में आई नई जानलेवा बीमारी एड्स (AIDS), जिसका अब तक कोई इलाज नहीं है, के निरोध व नियंत्रण के लिए अपने जीवन साथी के साथ संभोग को ही अनुमति दी गई है और यह हमारे नियम चौथे अणुव्रत में निर्धारित शब्दों ''स्वदार अथवा स्वभर्ता संतोषिए'' में निहित है। पुरुषों के लिए 'स्वदार' अर्थात् स्वयं की पत्नी और महिलाओं के लिए 'स्वभर्ता' अर्थात् स्वयं के पति के साथ ही गमन करना उचित व धार्मिक आचरण है। पर-स्त्री गमन मानसिक व कानूनी परेशानियाँ तो लाता ही है, पारिवारिक खून-खराबे का कारण भी बनता है। वेश्या-गमन परिवार में असंतोष व झगड़े तो उत्पन्न करता ही है, एड्स बीमारी का प्रमुख कारण भी है। संभोग से विरति या विरक्ति आध्यात्मिक रूप से अंतर्मुखी बनाती है, लेकिन संभोग में संयम भी स्वस्थ व अंतर्मुखी बनाने में सहायक होता है।

पाँचवां अणुव्रत है अपरिग्रह, जिसका अर्थ है धन-धान्य, सोना-चाँदी, जमीन-जायदाद, नौकर-चाकर, लोहा, अन्य धातु व संपत्ति के संग्रह पर नियंत्रण एवं उनमें मूर्च्छा अथवा अत्यधिक लगाव से बचना। धन संग्रह आज एक बीमारी बन गई है। जीवन-यापन के लिए धन-अर्जन आवश्यक है, परन्तु असीमित धन एकत्र करना और धनार्जन के लिए उचित व अनुचित उपाय का ध्यान न रखते हुए गैर कानूनी धंधों में भी लिप्त हो जाना एक बीमारी है। खुद के लिये तो समय है ही नहीं, परिवार व बच्चों के लिये भी नहीं है। अपरिग्रह का नियम निर्देश देता है कि धन-धान्य व सम्पत्ति पर एक सीमा लगायें और उससे अधिक संग्रह न करने का नियम लें। सीमा क्या हो यह निश्चित नहीं किया है। सीमा लगाने पर जोर दिया है। जब उस सीमा पर पहुँच जाएं तो अधिक धन का उपयोग समाज के निर्धन लोगों के

हितार्थ करें, जरूरतमंद की सहायता में करें। इससे समाज में समता व सरसता का वातावरण बनेगा और सहायता कर प्रसन्नता की अनुभूति होगी जो हमारे स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। जब धन संग्रह पर सीमा रहेगी तो अंधाधुंध धनार्जन की दौड़ से भी बचेंगे और अधिक समय स्वयं व परिवार को दे पाएँगे।

पाँच अणुव्रतों के अतिरिक्त तीन गुणव्रत व चार शिक्षाव्रत हैं और ये भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से स्वास्थ्य व अध्यात्म से सम्बन्धित हैं। भोग-उपभोग पर सीमा, अनर्थदण्ड न देना, विभिन्न दिशाओं में जाने की सीमा पर रोक स्वास्थ्य से सम्बन्धित हैं। अत्यधिक भोजन स्वास्थ्य के लिये हानिकर है, अतः भोजन पर नियंत्रण व उसमें विवेक अत्यन्त आवश्यक है। उपभोग की वस्तुओं को अनावश्यक रूप से एकत्र करना, अस्त्र-शस्त्र को एकत्र करना, व्यर्थ की कथा व बहस में पड़ना आदि अनर्थदण्ड अथवा अनावश्यक दण्ड है। इससे समय और धन तो व्यर्थ होता ही है, अकारण हिंसा, कलह और क्लेश होते है।

चार शिक्षा व्रतों में नियमित सामायिक, पौषध व देशावकासिक व्रत करना तथा अतिथि के लिए संविभाग करना अर्थात् अतिथि को यथोचित दान देने का प्रावधान है। ये व्रत अध्यात्म के पोषक तो हैं ही, स्वास्थ्य के दाता भी हैं। सामायिक से समता में रहने का प्रयास किया जाता है और जो व्यक्ति समता में रहता है वह स्व में स्थित है और स्व में स्थित होना ही स्वस्थ होना है। सामायिक हमें स्व में लाकर स्वस्थ बनाती है। उपवास व पौषध भी शरीर में अत्यधिक भोजन से उत्पन्न बीमारियों को दूर करने में सहायक होते हैं। अतिथि सत्कार हमारा मूल संस्कार ही नहीं जीवन को सुसंस्कृत बनाने व अतीव हर्षित होने का माध्यम है। जीवन में हर्ष और उल्लास स्वास्थ्य का अमोघ उपाय है।

संविभाग का अर्थ है जो कुछ हमारे पास है उसको सबमें समान रूप से विभाजित करें। यह समाजवाद की 2600 वर्ष पुरानी धारणा है जो समाज में समानता व सरसता लाने व वर्ग संघर्ष (class struggle) जिसकी मार्क्स ने कल्पना की उसे दूर रखने का उपाय था। समाज में सरसता सबके लिये हितकर व सुखकर है। इसी आधार पर यह श्लोक बना-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

अर्थात् सब प्राणी सुखी हों और सब संत कष्ट से मुक्त हों। यहाँ व्यक्तिगत सुख और स्वास्थ्य की कामना है। यदि सब अपने अर्जित धन का संविभाग करें और एक दूसरे के प्रति संवेदनशील हों तो पूरा समाज सुखी, स्वस्थ व आनन्दमय होगा। किसी में एक दूसरे के प्रति विद्वेष व रोष नहीं होगा, बल्कि सहकार और साहचर्य का भाव होगा। ऐसे सरस भाव जहाँ हों और राग-द्वेष से दूरी हो वहाँ रोग कैसे प्रवेश कर सकता है। सारे रोग हमारे द्वेष, रोष, ईर्ष्या, असंवेदनशीलता, असहनशीलता और खुदगर्जी से उत्पन्न होते हैं। **(क्रमशः)**

-सी-1701, लेक प्रिम रोज, लेक होम्स, फेज-IV, पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

English-Section

Advocacy of Intercultural Faith in Jain's Prism

Dr Samani Shashi Prajñā

(Continue from the Last issue)

The Concept of Interdependence:

As far as my knowledge goes, the main cause of ever increasing environmental crisis is due to the one-dimensional outlook of certain religious beliefs. As Islamic religious text Quran cites in that God (Allaha) has made this creation and whatever available on the earth are made for consumption of men.[6] The very parallel notion of establishing man as a superior being in this earth is found in the Christian's holy text Bible. Here it is said- "God created man in the image of himself in the image of God he created him male and female he created them." God blessed them saying to them, "Be truthful, multiply fill the earth and conquer it. Be masters of the fish of the sea, the birds of heaven and all living animals on the earth. God said- "See, I give you all the seed bearing plants that are 'upon' the whole earth and this shall be your food."[7]

The task of *anekantic* Intercultural faith is nothing but to attack on the irrelevant belief systems which are causing heavy environmental pollution leading the entire human race in stake. Due to this notion that man is a privileged supreme being in the world and he has all the rights to exploit the nature is main cause of ecological imbalance.

Today, we see our mother Earth is facing the problem of global warming, climate change, lacking resources due to over consumerism, ozone layer depletion, unethical science leading to experimental violence, decreasing earth planet, all these leading to environmental degradation are the sufficient facts highlighting the very human survival at stake, We increasingly realize that human alone cannot l' e on this planet. Humans have to live in the company

of non-humans in complementary relationship.

The right perspective of ecology is enshrined in the Jain motto of parasparopagraho Jīvānām, as quoted in the Tattvārtha Sūtra,[8] which highlights that all living organisms, however big or small, irrespective of the degree of their sensory perceptions, are bound together by mutual support and interdependence. They are and should remain in a harmonious and judicious balance with nature. As man and nature are so interwoven with each other into the social fabric that there is a common thread, which binds us all. The non-violent *anekāntic* life style can provide solution to the problem of environmental pollution.

Violence vs. non-vegetarian food style

When we look at present time of scenario, the percentage of meat eaters in west are more than the vegetarians. It is due to the one-dimensional perspective that animal flesh provide sufficient amount of protein for body. Due to this misbelief, innocent animals are killed everyday for the sake of pleasing the palate.

Francois Peroux, Director of the Institute of Mathematics and Economics in Paris, has suggested that 'if meat and alcohol consumption in the west were reduced by 50% , the grain that would become available would be enough to solve all hunger and mal-nutritional problems in the third world war.'[9] Moreover non-vegetarian food style is creating several major categories of diseases in the west including cardio-vascular, cerebrovascular, respiratory diseases and skin cancer.[10] Research declares that four lakh people die out of meat-eating every year through heart disease, colon cancer or by kidney failures.[11]

Not only this non-vegetarian life style is a cause of the continuing degradation of environment and depletion of life supporting natural resources but its reckless consumerism is the matter of serious concern. But ever increasing artificial needs of use of cosmetics, artificial show of furnished houses and offices, leading to violence of innocent beings. Animals are killed for experimentation and cutting of jungles is being carried on recklessly for meeting the demands of

the wooden raw material etc. are leading to climate change and huge environmental crisis.

Violence in Medical Science

The goal of medical science, after all, is to relieve people of pain and suffering and to reduce the sum total of human misery. But on the other hand, such manufacture of medicines are causing misery to other innocent creatures, is a matter of serious issue. The very concept of inter dependence of living beings as cited in the *Ācārańga Sūtra* paves us towards the truth that one cannot safeguard one's own existence by obliterating the existence of others.[12]

Modern scientific medicine is so vastly complicated that violence is simply unavoidable. There exists non-violent alternative health medicines which can solve not only our problems of human health but it will give remedy to the very survival of us which is dependent on and the survival of the other creatures. Today we have realized the value of life and bio-diversity and hence, we realize the importance of preservation of life, importance of "live and let live".

Jain's spiritual ecological thinking which is based on the principle of applied philosophy of *Anekānta* and *Nayavāda* and on the concept of *parasparopagraho jīvānāṁ* alone can revitalize the relations of humanity with its ecological co-partners viz. all other living species and the natural environment of air, water, land and space. It seeks to get rid of self-centric egoistic mode of thought and behaviour. If this principle of inter-relatedness is understood in depth of heart then the culture of non-violence for the better promotion of socially beneficial, peace-fostering and nature friendly way of life can be established on this earth.

The Concept of Universal Brotherhood (*vatsalya*)

It means affection towards the spiritual brethren. It is disinterested or dispassionate affection,[13] which involves a selfless love for the high ideal of emancipation. This concept of universal brotherhood has encouraged the Jaina layman to such an extent that most of the Jains are working for the cause of social service by

donating their small portion of income to the needy persons in the form of food, medicine, education, shelter, scholarships, etc. and helping those poor who are unable to cure the disease of cancer etc.

Jain laymen want that equal opportunities of education, earning and the like are received by every individual without any distinction of race, religion, sex and nationality.[14] Where there is love, there is no exploitation. To treat individuals as mere means is decried and denied in Jainism. Where there is *vātsalya*, all our dealing with others will be inspired by reverence, the role of force and domination will be minimized. Thus the quality of *vātsalya* is held in high regard by the Jain community.

Throughout India and abroad, Jaina community persons due to the *vātsalya* virtue sake, are very much affectionate in the circumstances of famine, drought, flood and donate with full heartedly for the good of the society. Each lay man sees around his residence if any neighbour or any person is deprived of food, shelter, education, and medicine and if at all he finds such fellow, he indirectly comes forward to share his financial assistance to him so that he can get basic necessities of life.

Although the similar concepts of social share is being discussed in Islamic religion on the name of Jakāt i.e. each Muslim should share 1/5th of his income to the needy person. Even in Christian religion too, such injections for social service is found. But as far as Jain concept of universal brotherhood is concerned, it has some deeper meaning rather than mere helping the needy. But it has highest implication that layman considers others hunger and poverty as own, as he accepts the equality of souls. He not only comes forward for help but he also treats others human, never tries to exploit the workers working under him and never indulges in malpractices of adulteration etc. This kind of *Vedic* concept of *vasudhaiva kutumbakam* i.e. we the children of the world are a single family. This universal view of brotherhood and the concept of single global family if brought on to the earth, the problem of economic inequality,

exploitation, political violence, racial-religious riots, etc. can be eradicated. The dream of Gandhian stateless state will come true on the earth. So *Anekāntic* perspective breaks the barriers of various belief systems and comes forward for Intercultural faith.

Conclusion

Anekāntvāda and *Nayavāda* puts a healing touch at the root of human psyche and tries to stop the war of beliefs. It makes all absolutes in the field of thought quite irrelevant and naive, imparts maturity to the thought process and supplies flexibility and originality to human mind. If the mankind will properly understand and adopt this doctrine of *nayavāda* it will make us realize that real revolution was not the French or the Russian; the real revolution was the one, which taught the man to develop his power of understanding from all possible aspects.

References:

6. Quran, verse, 2.4.9
7. The Jerusalem Bible, 1.22,23.
8. Tattvārtha Sūtra of Umasvati,/Umasvami, English translation by Nathmal Tatia, verse, 5.21.
9. Fred Eppsteever(ed.) "Fourteen Guidelines for Engaged Buddhism", Delhi, 1997, p. 43.
10. Legett, Jeremy (ed.)- Global Warming, Oxford University Press, p.150.
11. Meneka Gandhi- Head and Tails, The Other India Press, Mapusa Goa, 1994, p.7.
12. Ācārānga Bhashyam-(ed.) by Acharya Mahāprajña. verse, 1.5.5.5.
13. Pañcādhyāyī: II, Verse 806
14. Narendra Bhanawat and Prem Suman Jain (ed.), Mahavira and His Relevance in Modern Times, p.85.

Bibliography

Original Texts

Ācārānga Bhashyam (ed.) by Acharya Mahāprajña. with text, Sanskrit Commentary, Hindi translation, comparative notes, topics in text and commentary and various appendices. Jain Vishva Bharati Institure,Ladnun, 1994

Tattvārtha Sūtra of Umasvati,/Umasvami, English translation by Nathmal Tatia under the title 'That which is' with the combined commentaries of

Umaswati/Umasvami, pujyapada and siddhasena gani, collins publications, America, 1994. verse, 5.21.

Uttarādhyayana Sūtra. Ed. Muni Mishrimalji Maharaj. Trans. Muni Rajendra. Beawar : Āgam Prakāshan Samiti, 1991.

Quran, 1 The Jerusalem Bible,

Secondary Sources

Christopher Key Chapple (ed.), Jainism and Ecology, Cambridge : Harvard University Press, 2002

Bhanawat Narendra and Prem Suman Jain (ed.), Bhagwan Mahavira and His Relevance in Modern Times, Bikaner : Akhil Bharata-Varshīya Sādhumārgī Jain Sangha, 1976.

Radhakrishnan, Our Heritage

Nemichandra Śāstrī, Viśva Śānti aur Jaina Dharma.

Thich Nhat Hanh, Inter Being : Fourteen Guidelines for Engaged Buddhism, ed. by Fred Eppsteever, Delhi, 1997

Legett, Jeremy (ed.), Global Warming, Oxford University Press, Oxford, 1990,

Meneka Gandhi, Head and Tails, The Other India Press, Mapusa Goa, 1994.

Nemichandra Jain, Bekasūr Prāṇiyo ke khun se sane hamāre ye barbar śoka,

Rajiv K. Sinha, Development without Destruction, Environmentalist Publisher, Jaipur, 1994

-Asstt. Prof. in Deptt. of Jainology Comparative Philosophy & Religion, Jain Vishva Bharati University, Ladnun (Raj.)

अनुकरणीय उदाहरण

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उपाध्यक्ष गुरुभक्त श्रावकरत्न श्री पारसमल जी चोरडिया, उज्जैन वालों ने अपनी सुपौत्री के विवाह-दिवस का शुभारम्भ प्रातःकालीन सामूहिक सामायिक-साधना से किया। वर एवं वधू दोनों पक्षों के लगभग 140 लोगों ने सामायिक-साधना की। इससे वातावरण सौहार्दमय बन गया। विवाह समारोह में सचित्त फूलों एवं जमीकंद का प्रयोग पूर्णतः वर्जित रहा।

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा संघ कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाशचन्द जी सालेचा को संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्रमों और गतिविधियों के समन्वित रूप से प्रचार-प्रसार एवं प्रबन्धन हेतु 'मुख्य प्रबन्धक (प्रचार-प्रसार एवं प्रशासन)' नियुक्त किया गया है। उनके सम्पर्क सूत्र- 09414126279

-आनन्द चौपड़ा, संघ महामंत्री

अध्यात्म-व्यवहार

सापेक्ष सुख एवं वास्तविक सुख

साध्वी युगल निधि-कृपा

ज़िन्दगी के प्रथम क्षण से लेकर आखिरी क्षण तक और जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य एक ही इच्छा रखता है कि मेरा जीवन स्वर्ग बने, सुवासमय बने और पवित्रता की प्रतिमा बने। चाह के अनुसार हर इन्सान राह ढूँढता है, लेकिन विडंबना यह है कि जो जीवन स्वर्ग के समान होना चाहिए था वह उसे नरक सा महसूस हो रहा है। यहाँ तक कि कुछ लोगों को अपने जीवन से ऊब पैदा हो गई है। राग-द्वेष की दुर्गन्ध के कारण ज़िन्दगी बोरडम सिद्ध हो रही है। अतः वे कहते हैं, हमें जीवन घसीटना पड़ रहा है अर्थात् उनके लिए जीवन एक बोझ है, साँसों का खजाना लुटाना मात्र है। ऐसे में वे जीते नहीं, सिर्फ उम्र को पीते हैं।

इसी कारण परम ज्ञानी पुरुष कहते हैं- अगर आप चाहो सुख और मिले दुःख तो जानना आपके जीवन-प्रबन्धन की योजना में कहीं गड़बड़ है या मूल में कोई भूल है। उसी भूल को खोजना है और सुधारना भी है। हालाँकि हर इन्सान अपने जीवन का मास्टर प्लान बहुत सावधानी से और सोच समझकर बनाता है तथापि भूलें क्यों रह जाती हैं, इसका कारण जानना होगा।

इसी संदर्भ में भगवान महावीर से उनके शिष्य गौतम स्वामी ने पूछा, 'भंते! जिस संसार में हमने जन्म लिया है वह संसार कैसा है? भगवान ने फरमाया-'**अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तुणो।**' अर्थात् यह संसार दुःखमय है, जहाँ प्राणी दिन-रात कष्ट पाते हैं। अतः संसार का दूसरा नाम दुःख है। इसे दुःखालय भी कहा गया है। यहाँ दुःख ही मिल सकता है। दुःखालय में बैठकर सुख की कामना करना ऐसा है जैसे मेडीकल स्टोर में चावल या चीनी की मांग करना। सच्चाई यह है, सुख संसार में नहीं है। तथापि आश्चर्य है, इस दुःखमय संसार को इन्सान छोड़ना क्यों नहीं चाहता? कारण स्पष्ट है, इन्सान के मन में सुख को लेकर तीन भ्रान्तियाँ हैं।

इस संसार में कभी तो सुख मिलेगा यह पहली भ्रान्ति है। वह सोचता है, मैंने लाइफ की प्लानिंग ऐसे सेट कर ली है कि चालीस नहीं तो पचास वर्ष पार करने के बाद तो मुझे सुख अवश्य मिलेगा। यूँ उम्र के साथ आशा भी बलवान होती है।

दूसरी भ्रान्ति है, कहीं तो सुख मिलेगा। घर में नहीं मिला तो ऑफिस में मिलेगा। स्वदेश में नहीं मिला तो विदेश में मिलेगा। अपनों से नहीं मिला तो पराये से मिलेगा। चूँकि

उम्मीद पर दुनिया कायम है।

तीसरी भ्रान्ति है, किसी से तो सुख मिलेगा। पति या पत्नी से नहीं मिला तो बेटे से मिलेगा। अमुक वस्तुएँ मेरे पास होंगी तो मैं 'सुख' नगरी का राजा बनूँगा या अमुक टारगेट सफल हो जाए तो सुख मिलेगा।

वस्तुतः संसार में सुख कम और दुःख ज्यादा है, मज़ा कम एवं सज़ा ज्यादा है, मौज़ कम तथा मौत ज्यादा है। यहाँ सुख चार हैं तो दुःख हजार हैं। इसलिए संसार में रहते हुए सुख का गारंटी कार्ड सभी लेना चाहते हैं। आपके मन में प्रश्न होगा, जब संसार में सुख मिल नहीं सकता तो सुख की गारंटी कार्ड का क्या मतलब है? इसके लिए हमें सुख की वास्तविकता को जानना होगा।

कुछ लोग संसार को दुःखमय नहीं मानते, क्योंकि उन लोगों ने कभी दुःख को झेला नहीं, इसलिए उनका दुःख से परिचय नहीं है। उनका कहना है, हम सुखपूर्वक जीते हैं। इसलिए जानना होगा वे किसमें सुख मानते हैं, उनके सुख की परिभाषा क्या है?

जिस सुख को प्राप्त करने के लिए आज इन्सान दिन-रात दौड़ रहा है तथा जिसे सुख समझता है वह रिलेटिव (सापेक्ष) सुख है जिसे अभिप्राय या मान्यता का सुख भी कहा जाता है। हमें इस रिलेटिव सुख की गहराई को समझना होगा।

सबसे पहले इतना निश्चित रूप से जान लो कि सापेक्ष सुख अस्थायी है, पराधीन है और इसके पीछे निश्चित रूप से दुःख आता है। चूँकि यह सुख दुःखालय के पते पर ही पोस्ट होता है। इस अस्थायी सुख के पीछे काल का पहिया लगा होने से उसका अंत निश्चित है। इसलिए सापेक्ष सुख का हार्द समझाते हुए ज्ञानी कहते हैं, जिस सुख के पीछे लालसा हो और जिसे पाने के बाद भी इच्छा शांत न होती हो वह क्षणिक सुख है। इस सुख को भलीभाँति पहचानने हेतु हमें 7 S को जानना होगा।

S-1. स्वास्थ्य का सुख– यह पहला सापेक्ष सुख है। मेरा शरीर स्वस्थ रहे, ऐसा सभी चाहते हैं, किन्तु शरीर का सुख इतना कमजोर है कि खाने में जरा सी गड़बड़ हो जाए या मौसम में खराबी आ जाए तो स्वास्थ्य का सुख कपूर की भाँति उड़ जाता है।

S-1 कहता है, जीवन का उपयोग तभी तक है जब तक स्वास्थ्य सुरक्षित है। पल-पल परिवर्तनशील शरीर से संबंधित स्वास्थ्य का सुख स्थायी कैसे हो सकता है? यह जान लेने पर भी हम प्राणांत की घड़ी तक स्वास्थ्य सुख की चाहना रखते हैं।

S-1 सुख को टिकाने हेतु इन्सान अनेक तकनीक अपनाता है। आज स्थिति यह है कि स्वास्थ्य को लेकर प्रत्येक व्यक्ति इस हद तक शोध करता है मानो वह उसका डॉक्टर

बनना चाहता है। इतना ही नहीं शरीर के खातिर वह अनेक तरह की हिंसाजन्य दवाइयाँ और पूरक आहार लेने में भी नहीं चूकता। इस प्रकार अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक इन्सान अनेक तरह के उपचार से गुजरता है, किन्तु इन सब के पीछे वह भूल जाता है कि स्वास्थ्य का सुख रिलेटिव है, स्थायी नहीं है।

याद रखना, शरीर में 16 महारोग हैं और पाँच करोड़ अड़सठ लाख निन्यानवें हजार पाँच सौ पिच्यासी (5,68,99,585) छोटे-छोटे रोग समाये हुए हैं। इसलिए यह शरीर कुछ भी सहने में असमर्थ है। शरीर का तापमान यदि सामान्य से कम हो जाए तो गिर पड़ने की स्थिति और ज्यादा हो जाए तो अनेक मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। सचमुच! यह शरीर कितना कमजोर है।

आप्त पुरुष कहते हैं, शरीर की वास्तविकता को अवश्य जान लेना कि यह सुख क्षणिक है, शाश्वत नहीं है। अस्थायी है, संपूर्ण नहीं है। ऐसा चिन्तन करने से सुन्दर शरीर के साथ संपूर्ण स्वास्थ्य का सुख मिलने पर भी अहंकार नहीं आएगा और यह सुख जब न मिले तो मन में शिकायतें भी नहीं उभरेंगी। अतः ज़िन्दगी के हर मोड़ पर याद रखना, स्वास्थ्य का सुख सापेक्ष सुख है।

S-2. सम्पत्ति का सुख– यह दूसरा सापेक्ष सुख है। हर इन्सान चाहता है मेरे जीवन में धन संपत्ति हो। यह सच है, बिना पैसे के जीवन नहीं चल सकता। अतः संपत्ति का सुख जीवन में बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है। यह सुख इन्सान के मन को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य में दस प्राण होते हैं, परन्तु आजकल पैसा ग्यारहवाँ प्राण है, जिसके अभाव में इन्सान दस प्राण होते हुए भी निष्प्राण है। कहना होगा, धन-दौलत मात्र साधन नहीं ऑक्सीजन है। इसके बिना दस प्राणों का वेंटीलेटर भी मानो फेल हो जाता है।

कहते हैं, पुराने जमाने में राजा के प्राण तोते में बंद होते थे, ऐसे ही इन्सान के प्राण आज पैसे में अटके हुए हैं। चूँकि कलियुग में सबके जीवन का एक ही स्वर है, पैसा। किन्तु सत्य यह है, धन भी सापेक्ष सुख देता है। चाहे जितनी दौड़ धूप कर लो या कमरतोड़ मशक्कत कर लो, परन्तु यह विशेष ज्ञातव्य है, यह सुख अल्पजीवी है, पुण्य के अधीन है और एक निश्चित अवधि तक रहता है।

याद रहे, पैसा मेहमान की भाँति है, जो बिना निमंत्रण के नहीं आता और हमेशा के लिए नहीं रहता। उसके जाने की संभावना सदाकाल जीवित रहती है। अतः धन का न ममत्व करना और न अभिमान, बल्कि सदुपयोग करना चाहिए।

S-3. सुविधा का सुख– यह तीसरा सापेक्ष सुख है। सुख केवल संपत्ति से नहीं मिलता, बल्कि संपत्ति द्वारा जुटाई गई सुविधा से मिलता है। हर व्यक्ति चाहता है, मेरे घर में गाड़ी, फर्नीचर, एयर कंडीशनर, कूलर, कम्प्यूटर, नौकर–चाकर आदि की जो सुविधाएँ हैं वे सदा बनी रहें और इसका लेवल भी सदा बढ़ता रहे, ताकि जीवन आसानी से जिया जा सके। कुदरत का कानून कहता है, यहाँ हर सुविधा अपूर्ण है। इसलिए जितनी सुविधाएँ बढ़ी हैं उतनी दुविधाएँ भी बढ़ी हैं। जितनी लालसा बढ़ती है उतना ही तनाव भी बढ़ता है। ध्यान रहे, सुविधाओं का जितना विकास हुआ है उतना ही क्षमता का ह्रास हुआ है। अतः ध्यान देना, सुविधाएँ भी रिलेटिव सुख मात्र हैं वास्तविक नहीं।

S-4. संबंधों का सुख– यह चौथा सापेक्ष सुख है। यह संसार नानाविध दुःखों से भरा होने के कारण यहाँ सर्वत्र दुःख ही दुःख है। यहाँ कोई किसी का नहीं है। न कोई शरण दे सकता है और न सहयोग देने में समर्थ है।

संबंधों का सुख जिसके पास है वे इस बात को नहीं मानते। वे मानते, वे सोचते हैं, मेरा संबंध तो सभी के साथ बड़ा अच्छा है। एक फोन करो तो दस लोग इकट्ठे हो जाएं, ऐसे संबंध मैंने बना रखे हैं। इस प्रकार अपने द्वारा बनाये गये इन संबंधों से जब उसे सुख मिलता है तो वह मान लेता है, मैं सुख के अम्बार पर बैठा हूँ।

यह सच है, जो संबंध बनते हैं या बनाये जाते हैं, वे ही एक दिन बिगड़ते हैं। कहा भी है, कुछ लोग संबंधों का जंगल बनाते हैं तो कुछ लोग संबंधों की बगिया बना लेते हैं। संबंधों का जंगल बनाने वाले सदा उलझे रहते हैं। चूँकि उन्हें संवेदना नहीं मिलती। संबंधों की बगीची बनाने वाले खुद भी सुवासित रहते हैं और दूसरों को भी सुगंध बांटते हैं।

खयाल रहे, संबंध सेल्फ डिजाल्विंग स्टीचेस (Self Dissolving Stitches) के समान हैं जो निर्धारित अवधि के बाद स्वतः गल जाते हैं। चाहे कितने ही प्रगाढ़ रेशमी धागे से आप संबंधों के वस्त्र में टांके लगा लो, तो भी उसकी अंतिम नियति यही है। ध्यान रहे, सेल्फ डिजाल्विंग टांके शरीर को जोड़कर गलते हैं, किन्तु संबंधों के टाँके मन को फाड़कर गलते हैं।

याद रखना, अन्ततः कोई भी सम्बन्ध वास्तविक नहीं है और ये सब क्षणिक सुख देने वाले हैं। कभी सोचा! जितने भी संबंध हैं वे सब जन्म लेने के बाद ही जुड़े हैं और इस दुनिया से विदा होने के पूर्व समाप्त हो जाएँगे। इसलिए संबंधों का सुख भी अस्थायी है, सदा रहने वाला नहीं है।

S-5. सम्मान का सुख– यह पाँचवां सापेक्ष सुख है। हर प्राणी को सम्मान प्रिय है। अगर किसी को सम्मान न मिले तो वह अपनी प्रतिभा को मिट्टी में मिला देता है। प्रतिभा की

यही नियति है, वह सदा सम्मान से निखरती है। कहते हैं, जीवन की नौका को अगर सम्मान और प्रतिष्ठा का बंदरगाह न मिले तो वह उदासी के टापू पर जा लगती है।

सम्मान का पोषण मिले तो हर इन्सान खुशी की ज़िन्दगी जीता है। याद रखना, यह प्रतिष्ठा का सुख भी टिकाऊ नहीं है, अस्थायी है, चेंजेबल है, बदलने वाला है। दस वर्ष पहले आपको जितना आदर मिल रहा था जरूरी नहीं आज भी आपको उतना सम्मान मिले और आज जो सत्कार मिल रहा है वह भी शायद पाँच साल के बाद न मिले। चूँकि सम्मान की स्थितियाँ बदलती रहती हैं।

यह पूर्णतः स्पष्ट है, किसी भी इन्सान को हर बार सम्मान का सुख नहीं मिलता और मिले भी तो डिग्री का अन्तर पड़ जाता है। चूँकि आज जो लोग आपके सम्मान में खुशी से तालियाँ बजा रहे हैं वे ही कल गालियाँ भी दे सकते हैं। याद रखना, प्रतिष्ठा का सुंदर पंछी जीवन की डाल पर थोड़ी देर चहचहाता है और फिर उड़ जाता है। चूँकि प्रतिष्ठा का अर्जन जितना दुरूह है उससे अनेक गुणा दुष्कर है उसे हजम करना या टिकाये रखना।

यह हकीकत है, जिसे सम्मान प्रिय होगा उसे अपमान अप्रिय होगा। फलतः अपमान का दुःख भी ज्यादा महसूस होगा। इस तरह सम्मान का सुख भी रिलेटिव है, ढलने वाला है तभी तो वह दुःख में बदल जाता है।

S-6. सौभाग्य का सुख– यह छठा सापेक्ष सुख है। व्यक्ति सोचता है, मैं सौभाग्यशाली हूँ, क्योंकि मेरी पूरी ज़िन्दगी सौभाग्य की मीठी छांव में गुजरी है। जब तक पढ़ाई का दौर चला, मैं बड़ा भाग्यशाली रहा। व्यापार किया तो वहाँ भी मैंने अपने भाग्य का प्रभाव देखा। ज़िन्दगी में जो भी छोटे-बड़े सुख मिले हैं वे सौभाग्य के कारण ही मिले हैं। इस प्रकार जिसने सौभाग्य का फल चखा हो वह चाहता है मैं सदा सौभाग्यशाली बना रहूँ। अर्थात् मेरे जीवन सिक्के के दोनों ओर सौभाग्य ही खुदा हो ताकि दुनिया के बाजार में जब भी सिक्का उछले तो विजय की स्थिति (win position) ही बनी रहे।

सभी जानते हैं, सौभाग्य भी एक दिन दुर्भाग्य में बदल जाता है। चूँकि भाग्य हवा की भाँति चंचल है, वह बर्फ की तरह हर पल पिघलता है। इस भाग्य का घमंड करने जैसा नहीं है। अगर भाग्य के बर्फ पर नई परत नहीं जमाई जाएगी तो उसकी अंतिम लेयर पिघल कर कब समाप्त हो जाएगी, पता भी नहीं चलेगा। कुल मिलाकर सौभाग्य को सदा टिकाये रखना नामुमकिन होने से यह सुख भी स्थायी नहीं है।

S-7. सद्गति का सुख– यह सातवाँ सापेक्ष सुख है। सद्गति यानी अच्छी या श्रेष्ठ गति का मिलना। जहाँ जन्म से ही सुसंस्कार मिलते हैं। इस बार हम मनुष्य बने हैं, किन्तु सदा मनुष्य नहीं बने रहेंगे, यहाँ के बाद कहाँ पैदा होंगे मालूम नहीं। इसलिए यह भी सापेक्ष सुख

है, वास्तविक नहीं।

सार यह है कि जो सुख आज हमें 7 S के रूप में मिला है, वह सदा रहने वाला नहीं है चूँकि यह फिसलू सुख है। कुछ सुख मौत आने से पहले विदा हो जाते हैं तो कुछ मौत के साथ समाप्त हो जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि संसार के सारे सुख चपल एवं विनाशी हैं। आत्मा अखंड एवं अविनाशी है। इसलिए आत्मसुख जो वास्तविक और स्थायी है, उसे जीवन का लक्ष्य बनाओ।

मनुष्य जन्म की सार्थकता शाश्वत सुख की प्राप्ति में है। शाश्वत सुख = रिअल सुख या स्थायी सुख। प्रश्न होगा, ऐसा सुख हमें कैसे मिल सकता है? खयाल रहे, इस सुख का संबंध न वस्तु से है न व्यक्ति से है। न परिस्थितियों से है न घटना से है और न ही यह सुख शरीर से संबंधित है। इस अनन्त सुख का सीधा संबंध आत्मा से है।

भगवान महावीर कहते हैं, अनन्त सुख सबकी आत्मा में रहा हुआ है। इसलिए आत्मा में रहे हुए गुणों को जितना विकसित करेंगे उतना हमें आत्मिक सुख का एहसास होगा। जिस सुख के पीछे दुःख नहीं आता उसे वास्तविक सुख कहते हैं। इस सुख में कोई परिवर्तन नहीं है, इसका कभी अंत नहीं होता और यह सुख एक बार मिल जाए तो हमेशा के लिए रहता है।

स्पष्ट है, इस आत्मिक सुख की तीन विशेषताएँ हैं- 1. आत्मिक सुख स्थायी है, 2. आत्मिक सुख स्वाधीन है, 3. आत्मिक सुख शुद्ध है।

खयाल रहे, यह सुख पुण्य पर आधारित नहीं है, इसे पुरुषार्थ द्वारा प्रकट किया जा सकता है। जितना हमारा पुरुषार्थ जागेगा उतने गुण हमारे भीतर प्रकट होंगे। अर्थात् आत्मिक गुणों का ईंधन सम्यक् पुरुषार्थ है।

जैसे एक व्यक्ति में उदारता का गुण है तो वह अपनी संगृहीत पूँजी अनाथ अपंगों की सेवा में लगाता है। इस तरह दान के पुरुषार्थ से उसका उदारता का गुण सदा विकसित रहता है। ऐसा पुरुषार्थ प्रज्वलित रहा तो आत्मिक गुणों की मशाल सदा ज्योतिर्मय रहेगी वर्ना तो मन की आकांक्षाएँ अनंत हैं। किसी के पास एक हजार का सुख है तो किसी के पास सौ करोड़ का सुख है। लालसा और स्वार्थ के कारण यदि वह अपने उदारता के गुण को विकसित नहीं करेगा तो आत्मिक सुख को कैसे प्रकट करेगा?

ज्ञातव्य है, आत्मा में रहे हुए क्षमा, कोमलता, विनम्रता, उदारता, सहजता, निस्पृहता, सरलता आदि अनन्त गुण मोह, लोभ, क्रोध, अहंकार, कपट एवं राग-द्वेष से ढके हुए हैं। इन गुणों को जागृत करने का पुरुषार्थ करना ही सच्चे सुख को प्रकट करने की

विधि है।

एक गुण को प्रकट करने पर भी सुख मिलता है तो जिस दिन समस्त आत्मगुणों को प्रकट करने का पुरुषार्थ संपूर्ण रूप से सफल होगा उस दिन जो सुख मिलेगा वह वास्तविक सुख होगा। जिसे हम आत्मिक सुख, अनंत सुख या मोक्ष का सुख कहते हैं।

गुरु पूर्णिमा

ओ! हीरा गुरु! शत-शत प्रणाम!!!

श्रीमती तृप्ति गुन्देचा

ओ! हीरा गुरु! शत-शत प्रणाम।।

ओ! राजस्थानी रत्न! दिखा रहे तुम सुन्दर राह नई,
तम दूर हटाया दिनकर ज्यों, तव ज्योति जगत में फैल गई।
भीषण तूफानों से लड़कर, संदेश सुनाया नगर ग्राम।।
ओ! हीरा गुरु.....।।1।।

खेला विपत्तियों से डटकर, अपना सा मुँह ले स्वयं चली,
प्रतिक्षण देता है जीवन संदेश, हे आदर्शों के आत्मबली,
तेरे नयनों का दिव्य-तेज आकर्षित कर लेता प्रकाम।।
ओ! हीरा गुरु.....।।2।।

तुझ सा निस्पृह विरला ही, मिल सकता इस भूमंडल पर,
निर्भयता प्रकटित करती है जीवन घटनावलियाँ सुन्दर,
गुरुहस्ती के पट्टधर हीरा, संत-सतियों के 'मान' महान्।।
ओ! हीरा गुरु.....।।3।।

यह गूँज रहा गंभीर घोष, नव जोश सदा दिल में भरता,
निद्रित चिर मूर्च्छित मानस में, चेतनता संचारित करता,
'तृप्ति' हृदयालय में महावीर के, संग स्वर्णांकित तेरा अमर नाम।।
ओ! हीरा गुरु.....।।4।।

-धर्मपत्नी श्री अनिलजी गुन्देचा,
11, व्हाइट हाउस, वी.डी.नगर, पाली-306401 (राज.)

कविता

जैनागम - अष्टक

श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'

जैनागम का जन-मानस में, चर्यागत उपहास देखिए,
कल की बातें छोड़ो बन्धु! आज निरा परिहास देखिए।
बीते कल की बातों से क्या, हासिल होगा ज़रा सोचिए,
ऋषभदेव से महावीर तक, की चर्या अब कहाँ? देखिए।।1।।

जैनागम अब अलमारी में, केवल सजने को छपते हैं,
उनमें क्या है? किसको फुर्सत, नहीं खोज की चाह देखिए।
कुछ लोगों में केवल इतनी, फुर्सत का व्यवहार देखिए,
आते हैं मन्दिर में लेकिन, स्वाध्याय को नहीं देखिए।।2।।

जैनागम पढ़ते हैं उनमें, भी सुधार कुछ नहीं देखिए,
केवल पढ़ने को पढ़ते हैं, नहीं तनिक व्यवहार देखिए।
पंच महाव्रत, पंच अणुव्रत, देखो सब हो गए खोखले,
अनुपालनकर्त्ता को कोरी, लाग लपेटे हुए देखिए।।3।।

जैनागम पढ़ने वालों को, नहीं होश क्या पढ़ जाते हैं,
ऐसे भी हैं स्वाध्यायी जो, पंक्ति पन्ने गिन लेते हैं।
रामायण हो गई खत्म पर, राम कौन था(?) रावण कैसा(?),
नहीं ध्यान रखते ऐसों का, कैसे हो उद्धार(?) देखिए।।4।।

जैनागम की आड़ बढ़ रही, दूध हो गया खून बराबर,
बछड़ों को भूखा रख मारें, ऐसे ग्वाले आज देखिए।
हिंस्य वस्तुएँ विविध रूप की, जाने-अनजाने खाते हैं,
जैनी खाते बिस्कुट-पेस्ट्री, चमड़ा पहने खूब देखिए।।5।।

जैनागम के बारे में क्या, कहें सुने? कुछ तथ्य देखिए,
'धर्म नहीं धार्मिक बिना' का, आज बढ़ा व्यवहार देखिए।
जैनागम-चिन्तनशीलों का, मैं 'निर्लिप्त' आह्वान कर रहा,
मौलिकता को रखो बचाकर, परिपालन संभाव्य देखिए।।6।।

-पी.डब्ल्यू.डी. क्वार्टर नं.52, समद रोड़, अलीगढ़-202001 (उत्तरप्रदेश)

धारावाहिक

लगन की वेला (5)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

अरुण के भाव

कल्यार्णी सदैव प्रवचन में जाती थी। मुनिराज धर्मप्रियजी की धर्मकथा सचमुच में ही धर्मकथा थी। उनके प्रवचन मात्र लोक-रंजन के लिये नहीं होते थे। उनके प्रवचन संवेग-रंग से भरपूर थे। लोगों को जीवन का लक्ष्य समझ में आये, तत्त्वज्ञान की रुचि जाग्रत हो, पापों से भय हो, धर्म-साधना की रुचि हो, कर्म-फल श्रद्धा जागे, उपासना का स्वरूप समझ में आये, मोक्ष-पुरुषार्थ में प्रवृत्ति हो आदि भावों को लक्ष्य में रखकर ही वे प्रवचन देते थे। इसलिये उनके प्रवचनों से बहुत कुछ सीखने को मिलता था। तत्त्वज्ञान के प्रेमीजन उनके धर्मोपदेश को सुनने के लिये समय से पहले ही समुपस्थित हो जाते थे। कल्याणी भी उनमें से एक थी। वह घर पर आकर प्रवचन की कई बातों की नोंध करती थी।

आज प्रवचन का विषय कुछ विशेष गम्भीर था और कल्याणी के लिये बिल्कुल नया था। अतः आज नोंध करने में कठिनाई हो रही थी। परन्तु उसने विषय को याद कर-करके, अधिकांश बातें नोंध कर लीं। तभी "भगिनी-भगिनी!" पुकारते हुए अरुण ने कक्ष में प्रवेश किया।

कल्याणी का ध्यान भंग हुआ। अतः उसे अरुण का पुकारना अच्छा नहीं लगा। वह जरा तुनककर बोली- "क्या है? आज क्या बखेड़ा करने आये हो?"

अरुण बहिन की घुड़की सुनकर भौचक्का रह गया। उसे बहिन की यह मुद्रा अच्छी नहीं लगी। अतः तनकर बोला- "भगिनी क्या हम हमेशा बखेड़ा ही खड़ा किया करते हैं?" "तो कल फिर क्या किया था?"

"क्या वह बखेड़ा था?"- वह जोर देकर बोला-"और भगिनी! सुन लो, आप यदि अपना ही अपना मतलब साधोगे, तो बखेड़ा करूँगा ही।"

कल्याणी ने उसे चिढ़ाने के लिये कहा- "क्या हम पर तुम्हारा अधिकार है?" क्यों नहीं? आप मेरी बड़ी बहिन जो हैं!"

"अच्छा, भैया! हारे तुझसे।"- कल्याणी ने हँसते हुए, उसका हाथ-हाथ में लेते हुए कहा- "भैया को मुझसे क्या काम है?"

"बस, आप ऐसे प्रेम से बोला करो तो हमारा मन राजी रहे। मैं आपके पास एक काम

से आया हूँ....." कुछ संकोच में पड़ गया, अरुण।

"कहो, क्या काम है?" - कल्याणी ने उसका संकोच दूर करने के लिये कहा।

"भगिनी!" वह उसके कान के पास मुँह ले जाकर धीमे से बोला- "मुझे तीर्थंकर भगवान के नाम सिखा दोगी?"

"पहले सीखे थे, न।"

"भगिनी! धीमे बोलो। कोई सुन लेगा तो क्या सोचेगा, जैन होकर इसे इतना याद नहीं है।" - अनुनय करता हुआ अरुण फुसफुसाकर बोला- "पहले सीखे थे, पर भूल गया।"

"फिर भूल जाओगे तो।"

"नहीं, अब नहीं भूलूँगा। उनका हमेशा स्मरण करूँगा।"

अरुण के भावों की थाह पाने हेतु कल्याणी ने पूछा- "नाम-स्मरण से क्या लाभ?"

"हमारी श्रद्धा बढ़ेगी।"

"यह तुम्हें किसने कहा?"

"किसी ने नहीं" - अरुण भेद खोलता हुआ बोला- "कल लोगों को भाव से भगवान का नाम गाते हुए सुना तो मुझे यह विचार हुआ।"

"अहो! तुम बड़े तत्त्वज्ञानी हो गये!"

"तत्त्वज्ञानी किसे कहते हैं- यह मैं नहीं जानता। परन्तु ज्ञानी तो मुझे बनना ही है" - अरुण नम्र स्वर से बोला- "भगिनी! बातें फिर कर लेंगे। पहले मुझे भगवान के नाम सिखा दो।" कल्याणी कुछ नहीं बोली।

"नहीं सिखाओ तो आपकी इच्छा! हम आचार्य महाराज से सीख लेंगे।"

"क्या आचार्य महाराज से दोस्ती हो गयी?"

"कैसी बात करती हो, भगिनी! अभी आचार्य महाराज से बोल ही न सका और इतने बड़े प्रभु से हम दोस्ती क्या करेंगे?"

"तो क्या दुश्मनी करोगे?" "दुश्मनी क्यों करेंगे?"

"तो फिर क्या करोगे?" "भक्ति। इससे वे मुझ पर प्रसन्न होंगे।"

"वे प्रसन्न होंगे तो तुझे क्या लाभ होगा?"

"आप तो मुझसे विवाद करती हो। मैं क्या इतना ज्ञानी हूँ?"

वह रुआँसे स्वर में बोला- "मुझे तंग क्यों करती हो?"

"क्या कल जैसा रोने का नाटक कर रहे हो?"

"आपको तो"....वह आगे न बोल सका। उसकी बड़ी-बड़ी सीपी जैसी आँखों से

मोती जैसे आँसू गिर पड़े।

यह दृश्य देखकर कल्याणी को भी खेद हुआ। उसने अकारण ही अपने प्यारे भाई का मन आहत कर दिया। अपनी बहुमूल्य साड़ी के छोर से उसके आँसू पोंछते हुए बोली- "धत् पगले! इतनी-सी बात पर रो पड़े। तुम तो रोना भूल गये थे न।"

"आप मुझे फिर से रोना सिखा रही हैं।" वह आश्वस्त होकर बोला- "रहने दो, इस साड़ी से आँसू मत पोंछो। यह खराब हो जायेगी।"

"मेरे भैया के आँसू साड़ी से महँगे हैं। अच्छा, सीखना है भगवान के नाम?" उसको अपने पास बिठाकर कल्याणी बोली।

"सिखाओ तो आपकी इच्छा।"

"ऐसा क्यों कहते हो?" "आप पर हमारा क्या अधिकार?"

"बहिन हूँ तो मुझ पर तुम्हारा अधिकार है ही- यही तो तुम कह रहे थे।" कल्याणी उसे मनाने लगी।

"पर पाठशाला में गुरुजी ने बताया कि ज्ञान विनय से सीखा जाता है, अधिकार से नहीं।"

"अरुण! अब तू बहुत सयाना हो गया है। तेरी बुद्धि की परीक्षा लेने लगी, तो तू रो पड़ा। मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हें रुला दिया।"

"भगिनी! मैं क्या करूँ? मुझे अपने आपसे रोना आ गया। आपने बात ही ऐसी की। क्या गुरु महाराज से दोस्ती-दुश्मनी की जाती है?"

"तू बिल्कुल ठीक कह रहा है। गुरु महाराज से दोस्ती-दुश्मनी नहीं की जाती है, उनकी तो भक्ति ही की जाती है। फिर भी -कल्याणी ने भाई का उत्साह बढ़ाते हुए कहा- "गुरु महाराज हमारे मित्र ही हैं। बड़े-बड़े ज्ञानियों ने गुरुदेव को कल्याणमित्र माना है?"

अरुण प्रसन्न होकर बोला- "हाँ, मुझे ऐसा समझाओ, उलझाओ मत। मैं अभी क्या जानूँ?"

"मेरा राजा भैया बुद्धिमान है। तुम तत्त्व को सरलता से ग्रहण कर सकते हो। हो सकता है, तुम इसी प्रकार चिन्तन करते रहे- तत्त्व को ग्रहण करते रहे तो बहुत बड़े ज्ञानी हो सकते हो।"

अरुण उठा और बहिन के चरणों में प्रणाम करके बोला- "आपने अच्छा कहा - अच्छा आशीर्वाद दिया। मुझे ज्ञानी ही होना है।"

कल्याणी यह दृश्य देखकर आश्चर्य चकित रह गयी। 'इसे किसने सिखाया कि अपने

प्रति की गयी किसी की मंगल-भावना को इस प्रकार बधाना चाहिये। सचमुच ही यह निर्मल आत्मा है। इसका क्षयोपशम विशिष्ट है। यह विनीत भी है। अतः इसके चिन्तन की दिशा सही है।'' उसका ध्यान हाथ जोड़कर सामने खड़े हुए अरुण की ओर गया। उसके मुँह से अनायास ही निकल गया-''तेरी भावना जल्दी सफल हो।''

अरुण ने उसी विनय-मुद्रा में कहा- ''अब मुझे आप भगवान के नाम याद करा देंगे?'' ''करा देंगे क्यों, करा दीजिये?''

''जैसा भी आप ठीक समझें?''

''अच्छा, लो, याद करो।'' कल्याणी ने तीर्थंकर के नामों का क्रम से उच्चारण करवाया। कुछ ही देर में अरुण ने चौबीसों नाम याद कर लिये। तब कल्याणी ने पूछा- ''अब मैं तुझसे कुछ पूछूँ तो रोयेगा तो नहीं, न।''

''नहीं, पहले मैं बात नहीं समझा था, इसलिये रोना आ गया था। क्या बार-बार रोया ही करूँगा। समझ में नहीं आयेगा तो आपसे पूछ लूँगा।''

''अच्छा, इन नामों का स्मरण क्यों करना चाहिये?''

''ये परमात्मा हैं, इसलिये।'' ''किस भाव से स्मरण करना चाहिये?''

''किस भाव से स्मरण करना चाहिये- यह मैं नहीं जानता। पर मैं किस भाव से स्मरण करूँगा सो बता दूँ। 'मेरी श्रद्धा जागे और मेरी बुद्धि निर्मल हो- मैं इस बात से स्मरण करूँगा। मैंने यह जाना है, भगिनी! वीर पुरुषों को स्मरण करते हैं तो हममें वीरता आती है, तो हम भगवान का स्मरण करेंगे तो क्या हममें भगवत्ता नहीं आयेगी?''

''तू ठीक समझा है'' कल्याणी ने प्रसन्नता से कहा- ''परमात्मा का स्मरण परमात्म-स्वरूप पाने के लिये ही करना चाहिये।''

इस प्रकार भाई-बहिन में कुछ देर बातें होती रहीं। फिर अरुण वहाँ से जाकर अपने अध्ययन में लग गया।

आज सायंकाल अरुण जल्दी ही उपाश्रय चला गया था। अभी वहाँ कोई नहीं आया था। आचार्य महाराज लघुमुनिजी को कुछ समझा रहे थे। वह भी वन्दना करके, शान्ति से बैठ गया। मुनिजी का समाधान हुआ। वे वहाँ से चले गये। आचार्य महाराज ने अरुण की ओर देखा। वह रोमान्चित हो गया। 'क्या बोलूँ?'' यह उसे समझ में नहीं आया।

''किसके सुपुत्र हो?''- आचार्य महाराज ने स्वयं ही पूछा।

''श्रेष्ठी सागरचन्द्रजी का पुत्र हूँ।'' अरुण का संकोच दूर हो गया।

''अच्छा, नगरश्रेष्ठी के सुपुत्र हो?'' ''जी हाँ?''

"तुम्हें पहले नहीं देखा?" "गुरु महाराज मैं कल से ही आने लगा हूँ।"

"नमोक्कार मंत्र याद है?" "जी, हाँ। चौबीस भगवान के नाम भी याद हैं।"

"और क्या याद है?"- "गुरु-वन्दना का पाठ....."

"अभी सामायिक करने आये हो?" "हाँ, गुरु महाराज।"

"तुम समझदार लड़के हो। कुछ समझ में आये ऐसा ज्ञान सीखना।"

इतनी बात से अरुण हर्ष-हर्ष से भर गया। वह आगे कुछ बोलता, इतने में कुछ श्रावक वहाँ आ गये, अतः वह चुप रहा। उसके मित्र भी आ गये थे। वे सामायिक करने जुड़ गये। वह प्रतिदिन अवसर पाकर गुरुदेव से कुछ न कुछ बात कर ही लेता था। आचार्यश्री को अरुण योग्य पात्र लगा। उन्होंने उसे ज्ञान देना प्रारम्भ किया। उन्होंने पूछा- "अरुण! तुम कौन हो?"

वह आचार्यदेव के प्रश्न का आशय तुरन्त समझ गया। इसलिये एकदम बोला- "गुरुदेव! हम जैन हैं।"

"जैन शब्द का क्या अर्थ है- तुम्हें मालूम है?"

"नहीं, गुरुदेव! आप कृपा करेंगे तो जान लूँगा।"

"जैन शब्द का अर्थ जिनदेव को भगवान मानने वाला, उनकी उपासना करने वाला यह अर्थ याद रहेगा न!"

"जी! पर गुरुदेव 'जिन' शब्द का क्या अर्थ है?"

"जिस आत्मा ने राग, द्वेष आदि विकारों को जीत लिया है, नष्ट कर दिया है, उस आत्मा को जिन कहते हैं।

"तो गुरुदेव 'जिनदेव' कोई एक भगवान नहीं है?" "हाँ, अरुण।"

"जो भी आत्मा विकारों को जीत ले, वह क्या जिनभगवान हो जाता है?"

"हाँ, कोई भी आत्मा जिनभगवान हो जाता है।"

"गुरु महाराज! आप क्या जिनभगवान हैं?"

गुरुदेव इस भोले बालक के प्रश्नों से प्रसन्न हो रहे थे। वे बोले-"नहीं, वत्स! मैं जिनभगवान नहीं हूँ, मैं साधु हूँ।"

"पर लोग आपको गुरु भगवान कहते हैं?"

"वत्स! वे मुझे आदर से गुरु भगवान कहते हैं। फिर भी वे मुझे जिन भगवान नहीं कहते हैं।"

"गुरुदेव! सेठ गुणसुन्दरजी हमारे घर आये थे, तब वे पिताजी को कह रहे थे कि गुरु

महाराज जिनभगवान् जैसे हैं?''

लघुमुनिजी ने जब गुरुदेव को अरुण से बातें करते सुना, तब वे भी समीप में आ गये और उनकी बातें सुनने लगे। उन्हें इस वार्तालाप में रस आ रहा था। स्वयं आचार्य महाराज भी उस बालक की बातें सुनकर प्रसन्न हो रहे थे। वे बालक की सरलता और जिज्ञासा से बड़े प्रभावित थे। आचार्यदेव की मुद्रा प्रसन्न थी। उनके लोचनों में हर्ष तैर रहा था। वे बोले- ''वत्स! मुझे जिन भगवान् जैसा कहते हैं, जिनभगवान नहीं। मैं अभी जिनभगवान जैसा भी नहीं हूँ।''

अरुण उत्सुकता से पूछ बैठा- ''आप जिन भगवान क्यों नहीं बने?''

''जिन बनना सरल नहीं है। मैं चाहता हूँ तो 'जिन' बनना ही और इसलिए साधु बना। मेहनत कर रहा हूँ। परन्तु अभी तक जिन नहीं बना।

''मैं जिनभगवान बन सकता हूँ।'' ''हाँ बन सकते हो।''

''तो गुरुदेव! मुझे जिन भगवान बना दो।''

''कोई किसी को जिनभगवान नहीं बना सकता। जीव स्वयं ही मेहनत करके जिनदेव बन सकता है।''

''गुरुदेव! आपने अच्छी ज्ञान की बातें बतायी। आप हमारे गुरु भगवान हो।'' यह कहकर उसने गुरु-वंदना के पाठ से वंदना की।

इस प्रकार आचार्यदेव उसे कुछ न कुछ समझाते रहते। एक दिन वह दो-तीन साथियों के साथ आचार्यश्री के पास आया और वन्दना करके बोला- ''गुरु महाराज! हमें भी कुछ ज्ञान सिखाओ।''

''मैंने तुम्हें सिखाना प्रारम्भ कर दिया है।''

''गुरुदेव! वह तो हमें आप समझा ही रहे हैं। पर कुछ याद करने को हमें पाठ दिया जा सकता है क्या?''

''क्यों नहीं? बोलो, क्या सीखना है, तुम्हें?''

''हम क्या जानें?'' जो आपकी इच्छा हो, वह सिखायें।''

''अच्छा, सामायिक सीखो। फिर प्रतिक्रमण याद करना।''

आचार्यश्री ने उसे पाठ लेने की विधि बतलायी और उसने भी विधिपूर्वक पाठ लिया। स्वयं आचार्यदेव ने पाठ दिया। आज तो उसके हर्ष का पार न था। वह घर पहुँचा। पहले ही कल्याणी मिली। उसने उसका हर्ष भाँप लिया। वह उसे चिढ़ाने के लिये बोली- ''आज तो बड़े खुश हो रहे हो। धरती पर पाँव ही नहीं टिक रहे हैं। मानो स्वर्ग में ही उड़े जा रहे हो।''

"भगिनी! आज मेरे लिये सोने का सूरज उगा है।"

"ओह! ऐसी क्या बात है? अकेले ही खुशी में मगन रहोगे कि उसमें से किसी को भाग भी दोगे।"

"यह मिठाई थोड़े ही है, जो सबको बाँट दूँ। बात यह है कि आज आचार्य भगवान ने मेरी विनति मानकर, स्वयं ही मुझे याद करने के लिये पाठ दिया। बोलो, मैं कितना भाग्यशाली हूँ?"

"भाग्यशाली तो हो ही! क्या आचार्यदेव तुझसे बातें भी करते हैं?"

"खूब", फिर उसने आचार्यश्री से हुई कई बातें बतलायी। उसकी बात सुनकर कल्याणी को उसके सौभाग्य से ईर्ष्या हो गयी। वह चिहुँक कर बोली- "हूँ! कितना मक्कार है? एकल खुरा? तेरा इतना कितना बड़ा पेट है। सब बातें हजम कर गया। हमें गंध तक न आने दी।"

"जीजी! नाराज मत होओ" -वह हाथ जोड़कर बोला- "मैं गुरु भगवान की बातों में इतना मग्न हो जाता हूँ कि किसी को वे बातें कहने का मन ही नहीं होता है।"

"हो! बड़ा आया मगन होने वाला।" - कल्याणी ने व्यंग्य से कहा- "मैं लड़का होती तो कभी की आचार्यश्री का चेला बन जाती!"

"अभी मैं क्या आचार्यदेव का चेला नहीं हूँ?" कल्याणी पिता को अपनी बात सुनते देखकर, वहाँ से खिसक गयी। सेठ सागरचन्द्र को अपनी संतान का संवाद सुनकर सुख ही हुआ। **(क्रमशः)**

सत्साहित्य-सम्पादक की आवश्यकता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सत्साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। इस संस्था में एक ऐसे योग्य विद्वान् सम्पादक की आवश्यकता है जो हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत तथा जैनविद्या का ज्ञाता होने के साथ नूतन सत्साहित्य का सर्जन करने में सक्षम हो तथा पूर्व प्रकाशित सत्साहित्य में परिमार्जन/संशोधन करने की क्षमता रखता हो। इच्छुक विद्वान् अपना आवेदन-पत्र पूर्ण विवरण के साथ निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। वे चाहें तो अभीष्ट वेतन का उल्लेख भी कर सकते हैं। *-मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः- 0141-2575997*, **Email:jinvani@yahoo.co.in**

युवा-स्तम्भ

व्यवसाय और शाकाहार

डॉ. दिलीप धींग

जिनवाणी (मार्च 2014) के युवा-स्तंभ में मेरा लेख 'शाकाहारियों के लिए सस्ता जीवन बीमा' प्रकाशित हुआ। लेख का अन्तिम वाक्य था, "व्यवसाय के साथ अहिंसा और शाकाहार की अवधारणा से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं।" इस कथन पर एक पाठक ने व्यवसाय में अहिंसा और शाकाहार की अवधारणा को अधिक स्पष्ट करने के लिए आग्रह किया। मैंने उसे जो सुझाव भेजे। उन्हें बिन्दुवार दिया जा रहा है-

1. आजीविका के लिए हर व्यक्ति को कोई न कोई व्यवसाय, नौकरी, पेशा या कार्य करना ही होता है। व्यक्ति अपना व्यवसाय या पेशा ऐसा चुने, जिसमें मूक प्राणियों की हिंसा नहीं हो। जीव-हत्या, मांस, मदिरा, मछली, अण्डा आदि से जुड़ा कोई भी व्यवसाय नहीं करना चाहिये।
2. प्राणियों को पकड़ने, शिकार करने, कैद करने और वध करने के उपकरणों या वस्तुओं का निर्माण और व्यापार नहीं करें। जैसे पशु-पक्षियों को मारने के हथियार, मछली पकड़ने के जाल आदि का निर्माण और व्यापार नहीं करना।
3. हिंसक और निन्दनीय उद्योग या व्यवसाय के लिए किसी को ऋण न दें तथा वित्तीय या अन्य मदद नहीं करें।
4. होटल व्यवसायी तथा भोजनालय या रेस्तरां चलाने वाले व्यक्ति अपने व्यवसाय में मद्य-मांस का पूर्ण निषेध रखें।
5. किसी भी व्यावसायिक संस्था, सभा या सम्मेलन में नियमपूर्वक शाकाहारी भोजन की व्यवस्था ही रखें।
6. किसी भी व्यावसायिक सौदे के निमित्त से मद्यपान व मांसाहार का प्रस्ताव नहीं करें तथा ऐसे किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार भी नहीं करें।
7. परिवहन-व्यवसाय से जुड़े व्यक्ति अपने वाहन में प्राणियों का ऐसा परिवहन नहीं होने दें, जिस परिवहन का उद्देश्य मांस-व्यापार तथा पशु-पक्षियों का वध हो।
8. व्यावसायिक रूप से अहिंसक चिकित्सा प्रणालियों, अहिंसक औषधियों और दवाइयों को अपनाएँ तथा उन्हें प्रोत्साहित करें।

9. ऐसी वस्तुओं का क्रय, विक्रय और विपणन नहीं करें, जिनके निर्माण में पशु-पक्षियों या जीव-जन्तुओं की हत्या जुड़ी हो अथवा इन निरीह प्राणियों पर क्रूरतापूर्ण परीक्षण किया गया हो।

10. अपने व्यावसायिक, वाणिज्यिक, औद्योगिक, पेशेवर या शैक्षणिक प्रतिष्ठान के परिसर को 'निरामिष क्षेत्र' (मीटलेस ज़ोन) घोषित करें। निरामिष या अहिंसक क्षेत्र 'मद्य-मांस मुक्त क्षेत्र' होगा। उस क्षेत्र में कर्मचारी, मजदूर, ग्राहक या आगन्तुक, किसी भी व्यक्ति के द्वारा किसी भी प्रकार के सामिष आहार (मांसाहार) को लाने, रखने, बनाने तथा सेवन करने पर पूर्ण प्रतिबंध रहे।

11. कर्मचारियों की भर्ती के समय आवेदन में एक बिन्दु आवेदक के शाकाहारी होने या नहीं होने से सम्बन्धित रखा जाए। इस बिन्दु में यह भी पूछा जाए कि आवेदक की पारिवारिक पृष्ठभूमि शाकाहारी है या नहीं। व्यवसाय में कर्मचारियों की भर्ती, पदोन्नति आदि में शाकाहारियों को प्राथमिकता दी जाए।

12. चेन्नई में एस. कृष्णचन्दजी चोरड़िया ने सौ एकड़ जमीन पर 'चन्दाप्रभु शाकाहार ग्राम' (वेजिटेरियन विलेज) बसाया। इस शाकाहार ग्राम में वही व्यक्ति भूखण्ड खरीद सकता है और मकान बना सकता है, जो पूर्ण शाकाहारी हो। उनके इस व्यावसायिक प्रकल्प में यह शर्त पूर्णतः विधिसम्मत है। अचल सम्पत्तियों का निर्माण और व्यवसाय करने वालों के लिए यह एक बहुत बड़ी प्रेरणा है।

13. अपनी अचल सम्पत्ति (भूखण्ड, मकान, दुकान, कमरा आदि) उन्हीं व्यक्तियों को बेचें अथवा किराये या गिरवी पर दें, जो व्यक्ति पूर्ण शाकाहारी हों। साथ ही, यह सजगता अवश्य रखें कि अपने द्वारा बेची गई अथवा किराये या गिरवी पर दी गई अचल सम्पत्ति पर किसी भी प्रकार का मांसाहार-प्रोत्साहक व्यवसाय नहीं हो। किराये या गिरवी में तो यह सावधानी शत-प्रतिशत रखी जा सकती है और अवश्य रखी जानी चाहिये। किसी भी प्रकार के उल्लंघन या वादा-खिलाफी पर सौदा निरस्त किया जा सकता है।

14. निवेशक ऐसी कम्पनियों में निवेश नहीं करें, जो कम्पनियाँ मांस, मछली, अण्डा, शराब आदि के व्यवसाय से मुख्य या सहायक रूप में जुड़ी हुई हों।

15. पत्र-पत्रिकाओं के मालिक अपने अखबार में किसी भी प्रकार के मांसाहार या मांस-व्यापार को प्रोत्साहित करने वाले विज्ञापन अस्वीकार करें। वे अपने अखबार में मांसाहार और प्राणिवध के समर्थन में किसी भी प्रकार की सामग्री का प्रकाशन नहीं

करें। वे शाकाहार और जीव-रक्षा से सम्बन्धित सामग्री को महत्त्व देते हुए प्रकाशित करें।

16. शासन, प्रशासन, न्याय-प्रणाली, विविध पेशों (प्रोफेशन्स) और नौकरियों में व्यक्तियों के विभिन्न कर्त्तव्य, अधिकार और भूमिकाएँ होती हैं। उन भूमिकाओं के माध्यम से हिंसा और हत्या की उपेक्षा तथा खिलाफत की जानी चाहिये। अवसर के अनुसार शाकाहार, जीवरक्षा और पर्यावरण के हित में कार्य करने चाहिये।

व्यवसाय और शाकाहार से जुड़े ये कुछ मार्गदर्शक बिन्दु हैं। अन्य भी अनेक तथ्य हो सकते हैं, जिनसे व्यवसाय में शाकाहारिता के विचार को साकार किया जा सकता है। अहिंसा और शाकाहार से सम्बन्धित हमारे आर्थिक जीवन के छोटे-छोटे कदम, नियम और निर्णय समाज और पर्यावरण पर गहरा असर डालते हैं। हमें किसी भी कदम को छोटा नहीं समझना चाहिये। श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों और सिद्धान्तों के प्रति आस्था को व्यावहारिक और व्यावसायिक जीवन में भी आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्ति दी जानी चाहिये। शाकाहारिता के साथ ही व्यवसाय में नैतिकता, प्रामाणिकता, वचनबद्धता जैसे मूल्यों का भी बहुत महत्त्व है। चूंकि यहाँ विषय 'व्यवसाय और शाकाहार' रहा, इसलिए सम्बन्धित बिन्दुओं का स्पर्श ही किया गया है।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001

बाल-स्तम्भ [मई-2014] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2014 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'सिकन्दर की वसीयत' एवं 'साधनों की हर तरफ, बढ़ रही भरमार है' रचनाओं के प्रश्नों के उत्तर 30 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	चन्द्रकांत मुरडिया-बल्लारी (कर्नाटक)	34.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	पूजा गाँधी-हैदराबाद	33
तृतीय पुरस्कार- 200/-	सार्थक जैन-धार (म.प्र.)	28
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	लक्की कांकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	27.5
	निर्झर मेहता-मन्दसौर(म.प्र.)	24.5
	यश बैद-भीनासर (राज.)	24
	नेहल जैन-इन्दौर (म.प्र.)	23.5
	उदिता मेहता-मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)	23.5

नारी-स्तम्भ

सशक्त नारी

श्रीमती कमला सुराणा

क्या-क्या संजोए, सजाए सपने मन में
चकनाचूर हो गए, सपने काँच की तरह
ये काँच के टुकड़े, चुभते रहते हैं मन में
घाव करते रहते, प्रति पल मन में।

मिला मुझे, शराबी-जुआरी अभागा
अभागा वह नहीं, अभागी मैं हूँ
उसकी आकृति देख-देख डर जाती हूँ।
सिहर-सिहर रोती हूँ, आँचल की आड़ में।

गुर्राता, धमकाता, उतार लिए सब गहने
किया तन-धन-मन से नंगा
बचा न अब, कुछ मुझमें
सूख गए आँख के आँसू, मुरझा गई देह।

हँसता जग मुझ पर, शराबी की पत्नी मान,
सुन-सुन कर ये ताने, निराश हुआ जीवन
छोड़ दूँ इसको, तोड़ दूँ इससे नाता
नहीं, नहीं छोडूँगी इसे, यह मेरा पति है।

मैं नारी शक्ति हूँ, सुधार दूँगी उसको
दिखा दूँगी दुनियाँ को नारी कितनी सशक्त है।

-ई-123, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

Nice Lines

Mrs. Meenu Dinesh Jain

1. The brightest future will always be based on a forgotten past. You can't get on well in life until you let go off past failure and heartaches.
2. When time is never ready to wait for us, then why do we always wait for the right time? No time is wrong to do the right thing.

-17/729, CHB, Jodhpur (Raj.)

पाठक-प्रतिक्रिया

बेटी को दें संस्कार

श्रीमती लीला सुरेश पीपाड़ा

जिनवाणी के जनवरी-2014 के अंक में 'परिवार-स्तम्भ' में प्रकाशित श्री पारसमल जी चण्डालिया का आलेख 'कैसे बचें टूटते रिश्ते?' पढ़ा। उन्होंने इस विषय पर मार्ग दिखाया कि अगर पति-पत्नी में एक-दूसरे को समझने की, सामंजस्य करने की चाह होगी तो कोई ताकत उन्हें अलग नहीं कर सकती। आज हर रोज तलाक के एवं अंतरजातीय विवाह के प्रसंग सुनने-देखने को मिल रहे हैं। हमारे जैन समाज में यह क्या हो रहा है? कुछ परिवार के लोग लड़की को धन तो दे देते हैं, पर संस्कार नहीं देते। वे ससुराल से आई बेटी को अपने घर में रख लेते हैं और फिर कानून व अन्याय की रणनीति से लड़के वालों पर दहेज का, मारने का, पैसा मांगने का, लड़के पर शराब पीने का या लव अफेयर का इल्जाम लगाकर अपनी लड़की को हर गुनाह से बचा लेते हैं। उन्हें वापस उस लड़की की शादी करनी होती है। अब लड़कियाँ भी इस तरह रिश्ते बदलती हैं जैसे वह रिश्ता नहीं कपड़े हों।

नादान लड़कियाँ यह नहीं सोचती हैं- ''मैं यहाँ से छोड़कर जाऊँगी तो मुझे वापस जाना तो दूसरी जगह पर ही पड़ेगा।'' जिस घर में वह शादी करके गई उसे अपना घर माने, अगर कोई बात है तो सामंजस्य करने में वह अपने पति के घर में बैठ कर ही अपनी बात रखे, न कि पिता के घर। अगर लड़की ससुराल में बड़ों का आदर करती है, छोटों को प्यार देती है, छोटी-छोटी बातें पीहर वालों को न बताकर स्वयं ही उसे सुलझा देती है तो स्थिति तनावपूर्ण नहीं बनती, सामने बोलना, घंटों मोबाइल से बातें करना, घर का काम नहीं करना, गरिमा पूर्ण कपड़े नहीं पहनना आदि बातें ससुराल में शोभा नहीं देतीं। इनसे परस्पर तनाव एवं दुराव उत्पन्न होता है। हमें अपने आपको एडजस्ट करना होता है। आज फैशन परस्त युग है, पर कोई फैशन बाध्य नहीं करती कि आप मर्यादा में न रहें।

बहुत से घरों में यह होता है कि वे बहू को तो घूंघट निकालते देखना चाहते हैं, किन्तु बेटी को स्कर्ट पहनाते हैं। वे यह नहीं जानते कि हमारे कपड़े हमारे शील की रक्षा करते हैं। लज्जा स्त्री का गहना होता है। अपनी बहू पर सभी कानून-कायदे लगाते हैं, परन्तु अपनी बेटी को ससुराल में कैसे रहना, यह शिक्षा नहीं देते। आज लड़की के ससुराल में हस्तक्षेप करके उसका जीवन नरक बना दिया जाता है। उसे बैसाखी के सहारे चलने की आदत डाल दी जाती है। वे यह नहीं सोचते कि बेटी ने कोई छोटी उम्र में तो शादी नहीं की है, वह भी अपना भला-बुरा समझती है, पर माँ-बाप का बेटी के प्रति अति प्यार बेटी का जीवन

बिगाड़ देता है। बेटी मनगढंत कहानियाँ बना कर माता-पिता को परोसती है और फिर शुरू हो जाती है तहकीकात। अंत में उनका एक ही कार्य रहता है कैसे लड़के वालों को नीचा दिखाना, कैसे उनसे लाखों रुपये निकलवाना तथा उन्हें कोर्ट-कचहरी में झूठा केस डालकर फँसाना। उन्हें पता होता है कि कानून लड़कियों के लिये ही बना है।

मेरी यह विनति है कि आप बेटी को धन नहीं देंगे तो चलेगा, किन्तु उसे संस्कार अवश्य दें ताकि वह अपने पिता व पति का नाम रोशन करे, क्योंकि जब हमारे घर में आग लगती है तो धुँआ पड़ोसी के घर में भी जाता ही है। अपनी लड़की को बचाने के चक्कर में वे सामने वालों का तथा स्वयं का भी बुरा कर बैठते हैं।

श्रीमान् चण्डालिया जी ने टूटते रिश्ते को बचाने के जो सुझाव बताये हैं उनसे बेटियों को मार्गदर्शन दें, हर माता-पिता से यही अनुरोध है। *-नालासोपारा (पूर्व), मुम्बई (महा.)*

आत्मा है ये हमारा

श्री दिलरूपचन्द भण्डारी

दिल कहे अमर है आत्मा है ये हमारा।
स्वाध्याय परभाव छुड़ाता, आत्मा है ये हमारा।
स्वात्मा से परमात्मा बनाता, आत्मा है ये हमारा।।1।।
सामायिक भाव समता लाता, आत्मा है ये हमारा।
स्वाध्याय ज्ञान कराता, आत्मा है ये हमारा।।2।।
सबके लिए खुला है, आत्मा है ये हमारा।
मतभेद को भुलाता, आत्मा है ये हमारा।।3।।
आओ कोई भी पंथी, आओ कोई भी धर्मी।
देशी-विदेशियों का आत्मा है ये हमारा।।4।।
संतों की उच्च वाणी सब जन हैं भाई-भाई।
सब देवता समाता, आत्मा है ये हमारा।।5।।
मतभेद होने पर भी मन भेद हो न पाए।
हर एकता का हामी आत्मा है ये हमारा।।6।।
मानव का धर्म क्या है मिलती है राह जिसमें।
चाहता भला सभी का, आत्मा है ये हमारा।।7।।
आओ सभी मिलेंगे, बैठेंगे प्रार्थना में।
दिल कहे अमर है, आत्मा है ये हमारा।।8।।

-3 च 3, नन्दनवन नगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

बीमारी को अब आप विदा कर दीजिए

श्री नेमीचन्द जैन (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य)

(तर्जः- डगमग डगमग नाव........।)

वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्री नेमीचन्द जी कर्णावट ने स्वास्थ्य के जिन सूत्रों को अपनाकर अपना स्वास्थ्य ठीक किया है, उन्हीं बिन्दुओं को उन्होंने काव्य में ढालकर आमजन तक पहुँचाने का उपक्रम किया है। उनके द्वारा प्रदत्त बिन्दु स्वास्थ्य के लिए मार्गदर्शक हैं।**-सम्पादक**

प्रारम्भ-

मेरे प्यारे मित्रों! अब ध्यान से सुन लीजिये।
मेरी प्यारी बहनों! अब ध्यान से सुन लीजिये।
बीमारी को अब आप विदा कर दीजिये।

1. कैसे सोयें?

तख्त या पाट पर शयन सदा कीजिए।
बांयी करवट पर सदा आप सोइये। खर्राटों को रोकिये ऑक्सीजन लीजिये।
सात घंटे नींद आप पूरी कर लीजिये।। बीमारी को.....

2. कैसे उठें?

बांयी करवट से आप सदा उठिये। नवकार मंत्र को पाँच बार ध्याइये।
दो लोटा पानी पीकर शौच आप कीजिये।। बीमारी को.....

3. शौच (मल त्याग) कैसे करें?

शौच करते अधिक दबाव मत दीजिये। शाम को भी शौच जाना आप मत भूलिये।
कब्ज़ की बीमारी से पिंड छुड़ाइये।। बीमारी को.....

4. दातुन कैसे करें?

दांतों बीच अन्न कण रहने मत दीजिये। दस-दस बार कुल्ला आप कीजिये।
शाम को भी भोजन बाद दातुन जरूर कीजिये।। बीमारी को.....
ऊपर, नीचे, अन्दर, बाहर ब्रश को घुमाइये।
ज़र्दा, तम्बाकू का दातुन कोई मत कीजिये।

चिकित्सक की राय को हृदय में धारिये।। बीमारी को.....

5. नारियल पानी खाली पेट लें–

नारियल पानी आप खाली पेट लीजिये। तिथि और मधुमेह में कोई मत लीजिये।
चबा–चबा भोजन को आप नित कीजिये। बीमारी को.....

6. भोजन कैसे करें?

भोजन को लेते वक्त पानी मत पीजिये। घंटे–घंटे, घूंट–घूंट पानी ज्यादा पीजिये।
रोटी चौकर (मोटे) आटे की हो ध्यान से सुन लीजिये।
सब्ज़ी रेशे वाली फल–सलाद आप लीजिये।
तिथियों में आप इनका त्याग कर दीजिये।।

7. कैसे सोचें (मन को स्वस्थ रखें)?

पहले सोचे विचार को आप जाने दीजिये।
फिर सोचें नया, श्वास लम्बा लीजिये।
सोचने की गति आप धीमी कर दीजिये।
मन और ब्रेन को तनाव मुक्त कीजिये।। बीमारी को.....

(जैसे ट्राफिक रुकने से गाड़ियों की कतार लग जाती है। ट्राफिक खुलने पर पहली गाड़ी पहले चलेगी, उसके बाद दूसरी, तीसरी......। नहीं तो फंस सकते हैं। तनाव पैदा हो सकता है। इसी तर्ज पर पहले सोचे हुए विचार को धीरे–धीरे निकलने दीजिये। उसके बाद दूसरे को तीसरे को प्रवेश दीजिये। इससे ब्रेन में तनाव पैदा नहीं होगा)

8. कैसे मंजिल चढ़ें?

छोड़ो लिफ्ट, पैरों–पैरों कदम चढ़ाइये। सीधा पैर रखते सीढ़ियाँ चढ़ जाइये।
जोड़ों का दर्द यों दूर आप कीजिये।। बीमारी को.....

9. कैसे नींद लें?

सोएँ तब एक–एक अंक लम्बा बोलिये।

या

स्पीड स्वाध्याय की धीमी लम्बी कीजिये।
बोलते रहेंगे जब नींद में रमजाइये।
स्वप्न रहित नींद को गाढ़ी बनाइये।। बीमारी को.....

(सोते ही 1,2,3,4 की संख्या को बहुत धीमी गति से लम्बा–लम्बा बोलना प्रारम्भ करें। स्वाध्याय योग्य पाठ के प्रत्येक शब्द को धीमी गति से लम्बा–लम्बा बोलने/सोचने

से व्यक्ति नींद की गोद में चला जाता है। क्योंकि इस प्रक्रिया से ब्रेन की नसों को आराम मिलता है)

10. सामायिक कैसी हो (आत्मा की खुराक)?

सामायिक करिये प्रयोग ये कीजिये। रीढ़ खंभ सीधा और गर्दन सीधी साधिये।
बैठें, चलें, चढ़ें जब खयाल इसका कीजिये।
कायोत्सर्ग, स्वाध्याय, ध्यान नित कीजिये।
ध्यान स्वाध्याययुक्त सामायिक साधिये
स्पीड स्वाध्याय की धीमी कर दीजिये।
एक-एक शब्द का अर्थ समझिये। बीमारी को.....

11. शरीर कैसे स्वस्थ रखें?

योग, जिम, भ्रमण, प्राणायाम कीजिये।
शारीरिक शक्ति से ज्यादा मत कीजिये।
विधिपूर्वक धीरे-धीरे इनको बढ़ाइये।
जीव कोई नहीं मरे विवेक इसका रखिये।
विवेक में ही धर्म है, इसे मत भूलिये।
बैठें, चलें, काम करें, खयाल इसका कीजिये।। बीमारी को.....

12. माता-पिता की सेवा कैसे करें?

बड़े और बूढ़ों को प्रणाम आप कीजिये।
दस मिनट उनकी कुशल क्षेम पूछिये।
कोई भी तकलीफ हो तो निराकरण कीजिये।
दया दान पुण्य हेतु राशि उन्हें दीजिये।
बड़ों की शुभ दृष्टि से फलिये व फूलिये।
माताजी के हाथ से भोजन आप लीजिये।। बीमारी को.....

13. गुरु-भक्ति कैसी हो?

शुद्ध महाव्रतधारी गुरु मन धारिये।
उनके संकेत पर अमल शीघ्र कीजिये।
कुतर्क तर्क नहीं, श्रद्धा से स्वीकारिये।
प्रश्न कोई हो तो उन्हें अदब से पूछिये।
गुरु को संकट वक्त, श्रद्धा से आराधिये।

विघ्न कष्ट दूर होंगे, धीरज बढ़ाइये।। बीमारी को.....

14. परहेज कीजिये–

रात्रिभोजन, कंदमूल परित्याग कीजिये।
व्यसन रहित और प्रामाणिक बनिये।
मैदा के प्रोडक्ट और फास्ट फूड छोडिये।
बिस्किट, पिज्जा, आइसक्रीम, बर्गर मत खाइये।
कोल्ड ड्रिंक्स उपयोग कभी मत कीजिये।
शक्कर के दानों को गिन–गिन लीजिये।
बाजार की तली वस्तु कम काम लीजिये।
फ्रीज अन्दर रखी वस्तु तुरन्त मत खाइये।
सूती, खादी पहने और पसीने को सोखिये।
एक किलोमीटर तक वाहन में न बैठिये।
दो किलोमीटर रोज साइक्लिंग कीजिये।
ए.सी. का उपयोग सोते हुए कम कीजिये।
पंखे की हवा को ज्यादा स्पीड मत दीजिये।। बीमारी को.....

15. रोग–मुक्ति का संकल्प–

साइनस, लकवा, शूगर की बीमारी हो।
कैंसर, दमा, ओवर वेट कोई लाचारी हो।
रोग–मुक्त होंगे आप विश्वास कीजिये।। बीमारी को.....

16. शुभकामना–

स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रफुल्लित रहिये।
धर्म–ध्यान, पर–उपकार में लग जाइये
एक–एक शब्द पर गौर आप कीजिये।। बीमारी को.....

17. आत्म–निवेदन–

ठीक लगे सुझाव जो अमल में लाइये।
बाकी सब मेरे लिये आप छोड़ दीजिये।
प्रतिक्रिया अपनी आप भिजवाइये।। बीमारी को.....

18. मांसाहार, अण्डे छोडिये, छुड़वाइये–

सांप, बिच्छू जंतु को जंगल में छोड़िये।

खटमल, मच्छर को आने मत दीजिये।
स्वच्छ रखें परिसर, गंदगी न डालिये।
वृक्ष आरोपण कर पर्यावरण बचाइये।
मच्छी, मुर्गी अण्डे मांसाहार छुडाइये।
शाकाहार फलाहार उत्तम बताइये।। बीमारी को.....

19. बाइक पर हों तो सावधानियाँ–

बाइक पर बैठिये हैलमेट पहनिये।
स्पीड हो पचास की ज्यादा मत खींचिये।
ओवरटेक गाड़ी को कभी मत कीजिये।
मोड़ पर गाड़ी को धीमे कर दीजिये।
उल्लंघन आप इनका कभी मत कीजिये।
हादसा न होगा आप सुरक्षित रहिये।। बीमारी को.....

20. समापन–

रोग मुक्त होने में समर्पण चाहिये।
'नेम' की दरकार को आप स्वीकारिये।
जीवन को सांचे में शीघ्र ऐसे ढालिये।। बीमारी को.....

-भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), मोबाइल- 094130-62049

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के मई-2014 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत '**भोजन के अनुकूल दिनचर्या**' के प्रश्नों के उत्तर 38 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं–

पुरस्कार एवं राशि–	नाम	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	डॉ. सी.पी. पोखरना-अजमेर	(70/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	सुश्री प्रियंका प्रकाशचन्द जी चौपड़ा-अजमेर	(68/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्री चन्दनमल जी पालरेचा-जोधपुर	(67/70)

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

बाल-स्तम्भ

फास्ट फूड से होते हैं बीमार

श्री सुभाषचन्द्र लखेड़ा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त 2014 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

फास्ट फूड यानी 'फटाफटी आहार' के कुनबे में ऐसे सभी आहार आते हैं जिसे मिनटों में तैयार कर परोसा जा सकता है। यह शब्द बीसवीं सदी के छठे दशक में प्रचलन में आया और वर्ष 1951 में इसने अंग्रेजी शब्दकोश में अपना स्थान ग्रहण किया। यहाँ अपने बाल पाठकों को यह बताना जरूरी है कि यूँ भूख को शांत करने के लिए हमारे देश में चिवड़ा और सत्तू जैसे फटाफट इस्तेमाल किए जा सकने वाली आहार सामग्रियाँ सैकड़ों वर्षों से प्रचलन में हैं, लेकिन यहाँ हम जिस फास्ट फूड की बात कर रहे हैं, उसमें ऐसी खाद्य सामग्री शामिल नहीं है। सामान्यतया अल्प समय में खाने के लिए तैयार किये जा सकने वाले किसी आहार को यूँ तो फास्ट फूड के कुनबे का सदस्य माना जा सकता है, लेकिन यहाँ हम जिस फास्ट फूड की बात कर रहे हैं उसमें, रेस्टोरेंट या परचून की दुकानों में पैकेटों अथवा डिब्बों में मिलने वाले वे आहार शामिल हैं जिन्हें पहले से पकाई या तपाई हुई खाद्य सामग्रियों से तैयार किया जाता है।

दरअसल, आहार के हिसाब से किसी भी मनुष्य की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसके द्वारा खाए जाने वाले खाद्य पदार्थों में छियालीस पोषाहारों का होना बहुत जरूरी है। पोषण विज्ञान में इन छियालीस पोषाहारों को 'अनिवार्य पोषाहार' कहा जाता है। वास्तव में किसी भी अनिवार्य पोषाहार का मतलब आहार में मौजूद उस पोषाहार से है जो शरीर को हमारे द्वारा खाये और पचाए हुए भोजन से मिलना चाहिए। हमारे लिए पानी, तेरह विटामिन, लिनोलीइक अम्ल, आठ या नौ एमिनो अम्ल, इक्कीस खनिज तथा

ग्लूकोज 'अनिवार्य पोषाहार' हैं। इनमें से किसी का भी अभाव हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह हो सकता है। चिंता की बात यह है कि आजकल प्रचलित फास्ट फूड में इनमें से अधिकांश पोषाहारों की कमी होती है। सामान्य तौर पर बढ़ते बच्चों को रोजाना तकरीबन 1500-1800 कैलोरी की जरूरत है। सही शारीरिक विकास के लिए उनके आहार में कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन उचित अनुपात में होने चाहिये। बाजार में फास्ट फूड के नाम पर जो चीजें सहज उपलब्ध हैं, उनमें कार्बोहाइड्रेट और वसा तो होती है, लेकिन प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में नहीं रहता है। यही नहीं, उनमें पड़ने वाले कृत्रिम नमक और प्रिजर्वेटिव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। प्रोटीन की कमी के कारण बच्चों और किशोरों के सहज शारीरिक विकास में विसंगतियाँ आ सकती हैं। आहार से प्राप्त होने वाले प्रोटीनों से हमें वे सभी एमिनो अम्ल मिलते हैं जिनसे शरीर में अनेक उपयोगी रसायनों का निर्माण होता है।

बहरहाल, हमारे देश में आधुनिक फास्ट फूड से सामान्य लोगों का परिचय वर्ष 1982 में तब हुआ जब चंद मिनट में तैयार होने वाले नूडल्स बाजार में आये। धीरे-धीरे इस सूची में फ्रेंच फ्राई, चाउमिन, बर्गर, पिज्जा, पास्ता, बफलो विंग, ब्रेडस्टिक और गार्लिक ब्रेड जैसे मिनटों में खाने के लिए उपलब्ध उत्पाद शामिल होते गए। आजकल बच्चों और किशोरों में फास्ट-फूड के प्रति तेजी से लगाव बढ़ रहा है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार महानगरों में 60 फीसदी बच्चों को फास्ट फूड का चस्का लगा हुआ है। भागती-दौड़ती जिंदगी में लोगों के पास इतना वक्त नहीं रह गया है कि वे सेहतमंद भोजन कर सकें, अतः वे इधर-उधर कुछ भी खाकर अपना काम चला लेते हैं। बड़े-बड़े शहरों के अलावा छोटे-छोटे शहरों में भी तेजी से फैलती फास्ट फूड और फास्ट लाइफ संस्कृति हमारे अपनों को बीमारियों का शिकार बना रही है। हमारे देश की आधी से अधिक आबादी गरीबी और कुपोषण की मार झेल रही है तो दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृति की नकल के कारण नवधनाढ्यों और रईसों की नई पीढ़ी फास्ट फूड के बढ़ते प्रचलन के कारण दिल की बीमारियों की गिरफ्त में आ रही है। दिल्ली और मुम्बई जैसे महानगरों तथा छोटे-बड़े शहरों में कई फास्ट फूड कंपनियों के अंधाधुंध तरीके से फैलते जाल के कारण पनप रही 'फास्ट फूड संस्कृति' की वजह से मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप और हृदय की बीमारियों का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। युवा पीढ़ी में चीजबर्गर, पिज्जा, चॉकलेट, आइसक्रीम तथा चाउमीन, छोले-भटूरे जैसे फास्ट फूड के प्रति बढ़ता लगाव उनकी सेहत को चौपट कर रहा है। दरअसल, बाजार में मिलने वाली सभी फास्ट फूड सामग्रियों में कुछ ऐसे रसायन होते हैं, जिनकी वजह से हमारे शरीर में बुरे कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ता है, मधुमेह होने का

खतरा बढ़ता है, शरीर की रोगों से लड़ने की ताकत में कमी आती है और डीएनए को नुकसान पहुँचता है। फास्ट फूड की इन बड़ी-बड़ी कंपनियों के नाम आज बड़ों के बजाय हमारे बच्चे, किशोर और युवा अधिक जानते हैं। फास्ट फूड की बड़ी शृंखलाओं में करोड़ों ग्राहकों तक पहुँच बनाने वाली कंपनियों के उत्पादों को आप सीधे अपने घर मंगवा सकते हैं। यही वजह है कि ऐसे खाद्य उत्पादों ने हम लोगों के घरों में अपनी पहुँच तेजी से बना ली है।

वैज्ञानिक अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि जो व्यक्ति जितने अधिक वजन का होगा, उसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह और उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल की समस्यायें उतनी ही अधिक होंगी। मौजूदा समय में आनन-फानन में तैयार होने वाले फास्ट फूड, वसायुक्त खाद्य पदार्थों, अत्यधिक मीठी वस्तुओं और डिब्बाबंद खाद्य सामग्रियों के प्रयोग के कारण लोगों के शरीर में बुरे कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ रही है। कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से हृदय को ऑक्सीजन समृद्ध रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में अवरोध पैदा हो जाता है जिससे हृदय की मांसपेशियों को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है। फास्ट फूड को बनाने के लिए अधिक मात्रा में वसा तथा कार्बोहाइड्रेट का इस्तेमाल होता है। ये दोनों हमारे हृदय को नुकसान पहुँचाते हैं। इसके अलावा फास्ट फूड में अधिक नमक होने के कारण सोडियम का अंश भी बहुत अधिक होता है। यह रक्तदाब तथा हृदय रोग की आशंका को बढ़ाता है।

दुनिया के विभिन्न देशों के स्वास्थ्य संगठनों द्वारा चेतावनी दिए जाने के बावजूद आज भी फास्ट फूड बनाने वाली कम्पनियाँ धड़ल्ले से अपने उत्पादों को तैयार करने में संश्लेषित रसायनों, ट्रांस-फैट्स (हाइड्रोजन कृत तेलों में मौजूद) चीनी की ऊँची मात्रा, मिठास पैदा करने वाले कृत्रिम रसायनों, हाई-फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप, और कतिपय पेट्रो-रसायनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। उनके द्वारा तैयार किये जाने वाले कुछ आहारों और पेयों में टरशियरी ब्यूटिल हाइड्रोक्विनोन का इस्तेमाल परिरक्षक यानी बतौर प्रिजर्वेटिव किया जाता है। यहाँ यह तथ्य गौरतलब है कि यदि इस रसायन की सिर्फ एक ग्राम मात्रा हमारे शरीर में पहुँच जाए तो हम मतली, वमन, घुटन और चक्कर आना जैसे लक्षणों से पीड़ित हो सकते हैं।

फास्ट फूड में पाये जाने वाले एक दूसरे रसायन मोनोसोडियम ग्लूटामेट के सेवन से भी सरदर्द, मतली, सीने के दर्द और कमजोरी के मामले सामने आये हैं। इस रसायन के सेवन से भूख महसूस करने की इच्छा में बढ़ोतरी होती है। फलस्वरूप, बहुत सारा फास्ट फूड खाने के बावजूद हमारी भूख शांत नहीं होती है और हम जरूरत से अधिक आहार खा जाते हैं। फास्ट फूड बनाने में इस्तेमाल किया जाने वाले रसायन डाइमेथिल पोली सिलोक्सेन, सोडियम फास्फेट और अन्य दूसरे संश्लेषित रसायन भी हमारे लिए नुकसानदेह होते हैं।

प्राकृतिक रूप से दूध में मौजूद केसीन प्रोटीन को 'फास्ट-फूड का निकोटिन' कहा जाता है। दरअसल, फास्ट फूड बनाने के लिए जिस केसीन का इस्तेमाल किया जाता है, उसे बनाने के लिए कैल्शियम हाइड्रोजन फॉस्फेट रसायन का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह से बनाए जाने वाले केसीन का हमारे दिमाग पर नशीला प्रभाव पड़ता है और फलस्वरूप हम उन फास्टफूड को खाने के आदी हो जाते हैं भले ही वे सिगरेट की तरह हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह हों। वास्तव में अधिकांश फास्ट फूड आइटमों में ऐसे रसायन मिलाए जाते हैं जो उनके स्वाद को बढ़ाकर बच्चों को अपने मकड़जाल में फंसा लेते हैं। साथ ही हमें अपने बच्चों को यह भी समझाना होगा कि चिप्स, कुकीज, कैंडी बार, मफिन्स, फ्राइड फूड्स जैसे फूड आइटमों में हाइड्रोजन कृत तेल और ट्रांस फैट्स होते हैं और इनमें हमारे शरीर को उचित पोषाहार नहीं मिल पाते हैं।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यदाकदा फास्ट फूड के सेवन से कोई इनके मकड़जाल में नहीं फंसता है लेकिन यदि किसी वजह से कोई इनका निरंतर सेवन करता है तो फिर वह इनका आदी हो जाता है और बाद में ऐसे बच्चे और किशोर घरों में बनने वाले स्वस्थ और परंपरागत भोजन को देखकर नाक-भौं सिकोड़ने लगते हैं। दरअसल, अपनी व्यस्तताओं के चलते पहले तो अधिकांश अभिभावक खुद ही अपने बच्चों को फास्ट फूड के तहत आने वाले आहार देते हैं और फिर जब ये बच्चे उसके आदी हो जाते हैं या ऐसे बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य पर उनका बुरा प्रभाव दिखने लगता है, तब वे अपनी गलती पर पछताते नज़र आते हैं। सभी अभिभावकों को यह याद रखने की जरूरत है कि चिकित्सकों के अनुसार तकरीबन 60 फीसदी बच्चों को बीमारियाँ उनके गलत खानपान की वजह से होती हैं। साथ ही हमें बच्चों और किशोरों को भी फास्ट फूड से जुड़ी वैज्ञानिक जानकारी देनी चाहिए ताकि वे खुद भी अपने आहार के प्रति सतर्क रहें।

-'बाल भारती' जून-2014 पत्रिका से साभार

-सी-180, सिद्धार्थ कुंज, सेक्टर 7, प्लॉट नम्बर-17, द्वारका, नई दिल्ली-110075

प्रश्नः-

1. फास्ट फूड किसे कहते हैं?
2. अनिवार्य पोषाहार कौनसे हैं, क्या फास्ट फूड से ये हमें मिलते हैं?
3. आपको कौनसा फास्ट फूड अच्छा लगता है और क्यों?
4. फास्ट फूड और फास्ट लाइफ संस्कृति से हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. क्या आप इस लेख को पढ़कर फास्ट फूड छोड़ना चाहेंगे? यदि हाँ तो क्यों?

(बाल-स्तम्भ का मई-2014 कर परिणाम पृष्ठ संख्या 60 पर दिया जा रहा है।)

प्रेरक-चिन्तन

हम बर्बादी की डगर पर तो नहीं?

सुश्री विधि कोठारी

आज के इस दौर में शिक्षा का बहुत जोर है,
फिर भी जीवन की नींव खोखली और कमजोर है।
दवा लेने पर भी यदि दर्द नहीं मिटता है तो,
समझना चाहिए की बीमारी का इलाज कुछ और है।।

वर्तमान युग आविष्कारों का युग नज़र आ रहा है, नित नये-नये आविष्कार हो रहे हैं और होते रहेंगे। सबसे ज्यादा क्रांति संचार साधनों में नज़र आती है। फोन, मोबाइल, इंटरनेट, व्हॉटसअप, फैसबुक आदि साधनों का मानव जीवन शैली पर बहुत प्रभाव पड़ा है। आज ये साधन जीवन की अनिवार्यता बनते जा रहे हैं और इनकी उपलब्धता व महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। परन्तु हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, हर बात के दो मायने होते हैं।

वैसे तो ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है,
लेकिन इसे ठीक से जीने की जरूरत है।
समझ गए तो मोक्ष की डगर है,
न समझे तो दुर्गति का सफर है।।

आग खाना पकाती भी है और ध्यान न रखा जाय तो दुनिया जला सकती है। हवा श्वासों में आकर ज़िन्दगी भी देती है और तूफान बन जाए तो तबाही भी फैला सकती है। पानी ज़िन्दगी देता है, प्यास बुझाता है और सुनामी बनकर कहर भी ढाता है।

इण्टरनेट, व्हॉटसअप आदि के आविष्कारों ने समय की कीमत एवं सुविधा को ध्यान में रखकर ही इन टेक्नोलॉजी का आविष्कार किया होगा, पर बात विपरीत हो गई- 'दवा ही बीमारी का कारण बन गई है।'

अगर सत्यतापूर्वक चिंतन किया जाए तो आज इस टेक्नोलॉजी के युग में सबसे ज्यादा समय की बर्बादी इन संचार साधनों के दुरुपयोग से ही हो रही है। जो समय स्वयं के आत्मविकास, पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए, बालकों को संस्कारित करने के लिए, सामाजिक उत्थान के लिए लगना चाहिए था, वह समय टी.वी. इण्टरनेट आदि में लग गया है।

-सुपुत्री श्री वर्द्धमान जी कोठारी, 394, शॉपिंग सेण्टर, कोटा (राज.)

प्रेरक-प्रसंग

जिन्दगी को शिकायत की किताब मत बनाओ

श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरड़िया

भाइयों और बहिनों! आज की सुबह कितनी सुहानी है- ठंडी-ठंडी हवा चल रही है, मन को हरा-भरा कर रही है, चेहरे पर मुस्कराहट है। सामने सूर्यदेवता अभी-अभी धीरे-धीरे आकाश में उदय होते हुए अपनी सुनहरी किरणों को पृथ्वी पर उतार रहे हैं। वृक्षों की टहनियों पर छोटे-छोटे पक्षी कलरव करते हुए- फुदकते हुए अपनी चहचहाट में वातावरण को संगीतमय बना रहे हैं। देखकर लगता है- जैसे सारा संसार आनन्द में सराबोर है। आज की यह सुहानी सुबह अमृतमय आनन्द दे रही है।

यह नज़ारा अमृत बेला में पौ-फटने के साथ शान्त मन से एक जगह खड़े होकर देखेंगे तो आप प्रकृति में खो जाएँगे। पर हम तो सुबह देरी से उठते हैं। सूर्य जब तपने लगता है, तब हमारी नींद खुलती है और हम प्रकृति का यह नायाब तोहफा लेने से वंचित रह जाते हैं।

खैर हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि- बीत गया सो बीत गया - आगे की सुध लेय। चलो आज से इस असीमित आनन्द का सौभाग्य प्राप्त करने की शुरुआत करें। जीवन में सुप्रभात लाने की कोशिश करते रहें। उस ओर अपने कदम बढ़ाएँ। मंजिल को नज़दीक लाने की कोशिश करें। पर अफसोस! हम प्रकृति के ऐसे वातावरण को छोड़कर अपनी सुबह की शुरुआत शिकायत से करते हैं। जिनको सभी से शिकायत रहती है उनका क्या करें? माँ-बाप को बेटे से शिकायत, बेटे को बाप से शिकायत है, सास को बहू से शिकायत है, बहू को सास-ननद से शिकायत है। जेठानी को देवरानी से शिकायत है, देवरानी तो पड़ौसियों में शिकायतें मिठाई की तरह बाँटती फिरती है।

समाज के लोग अपने कार्यकर्ताओं की जन-नेताओं से शिकायत करते रहते हैं। एक ही घर में रहते हुए भी बातचीत, बोल-चाल का कर्फ्यू लगा हुआ है। पास में रहते हुए भी मन से कोसों दूर हैं। आजकल तो सेलफोन है, जिससे शीघ्र ही शिकायत दर्ज कराई जा सकती है या एक-दूसरे को भिड़ाने को जल्दी अंजाम देने के लिए सीख देते रहते हैं। जैसा कि हम आजकल सीरियलों में देखा करते हैं।

भाइयों और बहिनों! इस तरह एक दूसरे की शिकायतों से समस्या का समाधान नहीं होगा। समस्या का समाधान बातचीत से होता है, गलतफहमियाँ मिटाने से होता है। इस तरह हर बात को सहजता या सरलता से लेने पर शिकायतें कम हो जाएँगी। अपने जीवन में शांति आएगी, तो खुशहाली बढ़ेगी।

आज से शिकायत कम, नमस्कार ज्यादा करें।
चिलचिलाती धूप से बचें, ठंडी छाया में आराम करें।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

स्वमूत्र.. और इतना स्वास्थ्यदायी?- डॉ. नितीन पाटील और डॉ. सारंग पाटील, ***प्रकाशक***- संदेश प्रकाशन, शिवाम्बु भवन, 13, सानेगुर जी वसाहत, कोल्हापुर-416012, फोन नं. 0231-2321565, 2321766, ***पृष्ठ***-216, ***मूल्य***-60 रुपये, सन्-2011

प्राचीन भारतीय, अफ्रीकन, यूरोपियन, अमेरिकन, अरेबियन और एशियन संस्कृतियों में मानवी मूत्र (शिवाम्बु) का उपयोग रोग निवारण के लिए किया जाता था। इनके सन्दर्भ और प्रमाण इस पुस्तक में प्रस्तुत किए गए हैं। आधुनिक काल में शिवाम्बु चिकित्सा पद्धति को पुनः स्थापित और प्रचारित करने का श्रेय ब्रिटेन के जॉन आर्मस्ट्रांग को दिया जाता है। ''द वाटर ऑफ लाइफ'' नामक अपनी पुस्तक में उन्होंने अपने अनुभवों को साझा किया है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई का भी इस चिकित्सा पद्धति को पुनः स्थापित करने में बड़ा योगदान रहा है।

शिवाम्बु चिकित्सा को समझने के लिए यह पुस्तक रोचक ढंग से लिखी गई है, इसमें उन सभी प्रश्नों के उत्तरों का समावेश किया गया है जो एक जिज्ञासु के मन में उठते हैं, जैसे- 1. मूत्र उत्सर्जित पदार्थ होने पर भी उपयोगी कैसे?, 2. स्वमूत्र इतना उपयोगी होने पर भी शरीर उसे बाहर क्यों फैंकता है, 3. मूत्र में ऐसे कौनसे तत्त्व हैं, जिसके कारण इसे दवाई में काम लिया जाता है, 4. चिकित्सा प्रारम्भ करने पर शरीर में कैसी प्रतिक्रियाएँ होती हैं, 5. शिवाम्बु से कौनसे रोग ठीक होते हैं? 6. स्वमूत्रपान शुरू करने से पूर्व क्या उसकी लैबोरेटरी जाँच आवश्यक है आदि। शिवाम्बु की परिभाषा, प्राचीनता के प्रमाण, योगशास्त्र में शिवाम्बु का स्थान, शरीर में मूत्र की निर्मिति कैसे, शिवाम्बु एनिमा, शिवाम्बु लंघन, विभिन्न बीमारियों में शिवाम्बु उपयोग की विधि इत्यादि विषयों पर लेखक द्वारा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्त में शिवाम्बु योग एवं निसर्गोपचार आश्रम 'आनन्द कुंज' के संचालन, मिशन, सुविधाओं के बारे उल्लेख है तथा इस चिकित्सा से लाभान्वित हुए लोगों के अनुभव भी प्रकाशित हैं।

अजातशत्रु अणगार- आचार्य श्रीमद् विजयरत्नसेनसूरीश्वर जी म.सा., ***प्रकाशक***-

दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा श्री सुरेन्द्र जैन, 47, कोलभाट लेन, आफिस नं. 5, डॉ.एम.बी. वेल्कर लेन, ग्राउण्ड फ्लोर, मुम्बई-400002, फोनः 022-22034529, मोबाइल :098920-69330, ***पृष्ठ***-192+22, ***मूल्य***-100 रुपये, ***वर्ष***- वि. सं 2069

यह ग्रन्थ मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के आचार्यश्री दानसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य का जीवन चरित्र है। मैत्री भाव के अजस्र झरने से संवलित हृदय के शत्रु कभी जन्मे नहीं, ऐसे 'अजातशत्रु' अणगार का यह चरित्त उनकी 33 वीं वार्षिक तिथि के प्रसंग पर प्रकाशित हुआ। जन्म से लेकर समाधिमरण तक की 50 वर्ष की संयम यात्रा का संयोजन लेखक मुनि श्री द्वारा संक्षेप में किया गया है। तदनन्तर उनकी विशेषताओं जैसे निःस्पृहतामूर्ति, गुणदृष्टि, अध्यात्म-साधना, अतुल सहनशीलता आदि का वृत्तान्त सहित उल्लेख है। 'विविध प्रेरक प्रसंग' शीर्षक के अन्तर्गत आचार्यों, मुनिराजों, श्रावकों के लिपिबद्ध अनुभवों का संकलन है। अन्त में श्री भद्रंकर विजयजी गणिवर्य के शिष्य, प्रशिष्य एवं निश्रावर्ती महात्माओं की सूची दी गई है। आर्ट पेपर पर प्रकाशित इस पुस्तक में अजातशत्रु अणगार एवं उनके गुरुवरों के चित्र भी सम्मिलित किए गए हैं तथा संस्कृत, हिन्दी और गुजराती में उनके स्तुति-पद्य भी हैं।

चिन्तन-तनया- पं. शान्तप्रकाश सत्यदास, ***प्रकाशक***- अनन्तानन्द प्रकाशन, स्टार स्टूडियो, इन्दिरा चौक, नागदा जंक्शन-456335 (मध्यप्रदेश), ***पृष्ठ***-160, ***मूल्य***-200 रुपये, सन्-2012

इस पुस्तक में लेखक के चिन्तन से प्रसूत 941 सूक्तियों का संग्रह है। संतोष, तृष्णा, ब्रह्मचर्य, शील, क्रोध, हैवानियत, अहंकार, धर्म, चरित्र, काम एवं सामान्य विषयों पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

ग्रीष्मकालीन शिविर पर अभिमत

श्री मनन डांगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविर की एक से बढ़कर एक परियोजना (Project) हम सब बच्चों के मन को बहुत लुभाती है। शिविर (3 मई से 8 जून 2014) के अन्तर्गत मदनगंज में बच्चों ने बाल मेला, नाटिकाओं और सुपात्रदान जैसी एक्टीविटी से जैन धर्म की फिलोसोफी सीखी और ज्ञान की चाँदनियाँ फैलाई हैं। शिविर के समापन पर हम सब अंकल जितेन्द्र जी डागा का अभिनंदन करते हैं और खूब बधाई देते हैं।

-सुपुत्र श्री मनीष जी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

शिविर रिपोर्ट

ग्रीष्मकालीन शिविर बने नवपीढ़ी के लिए वरदान

श्री जितेन्द्र कुमार डागा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा विगत पाँच वर्षों से बालक-बालिकाओं को आध्यात्मिक संस्कारों से सम्पन्न बनाने के उद्देश्य से ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष यह शिविर 23 मई से 8 जून 2014 तक देश के 52 स्थानों पर (जयपुर एवं जोधपुर को छोड़कर, वहाँ पृथक से आयोजन होता है) आयोजित हुए, जिनमें लगभग 5000 बालक-बालिकाओं, किशोर-किशोरियों ने ज्ञानार्जन किया। आगम-अध्येता, श्रद्धा, उत्साह एवं कर्मठता के पर्याय युवारत्न श्री जितेन्द्र जी डागा भावी पीढ़ी को संस्कारित करने में जुटे हैं। व्यस्तता में भी वे इन शिविरों की तैयारी जिस निष्ठा एवं तत्परता से करते हैं, इससे मन को प्रमोद होना स्वाभाविक है। हांगकांग के श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्नों के सहयोग से युवक परिषद् द्वारा आयोजित इन शिविरों का अनेक गणमान्य श्रावकों एवं युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा ने अवलोकन किया है। उसी के आधार पर प्रस्तुत है यह शिविर रिपोर्ट।

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम वाणी आचारांग सूत्र (अ. 2 उद्दे. 1 सूत्र 71) में वर्णन आता है-**खणं जाणाहि पंडिए**-टीकाकार उपलक्षण से अर्थ की विवेचना करते हुए कहते हैं कि जो क्षण (समय) को (वर्तमान को) जानते हैं वे पंडित है, ज्ञानी हैं। समय की तीव्र गति से बदलती धार को जानते हुए, समझते हुए आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सदैव नवपीढ़ी में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण की सतत प्रभावी प्रेरणा, अनुकम्पा रही है। यूं तो अतीत काल से ही मानव जीवन के साथ अध्यात्म एवं विज्ञान का गहरा संबंध रहा है। ये दोनों सत्य के अन्त:स्थल को समुद्घाटित करने वाली दिव्य दृष्टियाँ हैं। अध्यात्म आत्मा का विज्ञान है। वह आत्मा के शुद्ध-अशुद्ध स्वरूप का, बंध-मोक्ष का, शुभ-अशुभ परिस्थितियों का, ह्रास एवं विकास का गंभीर एवं गहन विश्लेषण है तो विज्ञान भौतिक प्रकृति की गुरु-गंभीर ग्रन्थियों को सुलझाने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। उसने मानव जीवन के तन, मन और इन्द्रियों के संरक्षण में विविध आयाम स्थापित किये हैं। अध्यात्म जीव की अंतरंग धारा का प्रतिनिधित्व करता है, तो विज्ञान बहिरंग धारा का नेतृत्व करता है। बहिरंग जीवन में किसी प्रकार की विशृंखलता न

आए, द्वन्द्व समुत्पन्न न हो, इसलिए अंतरंग दृष्टि की आवश्यकता है। उचित समय पर किये गये संस्कारों के बीजारोपण से अंतरंग दृष्टि सदैव निर्मल, धर्मोन्मुख एवं व्यसनों से विरक्त बनी रहे इस हेतु ज्ञानी गुरु भगवन्तों की पावन कृपा से आचार्य प्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्म शताब्दी वर्ष पर जब श्रद्धा की हिलोरें संत भगवन्त एवं जन-जन के हृदय स्थल पर उमड़ रही थी तब शिक्षा-विनय की राह को प्रशस्त करने वाले ग्रीष्मकालीन शिविरों का कई नवीन स्थलों पर सूत्रपात हुआ। सुकोमलता को तज आने वाले नन्हे-नन्हे बालक-बालिकाओं, संघ की सुदृढ़ नींव रखने हेतु कलेजे की कोर को भेजने वाले माता-पिता, बिना अपेक्षा समर्पण एवं उत्साह से परिपूर्ण शिक्षकगण, स्थान-स्थान पर तन, मन और धन से संघ-सेवा देने वाले अनुभवी एवं युवा कार्यकर्त्ता इस कार्यक्रम को प्रगतिशील बनाने में अहम भूमिका वाले रहे हैं। यह शिविर का कारवाँ अपने पंचम वर्ष की ओर अग्रसर था। भगवती सूत्र शतक 6 उद्दे. 7 में पाँच वर्ष को एक युग कहा गया है। अतः उनसे युग के इस चरम समय को विशेष प्रयासों से ही नहीं, अपितु उत्साह के साथ उत्सव की भाँति परिणत करने का एक निवेदन किया गया।

निवेदन करने के साथ अल्प समय में ही शिविर की रूपरेखा, अध्यात्म एवं विज्ञान का अद्भुत समन्वय करते हुए सरल एवं आधुनिक संसाधनों से बालक-बालिकाओं तक धर्म के रहस्य को पहुँचाने हेतु शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम के साथ सुपात्रदान-विवेक, नैतिक-सामाजिक विषयों पर प्रदर्शनी एवं भजन आधारित नाटिकाओं पर प्रतियोगिताओं की संरचना की गई। विभिन्न स्थलों पर सम्पर्क, सामग्री का संग्रहण, वितरण, शिविर के कार्यक्रमों की संरचना, कार्यक्रमों की क्रियान्विति हेतु संयोजकों से संवाद इत्यादि सारे कार्य 40 दिन में गुरु भगवन्तों की असीम कृपा एवं साथीगणों के संबल एवं आशातीत उत्साह से परिपूर्ण हो गये। 23 मई, 2014 का वह दिवस एक अद्भुत संदेश लेकर आया। नन्हे-नन्हे बालकों के कलरव से मई-जून की गर्मी में स्थानकों में धर्म गंगा बहने लगी। जय जिनेन्द्र, प्रभु महावीर की जयनाद के साथ अब स्थानकों की दीवारें भी सजने को (प्रदर्शनी के माध्यम से) आतुर हो गयी थी। नाटिकाओं के माध्यम से भरत, धन्ना, शालिभद्र, चन्दनबाला के पात्र जन-जन में उभरने वाले थे। सुपात्रदान-विवेक के माध्यम से प्रभु महावीर, सुबाहु कुमार जैसी आधारशिला यहाँ तैयार होने वाली थी। उसी तैयारी का जयनाद-शुभ संकेत था कि रजिस्ट्रेशन से पहले ही दिन 10% अधिक शिविरार्थी स्थलों पर आये, दूसरे-तीसरे दिवस संख्या और बढ़ी एवं जयपुर-जोधपुर से अतिरिक्त 52 स्थलों पर 5,000 शिविरार्थी ज्ञानार्जन हेतु अध्ययनरत हो गये और फिर चला शिविरार्थियों, शिक्षकों एवं संयोजकों से मिलने हेतु कार्यकर्त्ताओं का दौर।

मदनगंज-किशनगढ़ के रमणीक स्थानक पर जब आदरणीय श्री सुरेशचन्दजी कोठारी, कोषाध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, सह-संयोजक श्री नीलकंठजी (शेरुजी) भंडारी के साथ पहुँचे तो अध्ययनरत शिविरार्थियों को देख सभी का मन प्रसन्नता से झूम उठा। सुंदर शुरुआत शुभ ही शुभ का संकेत दे रही थी। शिविर के चौथे दिन ही कई ऐसे शिविरार्थी थे जो प्रथम बार आये थे एवं लोगस्स तक पहुँच गये थे। उनकी सामायिक शिविर में पूर्ण हो जायेगी यह प्रबल संभावनाएँ दिखाई दे रही थीं। व्यवस्थाओं में आदरणीय श्री राजेन्द्रजी डांगी, महेन्द्रजी डांगी, मदनसिंहजी कुम्भट, संदीपजी जामड़, विकासजी महनोत, मनोजजी मेहता के साथ कई श्राविकाएँ पूर्ण उत्साह से शिविर का संचालन कर रही थीं। यहाँ पर 130 की संख्या थी। यहाँ हुए धार्मिक मेले के आयोजन में 700-750 श्रावकजन उपस्थित थे। सुश्रावक श्री इन्दरचन्दजी हरकावत फरमा रहे थे कि प्रायोगिक पद्धति से आगम ज्ञान शिविरार्थियों के मानस स्थल पर अंकित हो गया था उसका प्रभाव ऐसा था कि जो पीढ़ी, गूढ़ विषयों पर दिये जाने वाले शिक्षण से अनुत्सुक रहती है वह पीढ़ी नवजोश, उत्साह से लोक के नक्शे में एक-एक नरक में कितने नरकावास होते हैं उससे परिचित हुई तथा पर्यावरण पर, माता-पिता की सेवा पर अपनी बात को बड़े प्रभावक ढ़ंग से कहने को आतुर थी। जिन विषयों पर चर्चा करते जिस युवा पीढ़ी को बोरियत महसूस होती थी वह आज उस विषय के प्रभावी प्रस्तुतकर्त्ता के रूप में उभर रही थी। यह मात्र किशनगढ़ की ही स्थिति नहीं थी, हर क्षेत्र में यही सुन्दर परिदृश्य था। **वैशाली नगर-अजमेर** में विगत चार वर्षों के अनुभव ने एक अलग ही आदर्श उपस्थित किया था। अध्ययन का वातावरण सुरम्य था। वहाँ की श्राविकाएँ श्रीमती मंजूजी कोठारी, नीलमजी, श्री पीपाड़ाजी एवं श्री रमेशजी सिंघी आदि के अथक प्रयासों से शिविरार्थियों का अध्ययन बहुत ही प्रेरणास्पद था। पाँच दिनों में उपयोग, कर्म प्रकृति, संज्ञा के थोकड़े को अच्छी तरह समझने सीखने वाले शिविरार्थी भी थे। शिविर में पहली बार आये एक मंदिरमार्गी बालक ने एक घंटे में मात्र सुनकर ही 67 बोल के प्रथम तीन सूत्र यादकर हमें बहुत स्पष्ट रूप से सुनाये। छोटी बालिकाएँ प्रतिक्रमण कंठस्थ करने की ओर बढ़ रही थीं। तीन-चार साल के बालकों द्वारा जब कविता सुनाई गई, "घर जायें तो मम्मी डाँटे, स्कूल जायें तो टीचर डाँटे, इससे तो बढ़िया दीक्षा लेकर कर्म-काटें" संस्कारों के ऐसे सिंचन को देख सभी का मन प्रफुल्लित हो गया। यहाँ पर 48 की संख्या थी। **महावीर कॉलोनी, अजमेर** में कटारिया सा एवं श्राविकाओं ने पूर्ण अनुशासन के साथ शिविर को व्यवस्थित कर रखा था। जिस तरह अध्ययन गति पकड़ रहा था उससे कम से कम 40-50 नये बच्चे सामायिक सूत्र कंठस्थ करने की ओर बढ़ रहे थे। सभी शिविरार्थी श्वेत परिधान में आकर्षक लग रहे थे। श्वेत परिधान में वहाँ की धवल सेना उज्ज्वल भविष्य का संकेत कर

रही थी। यहाँ पर संख्या 135-140 के लगभग थी। **किशनगढ़ शहर** में जाते ही श्रीमती फूलवंतीजी एवं अन्य श्राविकाएँ शिविरार्थियों के साथ 'दुनिया में देव अनेकों है' भजन का उच्चारण कर विशिष्ट माहौल का सृजन कर रहे थे। उन सभी श्राविकाओं ने अपने स्तर पर जी-जान लगा रखी थी। स्वाभिमान एवं पुरुषार्थ दोनों का अद्‌भुत समन्वय था। इसी वजह से वहाँ के शिविरार्थियों में एक विशेष अध्ययन की ज्योत थी। सृजनात्मक शक्ति थी। उसी शक्ति के फलस्वरूप अभयदान आदि पर जो पोस्टर वहाँ देखे, वे सभी को हर्षित करने वाले एवं कल्पनातीत थे। छोटे-छोटे बालकों की ऊँची उड़ान, ऊँची सोच को जीवंत कर रहे थे। **दूदू क्षेत्र** विशेष है। जयपुर के करीब होने से सभी सम्प्रदाय के संत-संतियों का समागम मिलता है। गुणवत्ता के बीज वहाँ मौजूद थे। जैनेतर (अग्रवाल परिवार) बालिकाएँ भी इसी शिविर में आकर लोगस्स तक सीख गई थी। अध्यक्ष श्री विनोदजी मेहता, श्रीमती प्रमिलाजी मेहता, श्री सुरेन्द्रजी कोठारी बच्चों को नियमित संभालते थे।

पल्लीवाल क्षेत्र में आदरणीय श्री वीरेन्द्रजी जामड़, सह-संयोजक शैलेन्द्रजी कोठारी एवं क्षेत्रीय प्रधान शीतलजी जैन के साथ जो छटा देखी वह अद्वितीय एवं विलक्षण थी। इसका मुख्य कारण रहा कि शिविरों की तैयारी जब जयपुर में पूरे जोर-शोर पर थी तब प्रधानाध्यापक श्री अशोकजी जैन, हिण्डौनसिटी का पधारना हुआ। शिविर की तैयारी को देखकर वे भाव-विभोर हो गये और साथ ही साथ उन्होंने शिविर पूर्व पल्लीवाल संभाग का क्षेत्रीय सम्मेलन कर शिविर की पूर्ण जानकारी सभी तक पहुँचाने हेतु कमर कस ली। पल्लीवाल क्षेत्र के सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधि मण्डल हिण्डौनसिटी पधारे, शिविर के सम्बन्ध में बहुत सार्थक चर्चा हुई। हर पहलू को बड़ी गौर से सभी ने समझा एवं आशातीत क्रियान्विति की। जब **गंगापुरसिटी** गये तो वहाँ सभी बालिकाएँ भी शिविर के निर्धारित परिधान में ही थीं। बालक सामायिक परिधान में थे। जब सभी क्रम से वहाँ बैठे तो पूरा स्थानक का हाल 135-140 श्वेत साधकों से शोभायमान हो रहा था। अध्ययन बढ़ रहा था। दो प्रधानाध्यापक आकर वहाँ सेवाएँ दे रहे थे। श्री धर्मेशजी जैन, नवीनजी, अमितजी सहित युवकसंघ एकनिष्ठ समर्पित था। **हिण्डौनसिटी** में उत्साह का आलम ही अलग था। प्रधानाध्यापक श्री धर्मचन्दजी जैन, मूलचन्दजी जैन एवं युवा संजयजी आदि बहुत पुरुषार्थ कर रहे थे, उसका प्रतिफल रहा कि वर्धमान नगर में अलग सेंटर करने के बावजूद भी यहाँ पर 200 की संख्या यथावत् थी। एक पाँच साल की बालिका आश्री जैन ने पाँच दिन में पूरा सामायिक पाठ कंठस्थ किया एवं कम से कम 70-80 नये सामायिक पाठ सीखने वाले प्रयत्नशील थे। दशवैकालिक सूत्र, भक्तामर स्तोत्र, समितिगुप्ति, उपयोग के थोकड़े इत्यादि में भी शिविरार्थियों की गति बढ़ रही थी। **वर्धमान नगर** की गुणवत्ता बहुत उत्तम थी। वर्धमान नगर

हिण्डौनसिटी, महुआ (एक ब्राह्मण बालिका), देई, शहर सवाईमाधोपुर में पिछले वर्षों के मेधावी शिविरार्थी शिक्षण में सेवा दे रहे थे। पाँच वर्ष पूर्व शिविरार्थियों के समक्ष ज्ञाताधर्मकथांग में वर्णित धन्नासेठ एवं चार पुत्रवधुओं का उदाहरण दे रोहणी बन समाज में योगदान देने का निवेदन किया था, आज वह साकार हो उठा था। बड़े मनोयोग से शिक्षक संयोजक श्री अशोकजी जैन, धीरजजी एवं वहाँ की कार्यकारिणी ने मिलकर इसे आदर्श शिविर बना दिया था। वहाँ के बालक-बालिकाओं में सीखने की विशेष ललक थी। जिस तरह 14वाँ बोल एवं सामायिक के 32 दोषों को क्रमबद्ध पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सुनाया वह दृश्य अद्भुत था। सिखाने वाली ऐसी शिक्षिकाएँ धन्य हैं जो जिनशासन के प्रति अनुराग एवं समर्पण भाव से ज्ञानदान दे रही हैं। वर्धमान नगर में यह शिविर अनुशासन-संयोजन सभी क्षेत्रों की दृष्टि से अनुकरणीय था। संख्या लगभग 125-130 की थी। **महुआ** शिविर की शृंखला में एक विशिष्ट स्थान रखता है। प्रतिस्पर्धी शिविरों के आयोजन के बावजूद पूर्ण पुरुषार्थ से किये गये यहाँ के शिविर को देखने का हमें विशेष आकर्षण रहता है। उसकी मुख्य वजह हैं- श्री अशोकजी जैन, श्री श्रीपालजी जैन समेत सभी सुदृढ़-शिक्षकगण। इनके भागीरथी प्रयत्नों की वजह से एक-एक शिविरार्थी का उच्चारण शुद्ध था। वहाँ के शिविरार्थी को सुनने पर जयपुर में रहे पण्डित त्रिपाठी जी का सहज स्मरण हो आता है, जिन्होंने वहाँ के श्रावकों को बहुत शुद्ध भक्तामर सिखाया। शिविर की नई विधाओं की कुशल क्रियान्विति यहाँ के शिविर का एक विशेष आकर्षण है। बच्चों ने नाटिका की प्रस्तुति दी, तो सभी मंत्र मुग्ध हो गये। वहाँ शिविरार्थियों का शिक्षकों के प्रति एक विशेष सम्मान था। क्योंकि वे स्वयं बच्चों में संस्कार ड़ाल रहे थे। ऐसे शिल्पकारों को नमन, उनका शत-शत अभिनन्दन। **गंजखेरली** हम निर्धारित समय से 10 मिनिट पूर्व पहुँचे, लगभग 30%-40% शिविरार्थी आ गये थे। पहली बार समय पूर्व पहुँचने पर एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया, शिविरार्थियों के हाथों में पुस्तकें थीं। शिविर में जो सीखा, उसे सुनाने की उत्कंठा लिये पाठों को निरंतर याद कर रहे थे। न जाने हम से कौन-सा प्रश्न आगंतुक पूछ ले, यह उत्कंठा भी रही हुई थी। कोई भी एक मिनिट के लिए भी इधर-उधर नहीं देख रहा था। नजरें मात्र पुस्तकों पर थी। दो बजे तक उस हॉल में शिविरार्थियों की 100% उपस्थिति थी। श्री अमरचन्दजी एवं धर्मचन्दजी जैन तथा वहाँ के शिक्षकों के पुरुषार्थ से शिविर अपूर्व सफलता की ओर बढ़ रहा था। शिविरार्थियों ने 'सुन सजनी सच कह कथनी' पर एक दिन की तैयारी में आकर्षक प्रदर्शन किया। शिविरार्थियों का अध्ययन बहुत सुंदर था। कोई पुच्छिंसु णं, कोई दशवैकालिक सूत्र का तीसरा अध्ययन, तो कोई समिति-गुप्ति, तो कोई उपयोग या कर्म प्रकृति का थोकड़ा सुना रहा था। सभी बच्चे चाह रहे थे कि हमसे भी पूछा जाये। उत्साह से मिले उन जवाबों में

आत्मविश्वास झलक रहा था। 'इच्छाकारेणं' का पाठ अर्थसहित शृंखलाबद्ध तरीके से सुनाया उसे सुनकर कोई भी दांतोंतले अंगुली दबा सकता था। जब लघुदण्डक में वैमानिक देवों की स्थितियों को सरलता से याद करने का फार्मूला (तरीका) उनके सामने रखा तो वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्दजी कहने लगे कि यह पाठ्यक्रम में भी आना चाहिए। संयोजक श्री अमरचन्दजी जैन का उत्साह देखने लायक था। उनके मुख से जब यह सुना कि शिविर हेतु अब भामाशाह गाँव-गाँव में हो गये हैं। लोग आगे आकर योगदान देने को इच्छुक रहते हैं। इस बात को सुनकर हृदय को असीम संतोष मिला कि अब शिविर सरिता निरंतर प्रशस्त होती रहेगी। एक अद्भुत घटना घटी, हम गंजखेरली शिविर से निकल रहे थे तब एक पाँच वर्ष की बालिका रुआँसा चेहरा लिये पास आई। पूछा, क्या हुआ? अंकल आपने सबसे पूछा मुझसे नहीं पूछा। क्या याद किया? उसकी उत्कंठा को देख मैं बैठ गया बोला, सुनाओ तुमने क्या याद किया। 'इच्छाकारेणं' का पाठ सुनाने के बाद जब उसकी प्रशंसा की तो उसके चेहरे पर एक रोमांचक खुशी थी। 46 डिग्री तापमान की उस प्रचण्ड गर्मी में जब आसमान से शोले बरस रहे थे एवं धरती झुलस रही थी उसकी प्यारी, मोहक मुस्कान ऐसी शीतलता दे गई कि जीवन भर वह स्मरण में रहेगी। संख्या लगभग 150 तक पहुँची। **नदबई** में सरपंच श्री ज्ञानचन्दजी जैन, नरेशजी जैन, सतीशजी जैन, सुरेशजी जैन आदि के समन्वित शिष्ट मंडल ने जब जाते ही अभिवादन किया तो आपसी समन्वय, प्रेम एवं कार्य के कुशल निष्पादन हेतु सभी के प्रयासों की एक अनोखी किरण दिखाई देने लगी। जैसे ही अंदर गये तो विभिन्न विषयों पर होने वाली प्रदर्शनी का साकार दृश्य दिखाई दिया। मन को बड़ा संतोष हुआ। योजना की ऐसी सुंदर क्रियान्विति सभी को अभिभूत करने वाली थी। शिविर टीम के आधारभूत सदस्य श्री नरेशजी जैन ने एक मीठा उपालम्भ दिया जो बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि आपने तो हमारी नींद ही हराम कर दी। प्रदर्शनी हेतु बच्चों ने देर रात तक माता-पिता को घरों में जगाए रखा। सारे अखबार खंगाले, कम्प्यूटर पर ढूँढा। कुछ नया करने का जुनून ऐसा था कि शिविर समय के अलावा उन्हें सिर्फ प्रदर्शनी ही सूझ रही थी। जो समय शायद टीवी देखने या सोने में जाता, उस समय शिविरार्थियों में छिपी कला प्रतिभा उभर कर सामने आ रही थी। यहाँ संख्या 48 की थी। **भरतपुर वासनगेट** के शिविरार्थी बहुत धैर्यवान हैं। उन्होंने बड़े ध्यान से सारी बातों को सुन हृदयंगम किया। वहाँ के अध्यक्ष सरलस्वभावी श्री धर्मेन्दजी, युवा साथी श्री बंटीजी आदि सभी पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। यहाँ संख्या 85 थी। **मौहल्ला गोपालगढ़ भरतपुर** में श्री प्रेमचन्दजी जैन, बाबूलालजी, पारसजी के साथ इस बार युवा शिक्षिकाएँ विलक्षण योगदान दे रही थीं। बच्चों को ऐसे अनुभवियों से बहुत कुछ सीखने को मिल रहा था। इंजीनियरिंग की परीक्षा दे रहे छात्र भी शिविरार्थियों के मध्य सीखने

की पूर्ण ललक के साथ मौजूद थे। शिविर में जो सीखा उसकी प्रस्तुति बहुत सुंदर ढंग से की गई। **हरसाना, मण्डावर, खोह क्षेत्र** में हमारा जाना नहीं हुआ। मन में थोड़ा ग्लान भाव भी था, नहीं जाने के कारण एकाएक अलवर से श्री क्रान्तिचन्द जी मेहता के समाचार आये कि शिविर की वजह से उनके परिवार के छोटे बालकों ने जिन्हें नवकार ही याद था, उन्होंने सामायिक पूर्ण कंठस्थ कर ली है, इस बात से प्रेरित हो वे शेष क्षेत्रों में पधार रहे हैं। अलवर में मंजू योगेशजी पालावत, अशोकजी पालावत का प्रयास भी उल्लेखनीय रहा। **मण्डावर** एवं **हरसाना** में वीर परिवार सहित सिद्धांत शाला के छात्र प्रशंसनीय प्रयास कर रहे थे। **खोह** में श्री प्रसन्नजी आदि व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से समझ क्रियान्वित करते हैं।

पोरवाल क्षेत्र आचार्य भगवन्त के प्रवास से सरसब्ज था। शहर सवाईमाधोपुर में शिविरार्थियों की 180-200 की संख्या गुणात्मक थी। बालक रात्रि के एक बजे तक जाग कर प्रदर्शनी के पोस्टर तैयार कर रहे थे। चातुर्मास में संत-सती भगवन्तों की महती कृपा से सीखे हुए सामायिक-प्रतिक्रमण इत्यादि की पर्यटना यहाँ की एक विशिष्टता थी। वीरत्थुई, दशवैकालिक सूत्र, रत्नाकर पच्चीसी, गत-आगत, नवतत्त्व आदि के जानकार शिविरार्थी तैयार हो रहे थे। गत वर्ष शिविर में आवागमन एवं दीक्षा आदि के अत्यधिक कार्य की वजह से थोड़ी-सी ढील लग रही थी। इस कारण सवाईमाधोपुर क्षेत्र में इस बार विशेष प्रयास किये गये। शिविर के पूर्व क्षेत्रीय मीटिंग हुई, जिसमें परामर्शदाता श्री रवीन्द्रजी जैन एवं उपाध्यक्ष श्री पवनजी ने सभी को शिविर की कार्ययोजना समझाई। कुछ प्रश्न अनुत्तरित रहे, तो प्रधानाध्यापक श्री त्रिलोकजी जैन, रवीन्द्रजी का शिष्ट मंडल जयपुर आया। जयपुर में हो रही तैयारी को देख श्री त्रिलोकचन्दजी ने आत्मीय भावों से अनुमोदना की। फिर पूर्ण मनोयोग के साथ सवाईमाधोपुर में स्थान-स्थान पर जाकर उन्होंने प्रक्रिया को समझ कुशल क्रियान्विति में सराहनीय सहयोग दिया। **बजरिया, आलनपुर** में महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. के प्रवास से अपूर्व विशेषता आ गई थी। आलनपुर में अध्ययन बहुत उत्तम था। साथ ही प्रदर्शनी हेतु बनाये गये 3डी मॉडलस् सभी को मोहित करने वाले थे। **महावीरनगर मंडी** में धनसुरेशजी जैन की टीम का प्रयास सदैव प्रशंसनीय रहा है। धार्मिक मेले में चन्दनबाला की नाटिका की प्रस्तुति इतनी मार्मिक थी कि लोगों की आँखों से अश्रुधाराएँ निकल पड़ी। पोरवाल क्षेत्र की एक विशेष बात यह है कि यहाँ श्रद्धा का वेग-संवेग भाव विलक्षण है। ज्ञान में ज्ञपरिज्ञा एवं प्रत्याख्यान परिज्ञा दोनों का समावेश होता है। जानकर जीवन में उतारने का जो दृश्य यहाँ के शिविरार्थियों में दिखाई देता है वह विरल है। **हाउसिंग बोर्ड** में लगभग 90 शिविरार्थी बड़े अनुशासित ढंग से अध्ययन कर रहे थे। छोटे-छोटे बालकों ने प्रतिक्रमण की ओर डग बढ़ा लिये थे। माहौल अप्रतिम था। अनुभवी शिक्षक सेवाएँ दे रहे थे। भजन

आधारित नाटिकाएँ, प्रदर्शनी की तैयारी उल्लेखनीय थी। **आदर्शनगर** ने शुरुआती झिझक के बाद एकाएक ऐसी रफ्तार पकड़ी की अनुमानित शिविरार्थियों से दुगनी संख्या वहाँ हुई। अध्यक्ष श्री जीतमलजी का प्रयास एवं संघ-हित चिंतन दोनों प्रशंसनीय थे। **जैनपुरी** की ओर कदम बढ़ गए। मीणा बहुल जैन समुदाय का गाँव जिसमें प्रभु वीर के प्रति श्रद्धा की लहरें उमड़ती दिखाई देती हैं। बालक-बालिकाएँ बड़ी उत्सुकता से इंतजार कर रहे थे। प्रमुख जवाहरात व्यवसायी आदरणीय श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत एवं श्री मेघराजजी का साथ था। शिविर वाले भैया के नाम से प्रख्यात पवनजी, आदरणीय घनश्यामजी जैन आदि भरी दोपहर में मोटरसाइकिल पर वहाँ पधारे हुए थे। पहुँचते ही बड़ी संख्या में ग्रामवासी भी पधारे। शिविरार्थियों ने नवकार से णमोत्थुणं को कंठस्थ करने की मुहिम छेड़ रखी थी। पहले दिन 55 शिविरार्थी थे, पर जब शिविर का सामान पहुँचा एवं उन्होंने देखा तो एकाएक दूसरे दिन संख्या 95 पर पहुँच गई। सामायिक कंठस्थ करने पर एक अवार्ड (सुंदर-सी डायरी) प्राप्त करना सभी के बस में था तो चल पड़ी एक स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा। बालक-बालिकाओं के जोश, कही बात को बड़े एकाग्रचित्त से सुनने की योग्यता एवं गाँव की भावना को देख जिस निर्माणाधीन स्थल पर सभी शिथिरार्थी एकत्रित हुये थे, उसके निर्माण कार्य को पूर्ण करने की स्वीकृति श्री प्रकाशचंद जी हीरावत ने बिना किसी भूमिका के सहज ही वहाँ प्रदान कर दी। त्रसहिंसा रहित, कर्मादान रहित व्यापार से अर्जित सम्पत्ति से निर्मित यह भवन धर्म साधना में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि का साधन बनेगा, यह प्रबल आशा है। खेरली में शिविरार्थियों को दोपहर की प्रचण्ड धूप में आना पड़ा। इस हेतु हमने क्षमायाचना की। तब श्री अमरचन्दजी के मुख से शब्द निकले कि हमारे बालक-बालिका खरा सोना हैं। आप कसौटी पर कसने आये हैं, हमें तो इस बात की खुशी है कि हम खरे निकले हैं। यह बात जैनपुरी वालों के सामने रखी और कहा कि यहाँ के शिविरार्थी भी खरा सोना है तो विराजित सभी के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गई। गर्मी काफूर हो गई। **अलीगढ़-रामपुरा** एक आदर्श क्षेत्र है। जब भी अष्टमी-चतुर्दशी के पचक्खान हेतु निवेदन किया जाता है यहाँ के अधिकांश शिविरार्थी नियम-प्रत्याख्यान लेते है। अध्ययन की निरंतरता के साथ आपसी जुड़ाव के कारण प्रतियोगिताओं की अद्भुत तैयारी वहाँ थी। **उनियारा-पचाला** में शिविरार्थी उत्साह से लवरेज हो आते थे। संयोजकों के साथ शिक्षिकाएँ बहुत पुरुषार्थ कर रही थीं। प्रतियोगिताओं हेतु तैयारी जबरदस्त थी। संख्या 180-190 रही। **चौथ का बरवाड़ा** ने पिछली प्रतियोगिता बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत की थी, उसी परंपरा को कायम रखते हुए इस बार भी तैयारी पूरे जोर-शोर पर थी। श्राविका श्रीमती चंचलबाईजी एवं श्रावक श्री उम्मेदमलजी, भैरूलालजी, महेन्द्रजी आदि का प्रयास बहुत सराहनीय था। एकजुटता एवं समन्वय का प्रयास कैसे समाज को प्रगतिशील

बनाता है इसका अनुपम उदाहरण है चौथ का बरवाड़ा। जो आत्मीय आतिथ्य यहाँ का श्रावक समाज देता है उससे सभी आगन्तुकों की कली-कली खिल जाती है। संख्या 90 की थी। **कुश्तला** में सरपंच श्री सुरेशजी जैन, भैरूलालजी आदि के प्रयास सराहनीय हैं। शिविरार्थियों द्वारा "आंसूडा ढलकावै म्हारी आंखडली" पर अद्भुत तैयारी थी। उपयोग, संज्ञा के थोकड़े, प्रतिक्रमण आदि में शिविरार्थी आगे बढ़ रहे थे। उच्चारण विशुद्ध था। बेहतर संचार-संवाद सुविधाओं के कारण कुश्तला क्षेत्र हो या कजगाँव, अलीगढ़-रामपुरा हो या अजमेर, महुआ हो या मेड़ता, पाली हो या पीपाड़सिटी हो, जलगाँव हो या ब्यावर सब जगह एक सा ही वातावरण था। संघ की ऐसी एकरूपता आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त की असीम कृपा से सदैव बनी रहे, यही प्रार्थना। **सुमेरगंज मंडी** में क्षेत्रीय प्रधान श्री राकेशजी, राजेन्द्रजी आदि का प्रयास सराहनीय था। शिविरार्थी बहुत जिज्ञासु एवं धर्मप्रिय थे। जब निवेदन किया गया कि आप भविष्य में संघ के कर्णधार बनने वाले हैं, आपकी जिम्मेवारी है कि अपने में छुपी प्रतिभा को समाज के सामने रखें तो गंभीर अंदाज में वहाँ बैठे शिविरार्थियों ने स्वीकृति दी, जिससे यह भान होने लगा कि शिविर का यह प्रयास सफलता की ओर है। इसी तरह स्वीकृति प्राय: हर क्षेत्र में मिली। तुंगियापुर नगरी की उपमा जिसे पूर्व में दी गई ऐसे क्षेत्र **देई** में प्रतिक्रमण हेतु शिविरार्थी वापस स्थानक आए। यहाँ के शिविरार्थी विशेष हैं जो जिज्ञासाओं की सूची तैयार रखते हैं। छोटी-छोटी बालिकाएँ गुरु-गंभीर प्रश्न पूछती हैं। बारह प्रतिमा, कालचक्र आदि पर अनेक प्रश्न उन्होंने पूछे। **दूनी** में जयाजी गोखरू के भागीरथी प्रयासों से बच्चों में विशेष जोश था। शिविर आवासीय बन चुका था। पुण्यशाली शिविरार्थियों को धर्म बोध देने स्वयं महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. पधारे।

धर्म नगरी **ब्यावर** के बरेली स्थानक में लगने वाले ग्रीष्मकालीन शिविर की ब्यावर के सभी बच्चों को इंतजार रहता है, वहाँ पर धर्म की अद्भुत फुलवारी खिली हुई थी। 200 शिविरार्थियों की संख्या के साथ साधु-साध्वियों के निरंतर विचरण से तत्त्व व धारणा की जानकार श्राविकाएँ अध्ययन-अध्यापन हेतु विशेष पुरुषार्थ कर रही थी। युवक परिषद् में सेवा की प्रकाशमान ज्योति थी। अनुभवी श्रावक श्री सुराणा सा, सिंघी सा, लक्खू जी भंडारी, मूलचंद जी भंडारी उनके उत्साह को शतगुणित कर रहे थे। महासती श्री संतोषजी म.सा. के शब्दों में संघ रत्न विरुद से उपमित युवा रत्न श्री मनीषजी मेहता, संदीपजी सुराणा सहित सम्पूर्ण युवक संघ के सामूहिक प्रयास से यहाँ की व्यवस्थाएँ अनुपम थी। प्रदर्शनी में 'नारी का सम्मान-घर में उतरा स्वर्ग विमान' विषय पर एक अन्त:स्थल को छू जाने वाला पोस्टर भी वहाँ देखा। गर्भस्थ शिशु की वेदना को प्रकट करने वाले ऐसे शिविरार्थी के हृदयस्थल पर बह रहा करुणा स्रोत उस कृति में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। प्रदर्शनी में

जिनशासन के इन भावी कर्णधारों की झलक दिखाई दे रही थी। बस संकेत करने की आवश्यकता है। आज के इन होनहार बालकों को, लक्ष्य को कैसे पूरा करना है, विषय की प्रभावी प्रस्तुति कैसे देनी है इन्हें बखूबी आता है। 84 गच्छों की हृदयस्थली रही मेड़ता में श्रद्धेय श्रीमंजूश्रीजी म.सा., मनोहरश्रीजी म.सा. आदि ठाणा शिविरार्थियों को वीतराग वाणी का अमृतरस उंडेल रहे थे। सतीमंडल शिविर की गतिविधि से बहुत प्रमुदित था। कृपा के स्वर उनके मुखारविंद से झर रहे थे। ऐसा क्यों न हो जिनशासन की बगिया जिसका वे रक्षण कर रहे हैं जब उसे हरा-भरा देखते हैं तो आत्मीय भाव का आविर्भाव होना, अनुकंपा का निर्झर होना सहज है, स्वाभाविक है। श्रीमाल भगिनियों के साथ सुश्री बोरडजी आदि शिक्षिकाएँ, अन्त:करण से प्रेम उंडलने वाले नीलेशजी, अजीतजी कांकरिया, बागमारजी, ओस्तवालजी के सत्प्रयासों से शिविर विशेष महक लिये हुए था। भजन आधारित नाटिकाओं में हृदय को छूने वाला निर्देशन था। एक अग्रवाल शिविरार्थी ने लोक का 3डी माडल तैयार किया था। उस माडल की व्याख्या सभी के समक्ष उस नन्हे बालक ने की। नरक के लोमहर्षक चित्रण की प्रस्तुति थी। नव पीढ़ी से रुचिकर तरीके से तत्त्वों की जानकारी, लोक भावना का अन्त:स्थल से स्फुरण करने का यह सामयिक प्रयास सभी के मन को छूने वाला था। सुपात्रदान एवं विवेक से सम्बद्ध प्रतियोगिता की तैयारी प्रगतिशील थी। शिविरार्थियों का शिविर से विशेष लगाव था। महासती जी फरमा रहे थे कि अवकाश में मुम्बई से आई छात्राओं के जाने की बात आई तो आँखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। यही प्रार्थना वे अभिभावकों से कर रही थी कि आप हमें यहाँ महासतीजी के पास छोड़ जाएं। घर पर कोई नहीं, पर यहाँ महासतीजी के पास तो कोई डर नहीं है। छ: काया के प्रतिपालकों के पास हमें छोड़ जाएँ। जब अभिभावक नहीं माने तो बड़े भारी मन से उन्होंने विदा ली। **गोटन** शिविर की ख्याति महासती मंडल के मुख से मेड़ता में हम सुन आये थे। दोपहरी में भी बच्चों में ऐसा उत्साह कि जो शिविरों में स्मरण किया तथा नया सीखा उसे आगन्तुकों को सुनाने के लिए विशिष्ट तैयारी की हुई थी। श्रेणिक-अनाथी की भावपूर्ण नाटिका दिखाई। ओस्तवाल, बाफणा, चौपड़ा परिवार के बालकों में ज्ञानार्जन की रूचि प्रशंसनीय थी। गुरुवर्या शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुंदरी जी म.सा. के प्रति आदर्श श्रद्धा रखने वाली, आत्मबल की अद्भुत धनी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. एवं सती मंडल ने शिविरों में हुये धर्म-ध्यान पर प्रमोद व्यक्त किया। दो-दो महापुरुषों की जन्मस्थली **पीपाड़सिटी** की भावी पीढ़ी इस संघ के लिए निश्चय ही आदर्श रूप रहेगी। भरी गर्मी में धैर्य के साथ किये गये निवेदन को बड़े भाव विभोर हो उन्होंने श्रवण किया। श्रद्धेय श्री गुणवंतमुनिजी म.सा. को भी बहुत प्रमोद था। पूरी कृपा बरसाते हुए जिनशासन के इस प्रभावक कार्य हेतु यथायोग्य आशीर्वचन उनके मुख से निकले। 'स्वच्छ

पर्यावरण स्वस्थता की ओर चरण' 'रहना पवित्र संभाल कर चारित्र' 'यौवन महकेगा जैसे इत्र' विषयों पर इचलकरंजी से आई छात्राओं ने रोचक प्रस्तुतियाँ दी। जम्बूद्वीप के नक्शे को भी बड़े मनोयोग से तैयार किया गया था। श्री सुमतिजी मेहता, जितेन्द्रजी कटारिया, परेशजी मूथा, नमनजी आदि युवाओं के साथ पुष्पाजी जैन आदि श्राविकाओं का योगदान भी सराहनीय था। **पालीमारवाड़** जाकर कई बातें सीखने को मिलती रही हैं। इस बार की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि विपिनजी बलोटा एवं मनीषजी पगारिया के नेतृत्व में नये युवकों का जुड़ाव शिविर से बहुत था। व्यवस्था संभालने वालों में कई नये चेहरे दिखाई दे रहे थे। पर शिक्षिकाएँ वो ही अनुभवी थीं। यहाँ पर श्री रतनजी डोसी की कक्षा बड़ी रोचक होती रही है। जब भी किताब (पाठ्यक्रम) में कहीं से प्रश्न पूछे जाते तो सभी के हाथ उत्तर देने को खड़े हो जाते हैं। इस बार यह बात मात्र उनकी कक्षा तक ही नहीं थी। अधिकांश में यही बात थी। गत-आगत पर 14 वर्षीय (खींवसराजी) एक शिविरार्थी ने अधिकारपूर्वक उत्तर दिये। गर्भज, श्रावक, देवलोक की गत-आगत पर उत्तर दिये मानो कोई कम्प्यूटर का बटन दबाया और उत्तर तैयार था। पाली का यह रूप प्रतीकात्मक है। ऐसी ही सुंदर परिणिति-स्थिति 52 क्षेत्रों के हर शिविरार्थी की थी। ऐसा वातावरण था कि कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था। कब 17 दिन व्यतीत हो गये किसी को मालूम ही नहीं चला। **नागौर** में सदैव शिविर का कार्य व्यवस्थित एवं सुचारु होता है। अग्रिम सोच के साथ यहाँ की गई व्यवस्थाओं से सदैव मन में निश्चिन्तता रहती है। नागौर के शिविर की नाटिकाओं की झलक What's App पर अपनी छाप छोड़ रहा था। बहुत सुंदर अभिव्यक्ति थी। प्रभावी परिदृश्य थे। अजीतजी भंडारी आदि का प्रयास सराहनीय था। **बाड़मेर** में तो मानो शिविरार्थियों का सैलाब ही उमड़ गया। संयोजक कह रहे थे कि मात्र मौखिक प्रचार से 200 से ऊपर शिविरार्थी हो गये। अगर थोड़ा-सा भी प्रचार-प्रसार करें तो अपने शिविर की ऐसी छाप है कि दूसरे दिन 500 शिविरार्थी आ जाएं। जितेन्द्रजी बांठिया, गोगडजी, कैलाशजी आदि के प्रयास प्रशंसनीय रहे। जोधपुर में उपाध्याय भगवंत, गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा की कृपा छाया में जितेन्द्रमुनिजी म.सा. फरमा रहे थे कि सभी संत भगवंतों को बहुत प्रमोद है। असर की आशा किये बिना कोई कसर मत छोड़ना। यह अमृत वाक्य उनके श्री मुखारविंद से निकले।

महाराष्ट्र क्षेत्र के **नासिक** में इसी वर्ष शिविरों का शुभारंभ हुआ। नवीन उत्साह से लबरेज वहाँ के अध्यक्षजी सहित सम्पूर्ण कार्यकारिणी आशीर्वचन देने को उपस्थित थी। स्वाध्यायी सौ.कां. मधुबालाजी ओस्तवाल सहित सभी संयोजक शिक्षकों ने शिविरार्थियों में अद्भुत उत्साह-आत्मविश्वास का संचार किया था। प्रथम वर्ष में अध्ययन अपने शैशवकाल में ही था, पर प्रयासों में कहीं भी कमी नहीं थी। जहाँ छोटे बालकों के साथ बोल-

बोलकर चौबीस भगवान, सोलह सतियाँ, विहरमान के नाम कंठस्थ कराये जा रहे थे, वहीं कई शिविरार्थी प्रतिक्रमण सीखने की ओर बढ़ रहे थे। **कजगाँव** में बच्चों ने एक अनूठा प्रयोग किया। इच्छा व्यक्त की कि हम प्रश्न पूछना चाहते हैं। इंटरव्यू करना चाहते हैं। कैसे शिविर की प्रेरणा मिली? आपके गुरु कौन हैं? शिविर हेतु सामग्री कैसे एकत्रित की जाती है? कैसे शिविरों का आयोजन होता है इत्यादि उनके द्वारा प्रश्न पूछे गये। शुद्ध-विशुद्ध अन्त:स्थल से हुई जिज्ञासाएँ उनकी अध्ययन-शोध की क्षमता की परिचायक थीं। व्रत-त्याग-प्रत्याख्यान का भी एक विशिष्ट माहौल महाराष्ट्र में रहा। कारण था कार्याध्यक्ष श्री महावीरचंदजी बोथरा, प्रमुख प्रशांतजी पारख, प्रधान श्री संदीपजी चोरड़िया, संयोजक श्री मनोजजी लोढ़ा ने आगे आकर अष्टमी-चतुर्दशी को हरी व रात्रि भोजन त्याग के प्रत्याख्यान लिये। कजगाँव में इन्हीं के सहयोग से शिविरार्थियों को जिज्ञासाओं का समाधान दे पाये। 'पाया है मानव का तन' नाटिका का सुंदर मंचन किया गया। सारे शिविरार्थी बड़े आदर भाव के साथ आगन्तुकों को कार तक छोड़ने आये। ऐसा लग रहा था मानों वे परिवार के कोई निकटस्थ सदस्य हों। उनकी आँखों में अपनापन था। यह अपनत्व सभी शिविर स्थलों पर था। आत्मीयता, अपनापन विकसाने का जो मूलमंत्र इन शिविरों का होता है वह सजीव होता चला जा रहा था। आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवंत की असीम कृपा से हुये इन शिविरों में भाग लेने वाले हर सदस्य का आत्मीय भाव अपने चरम पर था। **पाचोरा** प्रवीणता का पर्याय बन चुका था। शिविरों के आखिर पड़ाव में बच्चे कैसे निखर जाते हैं, यहाँ दृष्टिगोचर हो रहा था। प्रदर्शनी पर सम्पूर्ण समाज को आमन्त्रित किया गया। सभी मंत्रमुग्ध थे। सुपात्रदान एवं ईर्या समिति पर वहाँ के शिविरार्थियों ने अति सुंदर विवेचन किया। धर्मगाँव **जलगाँव** के युवक-संघ की सक्रियता हेतु सर्वत्र मुक्तकंठ से प्रशंसा के स्वर मुखरित हो रहे थे। प्रमुख श्रावक श्री दलुभाईजी चोरड़िया के मुख मंडल पर अपार खुशी थी। उन्हें बड़ा प्रमोद था कि आज भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के 79 के चातुर्मास के वक्त जो बीज बोये गये उसके फलस्वरूप सशक्त युवा संघ एवं प्रभावी बहुमंडल तैयार हो चुका है जो उनके द्वारा सिंचित वटवृक्ष को सदैव हरा-भरा रखेंगे। शिविर की शृंखला को सन् 1967 में सूत्रपात करने वाले श्रद्धेय श्री कानमुनिजी म.सा. को अन्त:स्थल से प्रमोद था। 'गुणिषु प्रमोदम्' की उनकी भाव छटा को देख पूज्य गुरुदेव का सहज स्मरण हो गया। आचार्य भगवंत को यथायोग्य वंदन के समाचार के साथ उन भावितात्मा अणगार ने पूर्ण कृपा बरसाई। महामुनि फरमा रहे थे कि संत गोचरी पर पधारे तो 'सुन सजनी कह कथनी' पर गाना कर्णगोचर हो गया। वहाँ नाटिका तैयार की जा रही थी। घर-घर यही माहौल था। **स्वाध्याय भवन जलगाँव** की विशिष्टता है विजयाजी मल्हारा के साथ वहाँ की अनुभवी श्राविकाएँ। ललाई के बार्डर वाली कुर्त्ती के

साथ वहाँ की बालिकाओं की अनुशासित छवि अनुपम थी। शिविरार्थियों को कुशल कुम्भकारों ने अद्वितीय रूप से ढाला था, जो अप्रतिम था। शिविरार्थियों ने 'कर्मों की रेखा न्यारी-न्यारी' पर एक सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। धार्मिक मेले का सुंदर आगाज सुनाई देने लगा। वर्धमान आयंबिल तप कर चुके महासती सुशीलाकँवरजी म.सा. के दर्शनों का भी यहाँ सौभाग्य मिला। पंकजजी मुणोत, एवंतजी बागरेचा का भी पूर्ण सहयोग था। दादाबाड़ी के सुरम्य माहौल में दो 12-13 वर्षीय बालकों के दर्शन हुए जो स्वाध्याय में सेवा देने गये थे। एक विरक्त आत्मा वहाँ परीक्षा दे रहे थे। सीए युवक एवं सुश्रावक जालमसिंहजी बाफणा के परिवार के सदस्य एवं मराठी भाषा की विशेषज्ञ श्राविकाएँ इस शिविर को आगे बढ़ाने में पूर्ण प्रयत्नशील थीं। यहाँ जैन जगत की एक विभूति श्री पंकजमुनिजी म.सा. के पावन दर्शन का सौभाग्य मिला। **जीवराज भवन** पर बड़ी गंभीरता से शिविरार्थी प्रश्नपत्र के उत्तर लिख रहे थे। वहाँ की श्राविकाएँ चाहती थीं कि शिविरार्थियों से संवाद करने के बाद ही अगले क्षेत्र में जाएं। उनकी भावनाओं का आदर करते हुये वहाँ रुके तो बच्चों ने जो स्नेह प्रदान किया तो ऐसा लगा कि 15-20 मिनिट की आतुरता में चले जाते तो शिविरार्थियों के इस प्रेम से वंचित रह जाते। कटारियाजी, शिक्षिकाएँ विशिष्ट योगदान दे रही थी। सागर भवन में वीरपुत्र धोकाजी, श्राविका सुराणाजी, सौ.कां. पारखजी आदि का सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा। **जैन भवन, जलगाँव** में एक अद्भुत दृश्य देखा। आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म.सा. पर प्रस्तुत नाटिका विलक्षण थी। धार्मिक मेले में जब इस नाटिका का मंचन हुआ तो सम्पूर्ण हॉल जय गुरु हस्ती हीरा-मान के नाद से गूंज उठा। जयनाद करते हुये विजयाजी मल्हारा इतनी भावविभोर हो गई कि उनके मुख से गुरु भगवन्तों की जय बहुत देर तक मुखरित होती रही। सारी सभा परम पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धानत थीं। शिविरार्थियों ने बहुत सीखा था। भक्तवत्सल देवेन्द्र सा सेठ का साथ था। रत्नों के पारखी ये युवा, चेतन रत्नों को देख बहुत प्रमुदित हो रहे थे। **फत्तेपुर** में भी श्री ईश्वरलालजी मंडलेचा आदि ने शिविर में अथक प्रयास किये।

कोटा में महावीर कॉलोनी एवं रामपुरा दोनों शिविरों में उत्साह था। सावन के मेघ अब इस क्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे। जिनवाणी की अपूर्व वर्षा यहाँ होने वाली थी। सावन पूर्व की हवाएँ प्रचण्ड गर्मी में शिविरार्थियों के हृदय को छू रही थीं। महावीर कॉलोनी में जिस भाँति सुपात्र दान पर एक छात्रा बोली वह अद्वितीय था। वाणी में ऐसी मिठास थी कि सभी छात्र व आगन्तुक एक टक से संतों की गोचरी के बारे में उत्सुकता से सुन रहे थे। रामपुरा में एक मेधावी छात्रा ने एषणा समिति पर बहुत सुंदर अभिव्यक्ति दी। वे सब अब अवसर आने पर पूर्ण भावना से फ़रसना कर शुद्ध होने को आतुर थे। श्री राजेन्द्रजी नवलखा, प्रदीपजी जैन,

रिषभजी जैन, अध्यक्ष श्री हनुमानजी, राजेन्द्रजी जैन आदि सेवाएँ दे रहे थे। यहाँ आचार्य भगवन्त, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि संत मंडल के दर्शनों का सौभाग्य सहज ही मिला। प्रचण्ड गर्मी में लू के थपेड़ों में विहार तथा मच्छरों के परीषह में आचार्य भगवन्त व संत-मण्डल की समाधि सराहनीय थी। शिविरों में हुये धर्म-ध्यान की जानकारी प्राप्त होने पर उन्होंने अति प्रमोद व्यक्त किया।

जोधपुर को जहाँ संघ की राजधानी कहा जाता है वही **चेन्नई** संघ की हृदयस्थली है। यहाँ के तत्त्वज्ञ युवा श्री मनोजजी सेठिया, वीरेन्द्रजी कांकरिया, अभयजी सुराणा, संदीपजी ओस्तवाल आदि सभी के लिए आदर्श हैं। कार्याध्यक्ष श्री विक्रमजी बाघमार, प्रमुख श्री भूरमलजी कर्णावट सहित युवक संघ कार्य संपादन की क्षमता लिये हुये हैं। संघ को ऐसे युवाओं से बहुत अपेक्षा है। भगवंत की असीम कृपा से स्वाध्याय भवन चेन्नई में एक आदर्श शिविर हुआ। सुपात्रदान-विवेक प्रतियोगिता में अद्वितीय उत्साह यहाँ था। सभी को यह प्रतियोगिता सामयिक एवं उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करने वाली लगी। भजन आधारित नाटिका को देख सभी के रोम-रोम पुलकित हो गए। सूरत में भी उपाध्यक्ष श्री राजीवजी नाहर एवं युवा साथियों के अद्भुत उत्साह से श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. के पावन सानिध्य में ज्ञानार्जन हुआ। एक मेधावी विरल आत्मा विरक्त बनी एवं पंच महाव्रत अंगीकार करने की राह पर चल पड़ी।

शिविर पूर्व तैयारी में आदरणीय श्री सरदारसिंहजी बोथरा, अशोकजी सेठ, प्रमोदजी हीरावत, प्रशांतजी कर्णावट सहित युवक संघ जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा, देवेन्द्रजी सेठ, कोषाध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, रितुलजी पटवा, सुभाषजी चोरडिया, वीरभ्राता श्री मनोजजी जैन, मनीषजी शाह एवं वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ जयपुर का महनीय योगदान रहा। निशाजी मेहता, मनीषजी मेहता, विकासजी मेहता की मधुर आवाज में भजन आधारित नाटिकाओं की रिकार्डिंग की गई। नाटिकाओं के लेखन में सुनीता नरेन्द्रजी डागा, सिंघी जी, मनीष जी मेहता का योगदान उल्लेखनीय रहा। पोस्टर सर्च में विकासजी गुंदेचा, सुश्री पटवा, सुमितजी सेठ ने सराहनीय प्रयास किया। **आभार** शासन सेवा समित के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत एवं सिद्धान्त शाला की संयोजिका श्रीमती सुमनजी कोठारी का जिनकी सतत प्रेरणा से अनेक मेधावी छात्रों ने शिक्षण में पूर्ण मनोयोग से योगदान प्रदान किया। विशेष धन्यवाद, प्रबन्धन के क्षेत्र में दुनिया की अग्रणी यूनिवर्सिटी **एचकेयू** के छात्र श्री वैभवजी डागा का जो वहाँ पर प्रतिभा निखारने के प्रयोगों के आधार पर हर वर्ष एक नई सोच के साथ प्रतियोगिताओं का आधार हमें देते हैं। पिछले वर्ष की प्रस्तुत प्रतियोगिता एवं इस वर्ष धार्मिक मेले का वैचारिक सोच हांगकांग से

ही आया था। आभार हांगकांग निवासी सुश्रावक श्री महेन्द्रजी संचेती, संजयजी कोठारी, अरूणजी बम्ब, रीतेशजी हीरावत, सुनीलजी जैन, सुनीलजी लुणावत, हेमेशजी सेठ, हेमंतजी संचेती, अनिलजी खटोड आदि का जिनके सहयोग व सम्बल से पिछले पाँच वर्षों से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन शिविरों का चिरस्मरणीय आयोजन हुआ। आभार अग्रज, आगम अध्येता, कर्मग्रंथ, गमा, संजया, नियट्ठा आदि अनेक थोकड़ों के जानकार हांगकांग में रहते नियमित दो-तीन सामायिक एवं कल्याणमंदिर तथा महावीराष्टक का पाठ किए बिना निद्राधीन नहीं होने वाले अग्रज श्री राजेन्द्रजी डागा का, जिन्होंने हर क्षण संबल प्रदान किया। आभार संघ संरक्षक श्रीमान् मोफतराज सा मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्रीमान् रतनलाल सी. बाफणा सा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक के संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र सा बाफणा, श्राविका संघ, युवक संघ के प्रत्येक पदाधिकारियों एवं सदस्यों का जिन्होंने शिविर सरिता के निर्मल प्रवाह में सहयोग दिया। विशेष विशेष आभार आदरणीय पिताश्री धर्मश्रद्धा की जीवंत प्रतिमूर्ति, संघनिष्ठ, सदैव संघहित चिंतक श्री विमलचन्दजी डागा का, जिनके आशीर्वाद से यह कार्य संपादित हुआ।

वर्ष 2014 के शिविरों में करीब दो लाख सामायिक हुईं। सबसे बड़ी उपलब्धि यही थी कि बालकों के स्थानक पर लगातार 15 दिन पाँव पड़े। धर्मस्थान में जाने का संकोच मिटा। यह सब हुआ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., प्रभावक संत श्री गौतममुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री नंदीषेणजी म.सा. की असीम कृपा से। कार्य को जब प्रगति की आवश्यकता पड़ी तब-तब जयपुर में विराजित तत्त्वज्ञ श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की संयमनिष्ठ, श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. की मांगलिक सुनने पहुँच जाते। मांगलिक सुन निकलते सब कार्य मंगल ही मंगल होता।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. अन्तःस्थल से शिविरों में आगे बढ़ने की पावन प्रेरणा दे रहे थे। कोई भी कार्य बाधा आई तो मोजी कॉलोनी विराज रहे महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में चले जाते, सभी सतियाँजी म.सा. मिनटों में समस्याओं का हल कर देते थे। ऐसे महान् संत-सतीगण को शत-शत वंदन कर यही मनोभावना है कि विविध नयों से कल्लोल करती यह जिनवाणी-शिविर सरिता के माध्यम से जन-जन के हृदयस्थल पर श्रद्धा के अंकुरों को पल्लवित-पुष्पित कर जिनशासन की महती प्रभावना करती रहे।

-अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर का कोटा की धरा पर पदार्पण

11 जुलाई से चातुर्मास होगा प्रारम्भ

जिनशासन गौरव, आगम-महोदधि, प्रशान्त-प्रतिभा-विभूति, जन-जन की आस्था के केन्द्र, प्रवचनप्रभाकर, व्यसनमुक्ति, सामायिक-स्वाध्याय तथा रात्रिभोजन त्याग के प्रभावी प्रेरक परमाराध्य **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7** ने हाड़ौती क्षेत्र बून्दी नगरी को उपकृत कर कोटा की ओर चरण बढ़ाए। सवाईमाधोपुर के पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर का पोरवाल क्षेत्र के कोटा में चातुर्मास होने जा रहा है। कोटावासी अत्यन्त प्रमुदित एवं उत्साहित हैं, क्योंकि पहली बार औद्योगिक नगरी कोटा में किसी जैनाचार्य का चातुर्मास हो रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर ने कोटा संघ की सामूहिक विनति को सम्मान देते हुए चातुर्मास स्वीकृत किया है।

बूंदी से विहार के पश्चात् गर्मी का विशेष प्रकोप रहा, किन्तु विहार का क्रम बराबर बना रहा। आचार्यप्रवर संत मण्डली के साथ 1 जून को देवपुरा पधारे। विहार में बून्दी के श्रद्धालु भक्तजन तो साथ थे ही, उद्योग नगरी कोटा से श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन एवं उनकी टीम के सदस्यों ने सेवा सम्भाल के साथ संवर आराधना कर अच्छा आदर्श उपस्थित किया। देई के पश्चात् से ही कोटा संघ विहार-सेवा का लाभ ले रहा था। आचार्यप्रवर 2 जून को रामगंज बालाजी होते हुए 4 जून को तालेड़ा पधारे। यहाँ से आपश्री 5 जून को बल्लोप पधारे, जहाँ पूरे दिन लू के थपेड़ों को सहन किया। 6 जून को बड़गांव पदार्पण हुआ। यहाँ सूर्य का ताप पराकाष्ठा पर था। प्रचण्ड लू शरीर को प्रभावित कर रही थी। संतों को स्वास्थ्य में बेचैनी लग रही थी। 7 जून को आचार्यप्रवर रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी पधारे जहाँ 4 संतों का स्वास्थ्य लू के प्रकोप के कारण गड़बड़ा गया, किन्तु पथ्य परहेज से कुछ साता का अनुभव हुआ। डॉ. जितेन्द्र जी भण्डारी ने सेवा का लाभ लिया।

8 जून का मंगल प्रभात कोटा वासियों के लिए सूर्य की सुनहरी किरण के साथ उदित हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का वल्लभवाड़ी की ओर विहार हुआ। प्रातःकाल से ही गुरुभक्तों का रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी में विहार सेवा की भावना से आगमन प्रारम्भ हो गया था। मार्ग में आचार्यप्रवर के जयघोष समवेत स्वर में गुजांयमान हो रहे थे। उल्लास और हर्ष का भाव प्रत्येक गुरुभक्त के चेहरे से टपक रहा था। वल्लभवाड़ी पहुँचने पर क्षेत्र के लोग पुलकित थे। यहाँ 11 जून को प्रातःकाल राष्ट्र संत श्री कमलमुनि जी

'कमलेश' अपनी संत मण्डली के साथ आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में पधारे एवं दर्शन-चर्चा का लाभ लिया। 15 जून को पोरवाल समिति, जयपुर के नवनिर्वाचित पदाधिकारी गण एवं कार्यकारिणी के समस्त सदस्य पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए। पूज्यश्री की प्रेरणा से सभी बन्धुओं ने सामूहिक भोज में रात्रि-भोजन-त्याग का संकल्प ग्रहण किया।

यहाँ से पूज्यश्री 16 जून को विज्ञाननगर पधारे। 18 जून को विगत तीन वर्षों से सेवा में अध्ययनरत ज्ञानार्थी ओशोजी (ओमप्रकाशजी) का आज्ञापत्र उनके पिताश्री महावीरचन्द जी, चाचा श्री गिरीशजी, भ्राता श्री मोहित जी ने हस्ताक्षर कर पूज्य आचार्यप्रवर के पावन श्री चरणों में प्रस्तुत किया। 20 जून को यहाँ से विहार कर महावीरनगर तृतीय क्षेत्र में पधारे। पाली क्षेत्र की प्रबल विनति को ध्यान में रखकर पूज्य आचार्यप्रवर ने महासती श्री निरंजनाजी म.सा. का आदि ठाणा 4 का चातुर्मास पाली में करने की स्वीकृति फरमाई। 24 जून को हुबली संघ के पदाधिकारी पूज्य गुरुदेव की सेवा में 25 जनवरी, 2015 को आयोज्य दीक्षा के संदर्भ में विचार-विमर्श हेतु उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने 25 जून को रामकृष्णपुरम् एवं 26 जून को श्रीनाथपुरम् कॉलोनी को पावन किया। 27 जून को वसन्त विहार एवं 28 जून को दादाबाड़ी पधारे। सुश्राविका श्रीमती तारामती जी धर्मपत्नी श्री विनोद्कुमारजी पतीरा (गुजराती) को इस दिन 1.45 बजे सरस व्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने संथारे के प्रत्याख्यान कराए। यहाँ से 29 जून को दानवाड़ी तथा 30 जून को छावनी के पालीवाल कम्पाउण्ड में पधारे। कोटा के अन्य क्षेत्रों में भी चातुर्मास के पूर्व आचार्यप्रवर के फरसने की संभावना है।

कोटा के सभी क्षेत्रों में आचार्यप्रवर के पदार्पण से उमंग एवं उत्साह का वातावरण है। सभी स्थानों पर प्रवचन आदि में अच्छी उपस्थिति रहती है। श्री रामदयाल जी जैन सर्राफ-सवाईमाधोपुर गुरु चरणों में तप-त्याग के साथ साधना में रत रहते हैं। सामायिक साधना एवं संवर-आराधना की भावना से भक्तजनों का निरन्तर आवागमन बना हुआ है। अग्रांकित श्रावकों ने त्रि-दिवसीय सामायिक-साधना एवं संवर आराधना का लाभ लिया-श्री नौरतनमल जी मेहता-जोधपुर, श्री राधेश्यामजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, श्री बाबूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री राजेश जी जैन गुगले-लोनावला, श्री यशवंतराजजी सांखला-बैंगलोर, श्री महेन्द्र जी कांकरिया एवं श्री उम्मेद जी हुण्डीवाल-चेन्नई।

उपाध्यायप्रवर का शक्तिनगर की ओर विहार

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में जोधपुर के भक्तजन दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ निरन्तर ले रहे हैं। अन्य ग्राम नगरों के श्रद्धालुओं का भी आवागमन रहता

है। पूज्य उपाध्यायप्रवर चौपासनी हाउसिंग बोर्ड से 30 मई को विहार कर अंधविद्यालय पधारे जहाँ संतों ने प्रज्ञाचक्षुओं को जीवन में चारित्रिक उन्नति करने का मार्गदर्शन किया। वहाँ से आप कमला नेहरू नगर स्थित समता भवन पधारे, जहाँ 2 जून तक विराजे। यहाँ से 3 जून को श्यामनगर, पाल लिंक रोड़ पर श्री राकेशजी सिन्दरूपचन्द जी मेहता के निवास पर विराजे। व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 भी उपाध्यायप्रवर की सेवा में निकट ही श्री श्रीचन्द जी सिंघवी के आवास पर विराजे। संत-सतियों के विराजने से कॉलोनी के श्रद्धालुओं ने सुबह प्रार्थना, दोपहर में शास्त्र-श्रवण एवं सायंकाल प्रतिक्रमण का लाभ लिया।

यहाँ पर श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. का 8 जून को बॉन एण्ड जाइन्ट अस्पताल में दोनों घुटनों के प्रत्यारोपण का ऑपरेशन अहमदाबाद के विशेषज्ञ चिकित्सक द्वारा किया गया। जोधपुर के डॉ. रजनीश शर्मा का इस कार्य में अच्छा सहयोग रहा। शासनसेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, डॉ. प्रेमसिंह जी लोढ़ा आदि महानुभावों का जयपुर से पदार्पण हुआ। ऑपरेशन लगभग साढ़े तीन घण्टे चला एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। 9 जून को उपाध्यायप्रवर दर्शन देने हेतु अस्पताल पधारे। 13 जून को अस्पताल से अवकाश मिलने के पश्चात् मुनिश्री के स्वास्थ्य में प्रगति चल रही है। वे वॉकर के सहारे चलने लगे हैं।

22 जून को उपाध्यायप्रवर पाललिंक रोड़ पर ही हेमप्रज्ञा भवन में पधारे। उसके पश्चात् शास्त्रीनगर होते हुए 25 जून को नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पदार्पण हुआ। यहाँ पर 27 जून को मुनिश्री के टाँके खोले गये। वीरपिता एवं वीरभ्राता श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल का जलगांव में 25 जून को स्वर्गगमन होने पर 26 जून को नेहरूपार्क सामायिक-स्वाध्याय भवन में उठावणा उपरान्त परिवारजनों ने मंगलपाठ श्रवण किया। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल के जीवन पर प्रकाश डाला। 28 जून को यहाँ से विहार कर दासपा हाउस पधारे जहाँ संतों का प्रवचन हुआ। लोगों ने धार्मिक एवं आध्यात्मिक रस का आस्वादन किया। यहाँ से विहार कर रातानाडा स्थित जैन भवन पधारे। प्रवचन सभा में साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के जन्मदिवस के अवसर पर उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती शान्तिप्रभा जी, व्याख्यानी महासती श्री विनीतप्रभा जी आदि ठाणा 4 उपस्थित थे। महासती मण्डल ने भी साध्वी प्रमुखा के जीवन को रेखांकित किया एवं संघ की ओर से साध्वी प्रमुखा जी के दीर्घायु एवं स्वस्थ रहने की कामना की। यहाँ से 30 जून को अजीत कॉलोनी स्थित बादलचन्द सुगनकंवर चोरडिया स्कूल में उपाध्यायप्रवर एवं संत मण्डल का पदार्पण हुआ। यहाँ से पावटा होते हुए शक्तिनगर की ओर विहार सम्भावित है।

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2071, ईस्वी सन् 2014)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2071 सन् 2014 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है:-

(1) रामपुरा बाजार-कोटा (राज.)

- 卐 **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**
- 卐 महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रीसंघ, ग्राण्ट होटल वाली गली, कोतवाली के सामने, रामपुरा बाजार, कोटा-324001 (राज.), फोन-0744-2382711

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राजेन्द्रसिंहजी मेहता-अध्यक्ष, फोन-0744-2380814
2. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन-मंत्री एवं संयोजक-चातुर्मास समिति, मैसर्स वर्द्धमान नमकीन्स, गुमानपुरा मेन रोड़, कोटा-324001 (राज.) फोन-0744-2382832, मोबाइल-094141-77139, 083025-99661
3. श्री उत्तमचन्द जी जैन, मो. 094149-38875
4. श्री राजकुमार जी नवलखा, मो. 077918-60947
5. श्री अनिल कुमार जी जैन, मो. 094145-04578

आवागमन के साधन- रामपुरा बाजार स्थानक कोटा के मुख्य रेलवे स्टेशन से 7 किमी. पर तथा नयापुरा बस स्टेण्ड से डेढ़ किमी. की दूरी पर स्थित है।

(2) शक्तिनगर-जोधपुर (राज.)

- 卐 **परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**
- 卐 मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, छट्ठी गली, पावटा-सी रोड़, (आर.टी.ओ.ऑफिस रोड़), जोधपुर-342006 (राज) फोन-0291-6410077

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096
3. श्री महावीरचन्द जी बोथरा-संयोजक, फोन-0291-2547658, मो. 098285-82391
4. श्री अमरचन्द जी चौधरी, मो. 094141-30024/94611-30024

आवागमन के साधन- शक्तिनगर छट्ठी गली स्थित स्वाध्याय भवन जोधपुर जंक्शन से 5 किमी., राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 3 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(3) लाल भवन-जयपुर (राज.)

卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री अभयमुनि जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ, जयपुर, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.) फोन- 0141-2312414, मो. 093140-12414, 96609-88458

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विमलचन्द जी डागा-मंत्री, 1370-ताराचन्द नायाब का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2576152, मो. 098290-11588
2. श्री सुरेशचन्दजी कोठारी-संयुक्त मंत्री, फोन- 0141-222810, मो. 093145-01627
3. श्री अशोककुमारजी सेठ-कोषाध्यक्ष, फोन- 0141-2574749, मो. 093146-25596

आवागमन के साधन- लालभवन, जयपुर रेलवे स्टेशन से 5 किमी., केन्द्रीय बस टर्मिनल से 4 किमी. एवं सांगानेर एयरपोर्ट से 12 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(4) शक्तिनगर-जोधपुर (राज.)

- 卐 साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.
- 卐 तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री उषाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल, सम्पर्क-सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्रम संख्या 2 के अनुसार।

(5) सरस्वतीनगर-जोधपुर (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मंजूलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुदर्शनाजी म.सा. ठाणा 10

चातुर्मास-स्थल- स्वाध्याय भवन, ए-76-77, सरस्वतीनगर, बासनी, जोधपुर-342005 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरलाल जी चौपड़ा-अध्यक्ष, फोन- 0291-2724718, मो. 098290-23[illegible]7
2. श्री पारसमल जी ओस्तवाल-मंत्री, डी-161, सरस्वतीनगर, बासनी, जोधपुर-3[illegible]005 (राज.), फोन- 0291-2721391 (निवास), मो. 094144-98815
3. श्री इन्दरचन्दजी देशरला-संरक्षक, फोन- 0291-2724930

आवागमन के साधन- जोधपुर रेलवे स्टेशन से सरस्वतीनगर 6 किमी. दूर है एवं राईकाबाग बस स्टेण्ड से 9 किमी. व जोधपुर एयरपोर्ट से 6 किमी. की दूरी पर स्थित है। बस नं.-10 सिटी बस से एस.पी. बंगला (ज्यूस भंडार के पास) स्टेण्ड पर उतर कर स्थानक पहुँचा जा सकता है।

(6) चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
卐 महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.
卐 महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक भवन, सब्जी मण्डी की गली, चौथ का बरवाड़ा-322702,जिला-सवाईमाधोपुर(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री लड्डूलाल जी जैन-अध्यक्ष, फोन-07462-257572, मो. 094612-37805, 097668-01449
2. श्री नीरजकुमार जी जैन 'समिधि वाले'-मंत्री, रेलवे स्टेशन के पास, पो. चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर-322702(राज.), फोन-07462-257361, मो. 08952045829
3. श्री भैरूलाल जी जैन, फोन- 07462-257021, मो. 094612-37952

आवागमन के साधन- चौथ का बरवाड़ा जयपुर-सवाईमाधोपुर रेलवे लाइन पर स्थित है। चौथ का बरवाड़ा जयपुर से 110 किमी. तथा सवाईमाधोपुर से 25 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(7) महावीरनगर-जयपुर (राज.)

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
卐 महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.
卐 महासती श्री शारदाजी म.सा.
卐 महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.
卐 महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीरनगर, सेन्ट्रल बैंक की गली, महावीरनगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), फोन- 0141-3101991

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदकुमार जी लोढ़ा, ए-8, महावीरनगर, टोंक रोड़, जयपुर-302004 (राज.), फोन- 0141-2551083, मो. 098290-51083
2. श्री वीरेन्द्रकुमारजी चोरडिया, फोन-0141-2554502, मो. 098284-06869

आवागमन के साधन- जयपुर रेलवे स्टेशन से महावीरनगर 11 किमी. गाँधीनगर रेलवे स्टेशन से 2 किमी., दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी, केन्द्रीय बस स्टेण्ड टर्मिनल से 10 किमी., नारायण सिंह सर्किल बस स्टेण्ड से 5 किमी. व सांगानेर एयरपोर्ट से लगभग 3 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(8) आदर्शनगर-अजमेर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.

卐 महासती श्री कौशल्याजी म.सा.

卐 महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, जैन स्थानक, आदर्शनगर मेन गेट के अन्दर, आदर्शनगर, अजमेर-305002 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अभयसिंह जी लोढ़ा-अध्यक्ष, फोन-0145-2443113, मो. 094147-08502
2. श्री विमलचन्दजी लोढ़ा-मंत्री, 'आशियाना', 37-ए, आदर्शनगर, अजमेर-305001 (राज.), फोन- 0145-2441203, मो. 094140-07280

आवागमन के साधन- अजमेर-नसीराबाद रोड़ पर आदर्शनगर स्थित है। यह अजमेर रेलवे स्टेशन से 6 किमी. तथा रोड़वेज बस स्टेण्ड से 6.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

(9) मालवीयनगर-जयपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.

卐 महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, सी-314-ए, हरी मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

विशेष- (स्वास्थ्य सम्बन्धी कारण से दो माह के लिए)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदजी महनोत, सी-345, हंस मार्ग, मालवीयनगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन-0141-2525125, मो. 098290-52094

2. श्री पूनमचन्द जी भण्डारी, फोन- 0141-2524071, मो. 99833-44443

आवागमन के साधन - मालवीय नगर जयपुर रेलवे स्टेशन से 10 किमी, गाँधीनगर रेलवे स्टेशन से 4 किमी, दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 4 किमी., केन्द्रीय बस स्टेण्ड टर्मिनल से 10 किमी., नारायण सिंह सर्किल बस स्टेण्ड से 6 किमी. व सांगानेर एयरपोर्ट से लगभग 3 किमी. दूरी पर स्थित है।

(10) देई, जिला-बून्दी (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री उत्तम सामायिक स्वाध्याय भवन, नसिया कॉलोनी, देई, जिला-बून्दी-323802 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बाबूलाल जी जैन-अध्यक्ष, अग्रवाल साड़ी एम्पोरियम, पो. देई-323802, जिला-बून्दी (राज.), फोन-07437-255860, मो. 094149-63429
2. श्री रामपाल जी गोयल-मंत्री, फोन- 07437-255856, मो. 097996-96642
3. श्री नन्दकिशोरजी जैन, मो. 095300-86665
4. श्री ताराचन्द जी जैन, मो. 097846-74407
5. श्री पदमचन्द जी जैन 'बंसोली वाले', मो. 099292-07109

आवागमन के साधन- देई के नजदीक सवाईमाधोपुर, कोटा व इन्द्रगढ़ रेलवे स्टेशन हैं। सवाईमाधोपुर से देई 70 किमी. व कोटा से 80 किमी. एवं इन्द्रगढ़ से 35 किमी. की दूरी पर स्थित है। सवाईमाधोपुर वाया उनियारा तथा कोटा से वाया बून्दी होते हुए बस सेवा उपलब्ध है। बून्दी से देई 55 किमी. की दूरी पर स्थित है। बून्दी से प्रतिघंटे बस सेवा उपलब्ध है। जयपुर से सीधी बसें वाया निवाई, टोंक, उनियारा, नैनवा होते हुए देई पहुँचती हैं, जो आगे कोटा तक जाती हैं।

(11) शाहीबाग-अहमदाबाद (गुजरात)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री देवांगनाजी म.सा.

卐 महासती श्री अंजनाजी म.सा.

卐 महासती श्री सुभद्राजी म.सा.

卐 महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री तितिक्षाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- श्री राजस्थान स्थानकवासी संघ, हठीभाई की वाड़ी के सामने, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात), फोन- 079-25624560

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बाबूलाल जी हुण्डिया-अध्यक्ष, फोन- 079-27552055 (नि.), 099099-67662
2. श्री सुरेशजी चोरडिया-मंत्री, फोन-079-22869770, मो. 0937740-62463
3. श्री पदमचन्द जी कोठारी, 37-न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-380002 (राज.), फोन-079-22160675, 26643815, मो. 094293-03088
4. श्री कन्हैयालाल जी हिरण, मो. 094611-04734
5. श्री महावीरचन्द जी मेहता, मो. 094289-09600

आवागमन के साधन- अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से शाहीबाग 3.5 किमी. व केन्द्रीय बस स्टेण्ड से 5 किमी. की दूरी पर तथा एयरपोर्ट से 7 किमी. की दूरी पर स्थित है। जैन स्थानक हठी सिंह की वाड़ी के सामने स्थित है।

(12) बारह गणगौर-जयपुर (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री विमलावतीजी म.सा.

卐 महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, बारह गणगौर का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र व आवागमन के साधन- क्रम संख्या 3 के अनुसार।

(13) अशोक नगर-बैंगलोर (कर्नाटक)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

卐 महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा

卐 महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा

卐 महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा

卐 महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, पुलियार क़ोयल स्ट्रीट, नं. 17, अशोकनगर, बैंगलोर-500025 (कर्नाटक) (ब्रिगेड टॉवर रोड़ के पास)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री यशवन्तराजजी सांखला-अध्यक्ष, नं.-7, वुड स्ट्रीट, अशोकनगर, शूले, बैंगलोर (कर्नाटक), फोन- 098450-19669
2. श्री पदमराजजी मेहता-कार्याध्यक्ष, फोन- 09900162517
3. श्री निर्मलचन्दजी बम्ब-मंत्री- 094496-49577
4. श्री सुरेशचन्दजी भण्डारी, (आवास-व्यवस्था), मो. 098450-39026
5. श्री प्रदीपकुमारजी चोरडिया, (यातायात), मो. 098440-78400

आवास-स्थल - उपाध्यायप्रवर श्री केवलमुनि जैनोदय ट्रस्ट भवन, बैंगलोर

आवागमन के साधन - बैंगलोर सिटी रेलवे स्टेशन से अशोकनगर (शूले) 6 किमी., बैंगलोर कन्टोमेन्ट रेलवे स्टेशन से 4 किमी., यशवन्तपुर रेलवे स्टेशन से 12 किमी. की दूरी पर तथा हवाई अड्डे से 40 किमी. की दूरी पर है। लोकल बस द्वारा शूले-अशोकनगर पहुँचा जा सकता है।

(14) काचीगुड़ा-हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा
- 卐 महासती श्री संगीताजी म.सा
- 卐 महासती श्री भावनाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भविताश्रीजी म.सा
- 卐 महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.
- 卐 नवदीक्षिता महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद, पूनमचन्द गाँधी जैन स्थानक, काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन के सामने, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हस्तीमल जी गुन्देचा-चातुर्मास संयोजक, "Metry", Flat No.-220, 2nd Floor, 3-4-346, Near Shanti Niketan School, Kachiguda, Hyderabad-500027 (A.P.), Mobile No. 098664-14110
2. श्री पारसजी डोसी-चातुर्मास सह-संयोजक, 16-2-674/6/Q/6, 2nd Floor, New Malak Pet, Hyderabad (AP), Phone-040-24554130, 24545348, 098490-17041 (M.)

आवागमन के साधन - काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन के सामने ही स्थानक है।

(15) सतारा (महा.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रावक संघ, 106-भवानी पेठ, मोती चौक, सतारा-415002 (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अजीतजी मूथा-अध्यक्ष, 489, शांति भवन, सदर बाजार, सतारा-415002 (महा.), फोन- 02162-230647, मो. 099230-22220
2. श्री सन्तोषजी मुणोत-मंत्री, फोन-02162-241127, मो. 099233-96050
3. श्री विनोदजी शाह-उपाध्यक्ष, मो. 097653-03030
4. श्री प्रमोद जी लुणिया, मो. 098224-48609
5. श्री राजेन्द्र जी लुणावत, मो. 094224-00704
6. श्री अनिल जी कटारिया, मो. 099233-96019

आवागमन के साधन- जैन स्थानक रेलवे स्टेशन से 8 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 2.5 किमी है। अजमेर और जोधपुर से बैंगलोर जाने वाली सभी रेलगाड़ियों का सतारा में ठहराव है। मुम्बई से 250 किमी., पुणे से 110 किमी. दूर है।

(16) आनन्दपुरी-कानपुर (उत्तरप्रदेश)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, 110 आनन्दपुरी, कानपुर-208023 (उत्तरप्रदेश), फोन- 095590-83615 (सुरेन्द्रजी)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरलाल जी लोढ़ा-अध्यक्ष, 214-आनन्दपुरी, ट्रान्सपोर्ट नगर के पास, कानपुर-208023 (उत्तरप्रदेश), मो. 093357-70975

2. श्री भीकमचन्दजी चोरडिया-मंत्री, मो. 094150-44045
3. श्री मनमोहनचन्द जी बाफना, फोन- 0512-3248499, मो. 094150-43754

आवागमन के साधन- कानपुर रेलवे स्टेशन से आनन्दपुरी 4 किमी. एवं केन्द्रीय बस स्टेण्ड से 3 किमी. दूरी पर स्थित है।

(17) सोजत रोड़, जिला-पाली (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री आनंदप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, बगड़ी रोड़, सोजत रोड़, जिला-पाली-306103 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मंगलचन्दजी गाँधी-अध्यक्ष, गाँधी टेक्सटाइल्स, पो. सोजत रोड़-326103, जिला-पाली (राज.), फोन- 02960-230038 (का.), 230058 (नि.), 092146-61749
2. श्री कुशलचन्द जी गुन्देचा-मंत्री, मैसर्स बादरमल नथमल गुन्देचा, मेन बाजार, पो. सोजत रोड़, जिला-पाली (राज.), फोन- 02960-230050, 231207, मो. 094138-77444
3. श्री शांतिलाल जी पावेचा, मैसर्स मोतीलाल शांतिलाल पावेचा, पो.सोजत रोड़-346103, जिला-पाली (राज.), फोन- 02960-230905, मो. 094145-90763

आवागमन के साधन- दिल्ली-अहमदाबाद मुख्य रेल मार्ग पर सोजत रोड़ रेलवे स्टेशन है। रोडवेज व प्राइवेट बसों का आवागमन रहता है। पाली-जयपुर सड़क मार्ग पर सोजत सिटी कस्बा स्थित है, जहाँ से 13 किमी. दूरी पर सोजत रोड़ है। सोजत सिटी से सोजत रोड़ के लिए बस, टेम्पो, टेक्सी सेवाएँ उपलब्ध है।

(18) शास्त्रीनगर-भीलवाडा (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

卐 महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानक जैन समाज श्रावक समिति, अहिंसा भवन, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री दिनेशकुमारजी बम्ब-अध्यक्ष, एच-790, मेन रोड़, न्यू हाउसिंग बोर्ड, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा-311001 (राज.), फोन- 01482-251015, मो. 098291-74060
2. श्री कानसिंहजी चौधरी-मंत्री, 97-बी, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा-311001 (राज.), फोन- 01482-250182, 096607-33291
3. श्री दाड़मचन्द जी रांका, 780-'पारस-प्यारा', शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा-311001 (राज.), फोन-01482-253945, मो. 094131-48982

आवागमन के साधन- भीलवाड़ा राजस्थान के प्रमुख शहरों से रेल व बस से जुड़ा हुआ शहर है। मुख्य रेलवे स्टेशन से स्थानक 2.5 किमी. व बस स्टेण्ड से भी 2.5 किमी. दूरी पर स्थित है। रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से टेम्पो एवं टेक्सी उपलब्ध है।

(19) पाली-मारवाड़ (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निरंजनाजी म.सा

卐 महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री कान्ताजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, पुरानी धान मण्डी के पास, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.),फोन नं. 02932-250021

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री ताराचन्दजी सिंघवी, 7- गाँधी कटला, पाली-306401 (राज), फोन- 02932-222005 (नि.)
2. श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशरकुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली-306401 (राज.), फोन- 02932-220603, 220604, मो. 9414122304

आवागमन के साधन- पाली के लिए जयपुर, जोधपुर, अजमेर, कोटा, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों से सीधी बस सेवाएँ उपलब्ध हैं। जोधपुर-अहमदाबाद रेलवे ट्रेक पर स्थित पाली रेलवे स्टेशन पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। ऑटो रिक्शा द्वारा आने वाले श्रावक सीधे स्थानक पहुँच सकते हैं। परन्तु निजी वाहन लेकर आने वाले पुराने बस स्टेण्ड से धानमण्डी होकर पुलिस चौकी , जूनी कचहरी के रास्ते से सामायिक-स्वाध्याय भवन पहुँच सकते हैं, जहाँ पार्किंग की सुविधा है। सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट रेलवे स्टेशन से 3 किमी., नये बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. एवं पुराने बस स्टेण्ड से आधा किमी. की दूरी पर स्थित है।

जोधपुर में ग्रीष्मकालीन शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर विगत 20 वर्षों से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित कर बच्चों में जैन धर्म की जानकारी के साथ ही संस्कारों की शिक्षा भी प्रदान करता आ रहा है। इस वर्ष यह शिविर 16 मई से 01 जून तक जोधपुर के 11 केन्द्रों- घोड़ों का चौक, सिंहपोल, नेहरू पार्क, प्रतापनगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, गुलाब नगर, सरस्वती नगर, पावटा, शक्तिनगर, गोल्फ कोर्स तथा नये केन्द्र के रूप में कुड़ी हा. बोर्ड में आयोजित हुआ। शिविर में लगभग 950 शिविरार्थियों ने 110 अनुभवी अध्यापकों से श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के आधार पर नियमित अध्ययन किया। 30 मई को बच्चों द्वारा सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु परीक्षा सरदार स्कूल में आयोजित हुई। शिविर के दौरान पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ।

शिविर का समापन कार्यक्रम 1 जून को सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में आयोजित हुआ। उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की महती कृपा से मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. शिविरार्थियों को उद्बोधन देने पधारे। श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी ने शिविरार्थियों को ज्ञान और क्रिया का महत्त्व बताते हुए आचरण अच्छा बनाने हेतु प्रेरित किया तथा कई प्रत्याख्यान भी कराए।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि मुख्य पुरस्कार सहयोगी श्रीमती रतनदेवी- पदमचन्द जी मेहता थे। विशिष्ट अतिथि अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना तथा सम्माननीय अतिथि के रूप में वरिष्ठ स्वाध्यायी तथा जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन थे। समारोह में सभी केन्द्रों से शिविरार्थियों ने सीखे गए ज्ञान की प्रस्तुति दी। पधारे हुए सभी महानुभावों ने बच्चों के कार्यक्रम को सराहा। शिविर संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए परीक्षा में वरीयता प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों के नामों की घोषणा की तथा अतिथियों द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया।

-नवरतन डागा, शिविर संयोजक

मारवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 21 जून से 23 जून 2014 तक मध्यप्रदेश क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्वाध्याय संघ के सह संयोजक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी- जोधपुर, गुजरात शाखा के संयोजक श्री राकेश जी समदड़िया-चिखली तथा स्वाध्याय संघ

के कार्यालय सहयोगी श्री धीरज जी डोसी-जोधपुर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। प्रचार कार्यक्रम में सिलवासा, उमरगांव, वलसाड़, डूंगरी, चिखली, नवसारी, कड़ोदरा, चलथान, बारडोली, कड़ोद, वालोड, बुहारी, मांडवी तथा मडी आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 5 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 11 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा आगामी परीक्षा हेतु फार्म भरवाए गए। प्रचार के दौरान विभिन्न सम्प्रदायों के संत-सती मण्डल के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

श्राविका मण्डल द्वारा छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा कक्षा 01 से 8 तक की कक्षाओं के छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना प्रारम्भ की गई है। श्राविका मण्डल द्वारा चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रों को छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। इच्छुक छात्र आवेदन के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-बीना मेहता, महासचिव, 97727-93625

'बनें आगम अध्येता' (3)

अन्तगडदसासूत्र प्रतियोगिता का प्रारम्भ

श्रावक-श्राविकाओं को आगम में भगवान ने अनेक विशेषणों से सम्बोधित किया है। जहाँ श्रावक को 'कोविद श्रावक' के रूप में कहा, वहीं श्राविकाओं को 'बहुश्रुता', 'शीलवंता' आदि उत्कृष्ट संबोधन दिये। आगमों में वर्णित श्रावक-श्राविकाओं की झलक वर्तमान में परिलक्षित हो, इस हेतु अत्यन्त आवश्यक है- आगम का स्वाध्याय। श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ और तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु **आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सती मण्डल** का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। गुरुद्वय के दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष के शुभ प्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने

हेतु **"बनें आगम अध्येता"** अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया है, जिसके अन्तर्गत दशवैकालिक सूत्र व उपासकदशांग सूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। इसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। अब तृतीय आगम परीक्षा के रूप में 'अन्तगडदसा सूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। इसके लिए आवश्यक जानकारी इस प्रकार है-

1. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित अन्तगडदसा सूत्र व मूल्यांकन प्रश्न पत्र को मंगवाकर उसको घर से ही हल करके 31 अगस्त, 2014 तक भिजवाएँ।
2. अन्तगडदसा सूत्र की समापक परीक्षा 12 अक्टूबर, 2014 को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में होगी, जो कि 90 अंकों की होगी व इस परीक्षा में आप अन्तगडदसा सूत्र की पुस्तक भी साथ रख सकते हैं।
3. मूल्यांकन उत्तर पुस्तिका को जांचकर, उनमें प्राप्त अंकों को 10 प्रतिशत करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक अंकों के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को 'अन्तगडदसा सूत्र आगम अध्येता' की उपाधि से अलंकृत करने के साथ ही पुरस्कृत भी किया जाएगा। परीक्षा में 80 या अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगम ज्ञान अभिवर्धन के इस कार्यक्रम में फार्म भरकर अपनी स्वीकृति प्रदान करावें, स्वीकृति प्राप्त करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ ही परीक्षा देने के अधिकारी रहेंगे। अन्तगडदसा सूत्र पुस्तक व मूल्यांकन प्रश्न पत्र हेतु सम्पर्क सूत्र- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, फैक्स- 0141-2570753

-पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष

भारतीय संस्कृति का अध्ययन प्राकृत भाषा और साहित्य के बिना अधूरा

दिल्ली- विजय वल्लभ स्मारक जैन मंदिर परिसर में स्थित भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली में 25 मई से 15 जून 2014 तक आयोजित 26 वीं प्राकृत भाषा एवं साहित्य की ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला अपार सफलता के साथ सम्पन्न हुई।

25 मई 2014 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के सदस्य सचिव डॉ. मानेन्द्र प्रताप सिंह ने इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्राकृत एक

मधुर भाषा है। दो हजार वर्षों से भी अधिक का समृद्ध प्राकृत साहित्य हमारी ज्ञान परम्परा को अद्वितीय मजबूती प्रदान करता है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरिराम मिश्रा ने कहा कि प्राकृत वाङ्मय के ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति को हम समझ ही नहीं सकते। संस्कृत काव्यशास्त्रों में उद्धृत गाथाओं से इस प्राकृत भाषा का सौंदर्य अपने आप प्रकट हो रहा है।

वरिष्ठ विश्रुत विद्वान् प्रो. सागरमल जैन ने कहा कि प्राकृत भाषा के प्रचार हेतु सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। लखनऊ से पधारे प्रो. किरण कुमार थपलियाल ने कहा कि प्राकृत भाषा को समझे बिना अभिलेखों में अन्तर्निहित भारतीय संस्कृति के प्राचीन स्वरूप को समझना असम्भव है। संस्थान के निदेशक, प्रो. जी.सी. त्रिपाठी ने इस कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा सम्पूर्ण देश के विभिन्न प्रान्तों से प्राकृत भाषा के अध्ययन हेतु पधारे प्रतिभागियों को कार्यशाला का सम्पूर्ण लाभ लेने की प्रेरणा प्रदान की। प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी (निदेशक, शैक्षिक) ने उद्घाटन सत्र का संयोजन करते हुये पिछले 26 वर्षों से आयोजित हो रही अध्ययनशालाओं के महत्त्व तथा राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार में इस संस्थान के योगदान को रेखांकित किया।

कार्यशाला में दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल के उच्च शिक्षा संस्थान से आरम्भिक पाठ्यक्रम में 50 एवं उच्चतर पाठ्यक्रम में 18 प्रतिभागियों ने अध्ययन सम्पन्न कर प्रवीणता प्राप्त की।

देश के ख्यातिलब्ध जिन विशिष्ट विद्वानों ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के पाठ्यक्रम का अध्यापन-कार्य किया, उनमें वरिष्ठ विद्वान् प्रो. सागरमल जैन-शाजापुर, प्रो. किरण कुमार थपलियाल-लखनऊ, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य-शांति निकेतन-पश्चिम बंगाल, प्रो. कमलेश कुमार जैन-जयपुर, प्रो. दीनानाथ शर्मा-अहमदाबाद, डॉ. अशोक कुमार सिंह-वाराणसी, प्रो. वीरसागर जैन एवं डॉ. अनेकान्त कुमार जैन-दिल्ली तथा प्रो. गयाचरण त्रिपाठी (निदेशक) एवं प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' (निदेशक, शैक्षिक) प्रमुख हैं। अध्ययनशाला में विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान भी हुए।

दोनों पाठ्यक्रमों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं नकद राशि से सम्मानित किया गया।

15 जून 2014 को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में भारतीय भाषाओं की जननी प्राकृत भाषा की खोई हुई गरिमा प्राप्ति हेतु इस तरह की कार्यशालाओं

की महत्ता प्रतिपादित की। मुख्य अतिथि के रूप में समागत दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर दीप्ति एस. त्रिपाठी ने कहा कि प्राकृत भाषा किसी संप्रदाय विशेष की भाषा नहीं है। इसका अध्ययन प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य होना चाहिये।

श्री तिलोक रत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की परीक्षाएँ 11 अक्टूबर 2014 से प्रारम्भ

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के सदुपदेश से संस्थापित श्री तिलोक रत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, आनन्दधाम -अहमदनगर द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाएँ (जैन सि. आचार्य, जैन सि. शास्त्री, जैन सि. प्रभाकर, जैन सि. विशारद एवं प्रथमा-प्रवेशिका-प्रतिक्रमण व सामायिक) 11 अक्टूबर 2014 से प्रारम्भ हो रही है। पूरित आवेदन पत्र भिजवाने की अंतिम तिथि 15 सितम्बर 2014 है। केन्द्र व्यवस्थापकों से निवेदन है कि अपने केन्द्रों के आवेदन पत्र 15 सितम्बर से पूर्व कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करावें। परीक्षार्थी अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ट हों एतदर्थ अवश्य प्रयत्न करावें।-**परीक्षाधिकारी,** श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, आनन्दधाम, आचार्यश्री आनन्दऋषि म. मार्ग, अहमदनगर-414001 (महा.), फोन-0241-2451538

श्वेताम्बर जैन समाज के छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8 वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है तथा जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 10000/- से अधिक नहीं है, छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं:-

1. इस वर्ष की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की एक फोटो कापी भेजें।
2. दो लिफाफों पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिनकोड, मोबाइल/फोन नं. लिखें।
3. दोनों लिफाफों में रुपये 10-10 के डाक टिकट रखें, टिकट लिफाफे पर चिपकायें नहीं।
4. आवेदन-पत्र में आपके परिवार की आय का विवरण विस्तार से लिखें। परिवार के मुखिया व्यापार करते हैं या नौकरी करते हैं लिखना आवश्यक है।
5. आवेदन-पत्र में भी आपका नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड, मोबाइल, फोन नं. अवश्य लिखें, सिर्फ लिफाफे पर लिखना पर्याप्त नहीं है।
6. आप अपना मोबाइल, फोन नं. एवं पिनकोड साफ सुथरे अंकों में अंग्रेजी में लिखें।

सम्पर्क सूत्र- श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120,

कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637

विधवाओं एवं जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग

श्वेताम्बर ओसवाल जैन समाज की उपेक्षित, वृद्ध, निःशक्त, विधवा महिलाएँ तथा वे महिलाएँ जिनकी मासिक आय रुपये 3000/- से अधिक नहीं है आर्थिक सहयोग के लिए आवेदन कर सकती हैं। आवेदन इस प्रकार से करें:-

1. आपकी महीने की आय कितनी है। आपका निर्वाह अर्थात् रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था कैसे हो रही है, लिखें।
2. दो लिफाफों पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिनकोड, मोबाइल/फोन नं. लिखें।
3. दोनों लिफाफों में रुपये 5-5 के डाक टिकट रखें, टिकट लिफाफे पर चिपकायें नहीं।
4. आवेदन-पत्र में भी आपका नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड, मोबाइल, फोन नं. अवश्य लिखें, सिर्फ लिफाफे पर लिखना पर्याप्त नहीं है।

सम्पर्क सूत्र- श्री लाभचन्द जी कोठारी, गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 93140-03637

अल्पसंख्यकों हेतु छात्रवृत्तियाँ, जैन छात्र उठाएँ लाभ

भारत सरकार द्वारा 27 जनवरी, 2014 को एक अध्यादेश प्रसारित कर जैन समुदाय को अल्पसंख्यक घोषित किया गया है। राजस्थान के अल्पसंख्यक जैन छात्र निम्नांकित छात्रवृत्तियों हेतु तुरन्त आवेदन कर सकते हैं। अन्य राज्यों के छात्र भी वेबसाइट देखकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

1. पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति (Pre Matric Scholarship/PMS)-

1. माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय रुपये 1 लाख अधिकतम।
2. आवेदन पत्र जून/जुलाई में अपनी शिक्षण संस्था में जमा कराएं। वहाँ से आवेदन-पत्र जिला अल्पसंख्यक मामलात विभाग को प्रस्तुत किए जायेंगे।

2. उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति (Post Matric Scholarship/PMS)- (कक्षा 11-12 से उच्च कक्षा स्नातक/स्नातकोत्तर (एकाडमिक) ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएशन/ पी-एच.डी., आई.टी.आई/एन. सी.वी.टी)

1. माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय रुपये 2 लाख अधिकतम
2. अन्तिम पूर्व परीक्षा में 50 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण छात्र आवेदन करें। नवीनीकरण हेतु 50 प्रतिशत अंक उत्तीर्ण।

3. विद्यार्थी अन्य छात्रवृत्ति हेतु पात्र नहीं।
4. ऑनलाइन आवेदन पत्र के लिए (Online Scholarships Management System) वेबसाइट http/momascholarship.govt.in पर clik करना होगा। website के Homepage पर Student Registration करके आवेदन करें।
5. आधार कार्ड अनिवार्य है।

3. मेरिट कम मीन्स छात्रवृत्ति (Merit cum means scholarship)–व्यावसायिक/तकनीकी शिक्षा ग्रेजुएशन स्नातक/स्नातकोत्तर(ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएशन) इंजीनियरींग/मेडिकल/बी.एड. हेतु–

1. माता-पिता/अभिभावक की वार्षिक आय रुपये 2.50 लाख अधिकतम।
2. प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रम में प्रविष्ट। 50 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण एवं मेरिट से प्रविष्ठ। नवीनीकरण हेतु 50 प्रतिशत अंक उत्तीर्ण।
3. विद्यार्थी अन्य छात्रवृत्ति हेतु पात्र नहीं।
4. ऑनलाइन आवेदन पत्र के लिए (Online Scholarships Management System) वेबसाइट http/momascholarship.govt.in पर clik करना होगा। website के Homepage पर Student Registration करके आवेदन करें।
5. आधार कार्ड अनिवार्य है।

छात्र-छात्रा समस्त प्रकार की छात्रवृत्ति हेतु स्कूल/कॉलेज/संस्था में आवेदन पत्र जमा करा सकते है। अन्य सभी आवेदन पत्र वेबसाइट पर जमा कराने होंगे। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए उपनिदेशक (द्वितीय) निदेशालय, फोन नं. 0141-2744738, वेबसाईट- www.minorityaffairs.rajasthan.gov.in पर कर सकते हैं। राजस्थान के बाहर के छात्र अपने राज्य की वेबसाइट का अवलोकन करें। वे भी शिक्षण संस्था के माध्यम से गृह जिले के अल्पसंख्यक मामलात विभाग को आवेदन-पत्र प्रेषित करें।

सूत्रकृतांग सूत्र पर स्वाध्याय शाला संगोष्ठी

श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर के तत्त्वावधान में आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में 19-20 जुलाई 2014 को 'स्वाध्यायशाला' का आयोजन शूले स्थित स्थानक भवन में किया जा रहा है। स्वाध्याय शाला जैन दर्शन के प्रमुख सूत्र 'सूत्रकृतांग सूत्र' पर आधारित होगी। स्वाध्यायशाला में पूज्य सतीवर्ग के अतिरिक्त अनेक विद्वान् पंडित एवं स्वाध्यायी गण अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। ज्ञानपिपासु साधकों को

लाभ लेने का सुअवसर है, अवश्य लाभ लेवें। *- शांतिलाल बोहरा, संयोजक*

संक्षिप्त समाचार

पाली-मारवाड़- ज्येष्ठ कृष्णा 5 दिनांक 19 मई 2014 को पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 24 वां आचार्य पदारोहण दिवस सामायिक-स्वाध्याय भवन (सुराणा मार्केट) में तप-त्याग, उपवास-पौषध, दया-संवर, आयम्बिल, एकासन, बिआसन एवं पाँच-पाँच सामायिक के साथ मनाया गया। समरथ गच्छाधिपति श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी श्रद्धेया महासतीजी श्री कीर्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा ने व्याख्यान में आचार्य पद की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 24 बकरों को अभयदान प्रदान किया गया। *-रूपकुमार चौपड़ा, अध्यक्ष*

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के तत्त्वावधान में 17 से 22 जून 2014 तक धार्मिक शिक्षण शिविर सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर में आयोजित किया गया। शिविर में जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों की 105 श्राविकाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में कक्षा से 1 से 8 तक के पाठ्यक्रम की कक्षाएँ लगाई गईं, जिनमें 15 विद्वान् श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल व थोकड़ों का अध्ययन कराया गया। शिविर के समापन दिवस 22 जून को परीक्षा आयोजित की गई। वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं पूर्व संयोजक-स्वाध्याय संघ डॉ. चंचलमल जी चोरडिया द्वारा हथेली व पगथली में स्थित बिन्दुओं पर एक्यूप्रेशर द्वारा रोग निदान के बारे में जानकारी दी गई। सभी शिविरार्थियों को श्रीमती लक्ष्मीकान्ता जी मेहता धर्मसहायिका श्रीमान् सुमेरचन्दजी मेहता के द्वारा पुरस्कृत किया गया। *-श्रीमती उषा बोहरा, सचिव*

चेन्नई- पहचान चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित ज्ञान बैंक ने प्राथमिक एवं हायर सैकण्डरी स्कूल के छात्रों को 15 जून 2014 को भारतीय विद्या भवन, मैलापुर, चेन्नई में आयोजित कार्यक्रम में 350 छात्रों को 15 लाख रुपये की छात्रवृत्ति एवं ऋण छात्रवृत्ति प्रदान की। ज्ञान बैंक का लक्ष्य है- सभी के लिए शिक्षा।

चेन्नई- आचार्य हस्ती के आचार्य पद-आरोहण दिवस अक्षयतृतीया पर श्री मरूधर केसरी सेवा समिति ने समाजसेवी उदारमना श्री मनोहरराजजी कांकरिया को भामाशाह सम्मान से अलंकृत किया। समारोह के आयोजन में लगभग 10 हजार की उपस्थिति थी। श्री कांकरिया जी के द्वारा ट्रस्ट के माध्यम से समाजसेवा के अनेक उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

बधाई

आईआईटी जेईई में चित्रांग मुर्डिया (जैन) देश में टॉपर

उदयपुर- देशभर के इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश के लिए हुई आई.आई.टी. जेईई (एडवांस) में उदयपुर के चित्रांग मुर्डिया (जैन) ने सम्पूर्ण भारत में प्रथम स्थान हासिल करके इतिहास रच दिया है। दिल्ली पब्लिक स्कूल, उदयपुर के छात्र चित्रांग ने 360 में से 334 अंक प्राप्त किए। चित्रांग के पिता मनीष मुर्डिया व्यवसायी और आईआईटी दिल्ली से पास आउट हैं तथा माता सोनाली गृहिणी हैं। अठारह वर्षीय चित्रांग सप्ताह के अन्त में तथा छुट्टियों में कोटा जाकर पढ़ते थे। चित्रांग के शब्दों में-"मैं जानता था ये दो साल ज़िंदगी में फिर कभी लौटकर नहीं आने वाले। मैंने भौतिकी, रसायन शास्त्र और गणित; तीनों पर बराबर ध्यान दिया।" चित्रांग के पिता के अनुसार उनके बेटे की धर्म में गहरी आस्था है।

जोधपुर- डॉ. स्निग्धा भण्डारी धर्मपत्नी डॉ. रॉबिन भण्डारी सुपुत्री श्री सुरेन्द्र जी मेहता एवं श्रीमती रेणूका जी मेहता तथा सुपौत्री श्री अमरचंद जी सदावत मेहता, जोधपुर ने M.S.(ENT) की परीक्षा SMIMER, सूरत से प्रथम वरीयता के साथ उत्तीर्ण की एवं एम.डी.एम. अस्पताल, जोधपुर में विशेषज्ञ चिकित्सक का पद भार सम्हाला।

दिल्ली- आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में उद्घोषिका विदुषी श्रीमती डॉ. इन्दु जैन (धर्मपत्नी श्री राकेश जैन, नई दिल्ली) को उनके ग्रंथ "शौरसेनी प्राकृत भाषा और साहित्य का इतिहास" पर इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ 'महावीर पुरस्कार-2012' प्रदान किया गया। जैन विद्या संस्थान, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी कमेटी द्वारा अनेक वर्षों से प्रदान किया जाने वाला यह प्रतिष्ठित सम्मान 16 अप्रेल, 2014 को क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष न्यायाधीश श्री नरेन्द्र मोहन कासलीवाल द्वारा प्रशस्तिपत्र, सम्मान राशि के साथ प्रदान किया गया। पुरस्कृत ग्रंथ 450 पृष्ठों में तथा 10 अध्यायों में विभक्त है, जो कि 2011 में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित है तथा शोधार्थियों एवं जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है। डॉ. इन्दु जैन अ.भा.दि.जैन विद्वत् परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी की सुपुत्री है।

जयपुर- सुश्री मोक्षिका जैन सुपुत्री श्री अजीत कुमार जी जैन-श्रीमती अंजना जी जैन (कंजोली वाले) ने राज. बोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर जिला वरीयता सूची में 9वां स्थान प्राप्त किया।

जोधपुर- सुश्री प्राची भण्डारी सुपुत्री श्रीमती ललिता जी-श्री महेश जी एवं सुपौत्री वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मुन्नालाल जी भण्डारी ने सीनियर सैकण्डरी परीक्षा (वाणिज्य वर्ग)-2014 में

95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जयपुर- सुश्री सेहल जैन सुपुत्री श्रीमती चविता जैन एवं श्री पीयूष जी जैन (कोषाध्यक्ष, श्री जैन रत्न युवक परिषद, जयपुर) ने CBSE की 12 वीं कक्षा में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। एमजीडी स्कूल की छात्रा सेहल ने हिंदी व इतिहास में स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर- सुश्री रोशनी लोढ़ा सुपुत्री श्री राजेश जी लोढ़ा ने CBSE की सैकेण्डरी परीक्षा में A-1 ग्रेड प्राप्त किया।

सवाईमाधोपुर- सुश्री श्रेयाजी जैन सुपुत्री श्री जयकुमारजी जैन ने CBSE सीनियर सैकेण्डरी (वाणिज्य वर्ग) की जिला वरीयता सूची में 8 वां स्थान प्राप्त किया।

जयपुर- सुश्री तनवी छाजेड़ सुपुत्री श्रीमती अर्चना एवं श्री तरुण जी छाजेड़ ने CBSE की सीनियर सैकण्डरी में 94.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जोधपुर- सुश्री दीक्षिता जैन सुपुत्री श्री अनिलजी-श्रीमती कौशल्याजी जैन ने CBSE की सैकण्डरी परीक्षा सभी विषयों में A-1 ग्रेड से उत्तीर्ण की।

सवाईमाधोपुर- सुश्री आयुषी जैन सुपुत्री श्रीमती धनकंवरजी एवं श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सैकण्डरी परीक्षा 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर जिला वरीयता सूची में 5 वां स्थान प्राप्त किया।

चित्रांग मुर्डिया

डॉ. स्निग्धा भण्डारी

मोक्षिका जैन

प्राची भण्डारी

सेहल जैन

रोशनी लोढ़ा

तनवी छाजेड़

दीक्षिता जैन

आयुषी जैन

श्रद्धांजलि

जलगांव- अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी, वरिष्ठ स्वाध्यायी, दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी वीरभ्राता

एवं वीरपिता सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल का 25 जून, 2014 को 62 वर्ष की वय में असामयिक स्वर्गप्रयाण हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले श्रावक थे। परम श्रद्धेय

आचार्यप्रवर हीरा एवं उपाध्यायप्रवर मान के चातुर्मास में प्रायः परिवार सहित चौका करने के साथ धर्माराधना करते थे। वे नित्य प्रति पाँच से आठ-दस तक सामायिकें करते थे। आपने गुरु हस्ती की पावन प्रेरणा से सक्रिय स्वाध्यायी बनकर अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान की। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति, आहार-विहार एवं श्रमणोचित औषधोपचार में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। आपके पिता श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल एवं परिवारजनों ने आपकी बहिन चन्द्रकला जी को दीक्षा की अनुमति प्रदान की जो विक्रम संवत् 2038 से संघ-दीप्ति में महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के रूप में सक्रिय हैं। ऐसे धर्मनिष्ठ शासनप्रेमी श्रावकरत्न के सुपुत्र सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल ने अपने आत्मज एवं आत्मजा को दीक्षा की अनुमति प्रदान की जो वि. संवत् 2062 से क्रमशः श्रद्धेय मुनि श्री लोकचन्द्र जी एवं महासती श्री सुव्रतप्रभाजी के रूप में रत्नसंघ व जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। भोपालगढ़ का हुण्डीवाल परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा एवं जिनशासन सेवा में सदा अग्रगण्य समर्पित परिवार रहा है। हुण्डीवाल परिवार के आबालवृद्ध सभी सदस्य अनन्य गुरुभक्त हैं। हुण्डीवाल परिवार के संघसेवी श्रावकरत्न श्री गौतमचन्द जी संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष रहे। भ्राताश्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल जोधपुर संघ के मंत्री के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं। श्रावकरत्न की धर्मसहायिका श्रीमती निर्मलाजी भी संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदा तत्पर रहती हैं। उन्होंने परिवार में धर्म भावना बढ़ाने में सदा सहयोग किया।

जोधपुर- संघ-सेवी, सुश्राविका श्रीमती ज्ञानकंवरजी भण्डारी धर्मसहायिका श्री अजीतराज

जी भण्डारी का 08 जून, 2014 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविकारत्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहती थीं। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप भण्डारी परिवार सामंजस्य एवं एकता के सूत्र में बंधकर धर्मकार्यों में तत्पर रहता है। आपके सुपुत्र श्री राजेशजी भण्डारी समर्पित भाव से स्वाध्याय संघ, जोधपुर में सचिव के रूप में अपनी महनीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

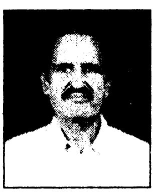

चेन्नई- संघ-सेवी अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया का 18 जून, 2014 को देहावसान हो गया। आपका जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। अगाध श्रद्धा-भक्ति सम्पन्न होने के साथ आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आचार्य श्री हीरा-मान दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में आपने एकान्तर वर्षीतप की आराधना

की। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। उनकी यह भावना थी कि परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का चातुर्मास क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में हो, इसके लिए वे समय-समय पर गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी भावना रखते थे। कांकरिया परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव समर्पित रहा है।

बीकानेर- अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी, संत-सेवी सुश्रावक वीरपिता श्री चन्दनमल जी

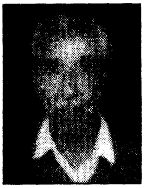

ढड्ढा का 20 जून, 2014 को स्वर्गप्रयाण हो गया। आपके दो घण्टे का संथारा रहा। आपने अपने सुपुत्र श्री देवेन्द्र जी को परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की चरण-सन्निधि में दीक्षित कर जिनशासन एवं रत्नसंघ की गौरव गरिमा में अभिवृद्धि की। वर्तमान में श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. दृढ़ संयम का पालन करते हुए जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं।

जोधपुर- सरलमना सुश्राविका श्रीमती पारसकंवर जी कर्णावट धर्मसहायिका स्व. श्री

नेमीचन्द जी कर्णावट का 82 वर्ष की वय में 10 जून, 2014 को संथारापूर्वक देवलोक गमन हो गया। आपने आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य श्री सुमति मुनि जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण किया। आप एक मिलनसार प्रवृत्ति की मृदुभाषी, धर्मपरायण एवं व्यवहार कुशल श्राविका रत्न थीं। प्रतिदिन सामायिक करना आपका नित्यक्रम था। कई वर्षों से आप निरन्तर एकासन, नीवी, उपवास, आयंबिल आदि तप करती थीं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ श्रावक श्री छगनलाल जी जैन का 80 वर्ष की वय में 12 जून, 2014 को

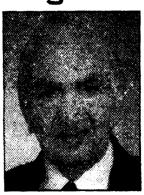

निधन हो गया। उन्होंने अध्यापक पद पर सेवा देना प्रारम्भ किया तथा एक वर्ष पश्चात् ही भारतीय प्रशासनिक सेवा में विभिन्न पदों पर सराहनीय कार्य किया। 1995 में सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे राज्य सरकार की ओर से राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर में रेवेन्यू के सरकारी वकील रहे। वे जोधपुर पोरवाल समाज के अध्यक्ष एवं बागरा जैन संघ के ट्रस्टी थे। जिनवाणी मासिक पत्रिका में उनके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। उन्होंने तत्त्वार्थ सूत्र के विवेचन पर अंग्रेजी में पुस्तक लिखी है।

जयपुर- श्री प्रकाशमल जी मेहता सुपुत्र स्वर्गीय श्री जीतमल जी मेहता (मेहता हवेली, अजमेर वालों) का 82 वर्ष की उम्र में 04 जून 2014 को स्वर्गवास हो गया। आप शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए थे। स्पष्टवक्ता, मधुर भाषी एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ एवं सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

अजमेर- गुरुभक्त श्री सरदारमल जी लोढ़ा का 8 जून, 2014 को 97 वर्ष की परिपक्व वय में देहावसान हो गया। आप जब एक वर्ष के थे तभी आपकी माताश्री का स्वर्गवास हो गया था। जन्म से ही पुरुषार्थ किया तथा देव, गुरु एवं धर्म पर श्रद्धा रखी। सम्पन्नता होते हुए भी जीवन में किसी प्रकार की कोई दवा ग्रहण नहीं की। सम्पूर्ण लोढ़ा परिवार रत्न संघ के धर्माचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतियों के प्रति श्रद्धानत है। आप अपने पीछे श्री सुरेन्द्रमल जी लोढ़ा आदि 6 पुत्र छोड़कर गए हैं। संघनिष्ठ श्राविका श्रीमती प्रेमकंवर जी बुरड़, ब्यावर के आप ज्येष्ठ भ्राता थे।

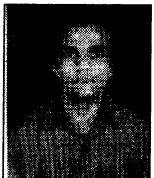

मदनगंज-किशनगढ़- सुश्रावक श्री राकेश कुमार जी मोदी सुपुत्र स्व. श्री ताराचन्द जी मोदी हाल निवासी मुम्बई का 52 वर्ष की आयु में 07 जून, 2014 को किशनगढ़ में आकस्मिक निधन हो गया। मोदी परिवार की रत्नसंघ के सभी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति है।

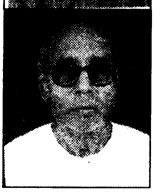

मदनगंज-किशनगढ़- सुश्रावक श्री नरेन्द्र कुमारजी मेहता सुपुत्र स्व. श्री चाँदमल जी मेहता का 66 वर्ष की आयु में 25 मई, 2014 को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, विनम्रता, प्रामाणिकता एवं व्यावहारिकता से युक्त था। तपस्विजी के नाम से प्रसिद्ध आपश्री पर्व तिथियों को उपवास, आयम्बिल एवं शेष दिन एकलठाणा, बेआसना तप करते थे। वर्षावास में आप लगातार आयम्बिल तप करते थे, एक बार 95 एवं एक बार 165 आयम्बिल तप लगातार पूर्ण किए। आप नित्य सामायिक, स्वाध्याय एवं संवर में रत रहते थे। आपके परिजनों ने मृत्यु उपरान्त आपके नेत्र दान किए।

कपासन (चितौड़गढ़)- सुश्राविका श्रीमती सरिता जी गोठी धर्मपत्नी श्री संदीप जी गोठी, रावत भाटा का 35 वर्ष की अल्पायु में 20 मई, 2014 को निधन हो गया। आप अत्यन्त सरल स्वभावी, धैर्यवान एवं मिलनसार श्राविका थी। आप लगभग 15 वर्षों से नवकारसी एवं पाक्षिक प्रतिक्रमण नियमित करती थीं।

टांटोटी (अजमेर)- श्रावकरत्न श्री गुलाबचन्दजी बड़ोला का 90 वर्ष की आयु में 8 जून, 2014 को निधन हो गया। आप स्थानीय संघ के मंत्री श्री दीपचन्दजी बड़ोला के पिताश्री थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

11000/- जिनवाणी संरक्षक-सदस्यता हेतु प्रत्येक

119 Shri Manak Chandji Ranka, Ajmer (Raj.)

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15260 से 15269 तक 10 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री सुनीलजी नाहटा, बंगारपेठ एवं श्री शांतिलालजी खाबिया, मैसूर, चि. नमनजी सुपुत्र श्री सुनीलजी नाहटा एवं सौ.कां. रिंकूजी सुपुत्री श्री शांतिलालजी खाबिया का शुभविवाह सुसम्पन्न होने की खुशी में।

5100/- श्री संजीवजी डोसी, जयपुर, पूज्य पिताश्री घीसुलालजी डोसी का 07 जून 2014 को देहावसान हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री अनिलजी कोठारी, जलगाँव, श्री इंदरचन्दजी सुपुत्र स्व. श्रीमती पानबाईजी श्री चंपालालजी कोठारी का 02 अप्रेल 2014 को स्वर्ण सीढ़ी समारोह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री सुरेन्द्रमलजी लोढ़ा, अजमेर, पूज्य पिताश्री श्री सरदारमलजी लोढ़ा का देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री भंवरलालजी बोथरा (हीरादेसर वाले), चेन्नई, 90 वर्ष की आयु पूर्ण होने के प्रसंग पर सभी से क्षमायाचना सहित।

1100/- श्री सत्येन्द्र कुमारजी, प्रेम कुमारजी, विजेशजी, विनय कुमारजी एवं यश कुमारजी मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, श्री नरेन्द्र कुमारजी सुपुत्र स्व. श्री चाँदमलजी मेहता का 25 मई 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री गौतमचन्दजी कमल कुमारजी जैन (चौरू वाले), कोटा, चि. सुमीत सुपुत्र श्री कमलचन्दजी का शुभविवाह सौ.कां. नेहाजी सुपुत्री श्री गोविन्दजी जैन, मालवा मिल, इन्दौर के संग 20 अप्रेल 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री हीराचन्दजी-शकुन्तलाजी, संजीवजी-अर्चनाजी, राजीवजी-राजश्रीजी बोथरा, जयपुर, यश (सुपुत्र संजीवजी) एवं निलेश व सम्यक् (सुपुत्र श्री राजीवजी बोथरा) के उत्तीर्ण होने की खुशी में।

1100/- श्री राजकुमारजी, कानपुर, देई में चौथे व्रत के नियम ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री भैरूलालजी पदमचन्दजी जैन, चौथ का बरवाडा, श्रीमती चंचलदेवी धर्मसहायिका श्री भैरूलालजी जैन के देई में अक्षय तृतीया का पारणा करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री बाबूलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. सुशील (अन्नू) का शुभविवाह सौ.कां. सिम्पल (प्रज्ञा) के संग 01 मई 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नाथूलालजी जैन (आलनपुर वाले), जयपुर, श्रीमती बच्छी बाईजी जैन (कुण्डेरा वाले) का 9 जून 2014 को संथारा सहित महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री सुमेरचन्दजी, निखिलजी कर्णावट, जोधपुर, माताजी श्रीमती पारसकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्दजी कर्णावट के 10 जून 2014 को संथारापूर्वक स्वर्गगमन होने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री पीयूषजी जैन, जयपुर, सुश्री सेहलजी सुपुत्री श्रीमती चविताजी-पीयूषजी जैन का सीबीएसई की सी. सैकण्डरी परीक्षा में 94.20% अंक अर्जित कर प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी, अशोक कुमारजी, विजय कुमारजी ढड्ढा, बीकानेर, श्री चन्दनमलजी ढड्ढा का 20 जून 2014 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री रोशनलालजी, ललितकुमार जी बोहरा, पहुँना (सूरत), अपनी लाडली सौ. साक्षी का शुभविवाह चि. श्री विजयकुमारजी चंडालिया (कपासन निवासी) के संग 12 जून 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती रेणूकाजी एवं श्री सुरेन्द्रजी मेहता सुपुत्र श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, जोधपुर, अपनी सुपुत्री डॉ. स्निग्धा एवं दामाद डॉ. रॉबिन जी भण्डारी के विशेषज्ञ चिकित्सक पद भार सम्हालने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री वीजेन्द्रजी जैन, ग्राम-मंजूरा, जिला-करनाल, धर्मसहायिका श्रीमती बिमलाजी जैन का स्वर्गवास दिनांक 10 जून 2014 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

200000/- श्री सुभाषजी, विपिनजी, यशजी, ललिताजी, सुषमाजी, पुनीतजी एवं धोका परिवार, मैसूर, शिक्षा व स्वाध्याय निधि सहयोग।

108000/- श्री पारसमलजी, लक्ष्मीचन्दजी चोरडिया, उज्जैन, शिक्षा-दीक्षा, विहार, छात्रवृत्ति सहयोग।

100000/- श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली, संघ सहयोग।

31000/- श्री गौतमचन्दजी, प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमारजी, शैलेषजी, रक्षिताजी, पदमावतीजी, सिद्धार्थजी सकलेचा, श्रीमती नीता भागचन्दजी भण्डारी, कुम्बकोणम (तमिलनाडु), संघ सहायतार्थ।

21000/- श्री मुकेशकुमारजी चोरडिया, पारोला, संघ सहयोग।

18000/- श्री चंचलमल जी बच्छावत, कोलकाता, स्वधर्मी वात्सल्य।

15000/- श्री दौलतराजजी सम्पतराजजी बांठिया, अहमदाबाद, द्वारा-भैरवनाथ एग्जीम प्रा. लि. संघ सहयोग।

11000/- श्री शांतिलाल जी जैन, तिरुवन्नामलै, शिक्षा-दीक्षा सहयोग।

5100/- श्री महावीरचन्द जी अनिलकुमारजी बोथरा, जलगांव, संघ सहयोग।

5000/- श्री ऋषभजी जैन, जोधपुर, जीवदया।
5000/- श्री अजीत जी जैन, जोधपुर, जीवदया।
5000/- श्री सम्भव जी जैन, जोधपुर, जीवदया।
5000/- श्री अभिनन्दन जी जैन, जोधपुर, जीवदया।
3000/- श्री चन्द्रशेखरजी मेहता, जोधपुर, संघ सहयोग।
2100/- श्रीमती सूरजकंवरजी बोहरा, ब्यावर, जीवदया।
2000/- श्री पदमराज जी मेहता, जोधपुर, जीवदया।
1100/- श्री रिखबराजजी चन्द्रेशकुमारजी सिंघवी, बैंगलोर, संघ सहयोग।
1100/- श्री मोहनलाल जी सुमेरचन्दजी चोरडिया, इन्दौर, संघ सहयोग।
1100/- श्री मोहनलाल जी सुमेरचन्दजी चोरडिया, इन्दौर, जीवदया।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्त

2100/- जय वीर सा, ब्यावर, सहयोग।
1101/- श्री महावीर प्रसाद जी, योगेन्द्र प्रसाद जी जैन 'देवली वाले' सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. धर्मेन्द्र के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री डिग्गी प्रसाद जी, महावीर प्रसाद जी जैन 'करेला वाले', सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. पवन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री अशोक कुमार जी सांड, बागोद, सहयोग।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

139000/- श्री दिनेशजी सुराणा, चेन्नई, पुस्तक 'गौतम से प्रभु फरमाते' के तृतीय संस्करण की 2000 प्रतियों के पुन: मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।
107250/- श्री दिनेशजी सुराणा, चेन्नई, पुस्तक 'गौतम से प्रभु फरमाते' के द्वितीय संस्करण के पुन: मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।
100000/- श्री सुभाषचन्दजी अशोकजी धोका, मैसूर, साहित्य निधि संरक्षक (एक मुश्त) बनने पर सप्रेम भेंट।
50000/- श्री प्रवीणचन्दजी, विवेक जी, विज्ञान जी लोढ़ा, जयपुर, चि. देवेश का शुभविवाह सौ.कां. पलोमी के संग 01 मई, 2014 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

500000/- श्री हरीश जी कवाड़, पुन्नमल्लै, चेन्नई
24000/- श्री उमरावमलजी, श्री श्रीपाल जी सुराणा, चेन्नई
12000/- श्री रतनलाल जी बाफणा, जलगांव

12000/- श्री पुखराज जी भण्डारी, जयपुर, श्रीमती सुधा जी भण्डारी की पावन स्मृति में।

12000/- श्री विजयराय जी, आशीष जी, सौरभ जी कोठारी, जयपुर, श्री आशीष जी कोठारी के सुपुत्री होने के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

भूल सुधार

5100/- जिनवाणी जून-2014 में श्रीमती सुशीलाजी मेहता धर्मपत्नी स्व. कैलाशचन्दजी मेहता, जयपुर, सुपुत्र श्री प्रदीपजी पुत्रवधू श्रीमती निशाजी मेहता की शादी की 25वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में पढ़ा जाए।

आगामी पर्व

आषाढ शुक्ला 14, शुक्रवार	**11.07.2014**	**चतुर्दशी, पक्खी एवं चातुर्मास प्रारम्भ**
श्रावण कृष्णा 8, शनिवार	**19.07.2014**	**अष्टमी**
श्रावण कृष्णा 14, शुक्रवार	**25.07.2014**	**चतुर्दशी**
श्रावण कृष्णा 30, शनिवार	**26.07.2014**	**पक्खी, आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 88 वीं पुण्यतिथि**
श्रावण शुक्ला 8 सोमवार	**04.08.2014**	**अष्टमी**
श्रावण शुक्ला 15 रविवार	**10.08.2014**	**पक्खी**
भाद्रपद कृष्णा 8 रविवार	**17.08.2014**	**अष्टमी**
भाद्रपद कृष्णा 13 शनिवार	**23.08.2014**	**पर्युषण पर्व प्रारम्भ**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल साहित्य निधि संरक्षक

श्री सुभाषचन्दजी अशोक कुमारजी धोका, मैसूर

अनन्य श्रद्धानिष्ठ, संघ समर्पित, परम गुरुभक्त, सरलमना सुश्रावक स्व. श्री विमलचन्दजी धोका (निमाज वाले), मैसूर के आज्ञाकारी उदारमना सुपुत्र श्री सुभाषचन्दजी एवं श्री अशोक कुमारजी धोका सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के प्रथम साहित्य निधि संरक्षक बने हैं। आपश्री ने 1,00,000 (अक्षरे रुपये एक लाख) का अर्थसहयोग प्रदान किया है। सत्साहित्य के प्रकाशन में आपके द्वारा दिया गया अर्थसहयोग अनुकरणीय, अनुमोदनीय एवं प्रशंसनीय है। आप समय-समय पर संत-सतीवृन्द की श्रद्धा भक्ति से सेवा, गोचरी एवं विहारचर्या में अतुलनीय योगदान प्रदान करते रहते हैं। *-विनयचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

केन्द्रीय स्वाध्यायी-प्रशिक्षण शिविर सूचना

स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा **01 से 03 अगस्त 2014 तक 'स्वाध्यायी-प्रशिक्षण शिविर' कोटा** (राज.) में **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा** के पावन सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता में से एक भी योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1.श्री स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी हों एवं पर्युषण सेवा देते हों।

2.अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हों।

3.सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हों।

उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा पर्युषण पर्व तैयारी हेतु **अन्तगडसूत्र वाचन, प्रवचन शैली, भजनकला, पयुर्षण दिनचर्या** के साथ ही **आध्यात्मिकता एवं नैतिकता** को पुष्ट करने वाले विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। एतदर्थ प्रकाशित आवेदन पत्र पूर्णतः भरकर **25.07.2014** से पूर्व आवश्यक रूप से अधोलिखित पतों में से किसी एक पर यथाशीघ्र प्रेषित करावें तथा स्वीकृति प्राप्त करें। बिना पूर्व आवेदन पत्र व स्वीकृति के शिविर में प्रवेश देना सम्भव नहीं होगा। शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं- **1. श्री कुशल जी गोटेवाला, संयोजक-9460441570, 2. श्री राजेश जी भण्डारी, सचिव-94610313878, 3. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर-9414267824, 4. श्री धीरज जी डोसी-9462543360**

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
घोड़ों का चौक,
जोधपुर-342001 (राज.)
फोनः 0291-2624891,2633679,
फैक्स-2636763, मो. 9460081112
E-mail : swadhyaysanghjodhpur@yahoo.co.in

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ
श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ
व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर
जलगांव-425001 (महा.)
फोन नं. 0257-2232315
मो. 9422591423

श्री धर्मेन्द्र जी जैन
1/148, पर्ण कुटीर, आवासन मण्डल
सवाईमाधोपुर (राज.)
मो. 9460441678

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दु.नं.182-183 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003(राज.)
फोन नं. 0141-2575997, 2570753

श्री राजेश जी जैन
नई मण्डी, पो. हिण्डौन सिटी-322230
जिला-करौली (राज.)
मो. 9529083690

श्री कन्हैयालाल जी जैन
सत्यम सुटिंग्स, 119, मुरली टैक्सटाईल्स
टॉवर, पूर रोड, भीलवाड़ा (राज.)
फोन नं. 01482-242812, 246028

श्री सुधीर जी सुराणा
C/o Swadhyay Bhawan
No. 24-25, Basin Water Works St.
Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.)
Ph. 044-25295143, 9380997333

श्री विरेन्द्र जी झामड़
म.नं. 5/179, मालवीय नगर
जयपुर (राज.)
फोन नं.0141-2554266,9414888043

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन-0291-2624891, 2633679
Email : swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 01 अगस्त से 03 अगस्त 2014 तक

आवेदन-पत्र

शिविरार्थी का नाम..

पिता/पति का नाम..

जन्म तिथि........................आयु........................

पत्राचार का पूर्ण पता..

....

टेलीफोन नं........................मोबाइल........................

फैक्स नं. ....ई-मेल........................

शैक्षणिक योग्यता(व्यावहारिक)..

धार्मिक योग्यता..

..................शिक्षण बोर्ड की उत्तीर्ण कक्षा........................

पर्युषण सेवा..

शिविरों में सहभागिता..

संघ की गतिविधियों में योगदान..

....

विशेष रुचि..

व्यवसाय/सर्विस..

शिविर में भाग लेने के लिये योग्यता का आधार........................

....

दिनांक...............

हस्ताक्षर आवेदनकर्ता

नोट-आवेदन-पत्र 25 जुलाई तक प्राप्त होने पर स्वीकृति भेजी जाएगी।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 68 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 23 से 30 अगस्त 2014** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **20 जुलाई 2014** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...

   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...

   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..

   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?...........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

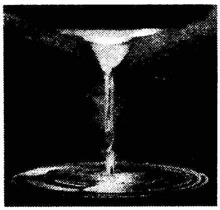

Electric Arc Furnace

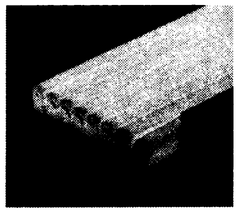

Billets

Rolling Mill

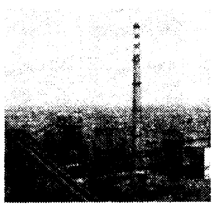

Captive Power Plant

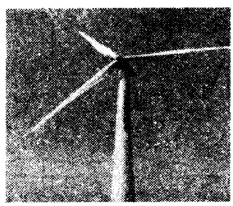

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित
आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता में युवारत्न श्रीमान् हरीश जी कवाड़ ने वर्ष 2013-14 में रुपये 13 लाख का अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय अर्थ सहयोग करके गुरुभाईयों के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को प्रकट किया है, जो अनुमोदनीय है। आप पूर्व में भी आध्यात्मिक चेतना वर्ष के दौरान रुपये 12 लाख को सहयोग योजना को प्रदान कर चुके हैं।

श्रीमान् वर्तमान में योजना के संयोजक हैं, आपका संघ हित में छात्रवृत्ति योजना के संबंध में कहना है कि ''अगर संघ का चहुँमुखी विकास करना है तो गुरुभाइयों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है।'' हम सब भी ऐसे युवारत्न से प्रेरणा लेकर संघ की इस योजना में अर्थसहयोग करके संघ को विकसित करने में सहयोग करें।

निवेदन है कि अपने परिवार में होने वाली खुशियों के दिवस को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति योजना में रुपये 3000/-, 6000/-, 9000/- या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करके दिवस विशेष को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइये।

अन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं एवं अन्य को अर्थ सहयोग की प्रेरणा करके योजना को गतिशील करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद् रशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है।

A/c Name-Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address-AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN) IFSC Code- UTIB0000168 PAN No. AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.
सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पत पर भेजें-

B. Budhmal Bohra
Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn.,
CHENNAI-600101 (Tamilnadu) Mob. 95430 68382

नोट- आपके द्वारा जमा कराये गये अर्थसहयोग की जानकारी MSG के द्वारा भेज देवें (Mob. 95430-68382)

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumtichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnaavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	Sawai Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	Sawai Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryansh Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

संघ-सेवा सोपान के अंतर्गत संघ एवं संघ से सम्बन्धित संस्थाओं के संचालन में निम्नानुसार सहयोग कर पुण्यार्जन करें

संघ-सेवा में योगदान

1. गजेन्द्र निधि/फाउण्डेशन ट्रस्टी	-	₹ 1100000 का अर्थ सहयोग।
2. संघ भूषण	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 251000
3. संघ प्रभावक	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 100000
4. संघ हितैषी	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 51000
5. संघ पोषक	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 21000
6. संघ सहयोगी	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 11000
7. संघ प्रोत्साहक	-	कम से कम तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष ₹ 5000
8. अन्य सहयोग	-	इच्छानुसार

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहयोग

1. साहित्य निधि संरक्षक	-	₹ 100000 एक मुश्त
2. साहित्य निधि स्तम्भ	-	₹ 51000 एक मुश्त
3. साहित्य निधि पोषक	-	₹ 21000 एक मुश्त
4. साहित्य प्रकाशन हेतु	-	इच्छानुसार
5. साहित्य सदस्यता	-	₹ 4000
6. जिनवाणी स्तम्भ सदस्यता	-	₹ 21000
7. जिनवाणी संरक्षक सदस्यता	-	₹ 11000
8. जिनवाणी सदस्यता (20 वर्ष)	-	₹ 1000

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को सहयोग

1. स्वाध्याय निधि संरक्षक	-	₹ 100000 एक मुश्त
2. स्वाध्याय निधि स्तम्भ	-	₹ 51000 एक मुश्त
3. स्वाध्याय निधि पोषक	-	₹ 21000 एक मुश्त
4. वार्षिक सदस्यता	-	₹ 2100
5. अन्य सहयोग	-	इच्छानुसार

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2014
वर्ष : 72 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2014 ★ आषाढ़, 2071

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings
• Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room
• Swimming pool • Multi-functional room • Spa
• Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन